नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

# परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

वर्ष 03, अंक 327, नई दिल्ली, सोमवार 26 जनवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 77वां गणतंत्र दिवस 2026: वंदे मातरम के 150 वर्ष

06 परिणाम से परे: परीक्षा-जुनूनी दुनिया में सफलता को पुनः परिभाषित करना

08 केंद्र सरकार के कर्मचारियों के खिलाफ भ्रष्टाचार मामलों की जांच कर सकती है राज्य एजेंसी: सुप्रीम कोर्ट

ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन (पंजी.)
की ओर से भारत देश के सभी वासियों और
देश में परिवहन क्षेत्र से जुड़े साथियों को
TOLWA
गणतंत्र दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
संजय बाटला
चेयरमेन / राष्ट्रीय अध्यक्ष

TEMPLE OF LIBERALIZATION AND WELFARE ALLIED TRUST (REGD.)
TOLWA
की ओर से सभी देशवासियों को
77वें
गणतंत्र दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
संजय बाटला
चेयरमेन / राष्ट्रीय अध्यक्ष
पिंकी कुंडू
राष्ट्रीय महासचिव

ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड
की ओर से भारत देश के सभी वासियों और देश में
परिवहन क्षेत्र से जुड़े साथियों को
Happy Republic Day
गणतंत्र दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
संजय कुमार बाटला • प्रिंस बाटला • अंश बाटला

Ajuman Holidays
Ride Safe, ride smart, ride with Ajuman
Gurugram, Delhi, Mathura, Agra, Lucknow,
Basti, Gorakhpur, Azamgrhh
Contact : 9711329572, 9711329552
www.ajumanholidays.com

26th January
HAPPY REPUBLIC DAY
AOMBRAY ELECTRIC
VEHICLE PVT. LTD.
Ashok Kumar Narang
Director
9811034869
RZ-123-D, Plot No. 1, Dabri Palam
Road, Near Jindal Public School,
New Delhi-110045

SHIVOHAM
HAPPY Republic Day
DR. PUJAPRASUN N
GOLD MEDALIST
Numerology & Rudraksha Consultant
Contact : 07303855446
puja.prasun@gmail.com

JAI MATA DI
SOURABH
GAURAV
HAPPY REPUBLIC DAY 26 JANUARY
MAA SHAKTI MOTORS
Service in:-
Govt. Approved
CNG Cylinder Testing
Mundka to Karala Road, Near Water Tank,
Karela, New Delhi- 110081
A Unit of MAA Mahakali Motors, Burari
Deals in: Pricol Elect, Speed Governor and GPS Autocop Co.
9910022435, 9717085678

जय माता दी
गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं!
pricol
माँ महाकाली मोटर्स
(भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त)
सभी सी. एन. जी. और डीजल वाहनों के
इलैक्ट्रॉनिक स्पीड गवर्नर एवं GPS (AIS 0140) उपलब्ध
एवं लगाये जाते हैं।
E-mail: mahakaalimotors@rediffmail.com
H.O. प्लॉट नं. 7, हिमगिरी एन्क्लेव, नजदीक बुराड़ी अथॉरिटी, बुराड़ी, दिल्ली-84
21/21 मेन रोड सामने परिवहन विभाग, बुराड़ी, दिल्ली-110084
9310034578 • 9910234578

गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं!
JKG
JKG PAINTS
JKG
WALL PUTTY
P.O.P.
Jitender Pal
9999336338
SALWAN PAINTS HARDWARE & SANITARY
RZ-165A, 15C, Palam Road, Sagar Pur, New Delhi-110046
9999336338
JKG PREMIUM
JKG WALL PUTTY P.O.P.

DCN
Happy 26th JANUARY Republic Day
DREAM COCKTAIL NIGHT
THE BEVERAGE PEOPLE
Sandeep Singh - 9210653915
RZ-E- 59, Dabri Extn. East, New Delhi-110045
Email: sandydreamcoctailnight@gmail.com

गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं!
एकता मोटर्स एण्ड ऑटो डील्स
फाइनेंस की सुविधा भी उपलब्ध है
CNG सवारी, बजाज, विक्रम, चैपियन गुड्स कैरियर, चैपियन सवारी
6 सीटर, टाटा मैजिक सवारी 6 सीटर, TATA ACE 407, 709, 909
RTV स्वराज माजदा, कैन्टर, टेम्पो, ट्रैवल्स, आदि कमीशन बेसिस
पर खरीदें व बेचे जाते हैं।
122-123, M.C.D. मार्केट (नजदीक I.D. अस्पताल), किंग्सवे, दिल्ली -9
9810524984, 9971047070, 9911027070

दे सलामी इस तिरंगे को
जिससे तेरी शान है
सर हमेशा ऊंचा रखना इसका
जब तक तुझ में जान है।
गणतंत्र दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
Sunita Sharma
9560831118
MAHESHWARI PROPERTY
SALE PURCHASE & RENT
DEALS IN :
PLOT, KOTHI, HOUSE, SHOP,
AGRICULTURAL LAND ETC.

आइए एकता और विविधता की भावना का जश्न मनाएं
जो भारत को वास्तव में विशेष बनाती है!
मंडलिक डेव्हलपर्स
नाशिक, महाराष्ट्र
गणतंत्र दिवस
26 जनवरी
गणतंत्र दिवस
की आपको और आपके परिवार को
हार्दिक शुभकामनाएं
श्री जगदीश त्र्यंबकराव मंडलिक
श्री सचिन त्र्यंबकराव मंडलिक
नाशिक मे फ्लॅट प्लॉट बंगलो रो हाऊस
लेने के लिए हमसे संपर्क करे
संपर्क :- 9850262672, 8793070700

HAPPY
26
JANUARY
REPUBLIC
DAY
EV-SMART TECHNOLOGY
EV SMART TECHNOLOGY
NITIN THAKUR
FOUNDER
DURGESH SINGH
Business Development
7836090009
Email : info@ev-smart.in
Web. : www.ev-smart.in

26 जनवरी
गणतंत्र दिवस
के शुभ अवसर पर सभी प्रदेशवासियों
को हार्दिक बधाई एवं
शुभकामनाएं
ॐ नमः शिवाय
पं० सौरभ शर्मा
हवन, विवाह, अनुष्ठान, रामायण पाठ, सुंदरकांड, गृहप्रवेश, नामकरण
माता की चौकी व जागरण, भजन संध्या, जन्मपत्री, ज्योति व
समस्त धार्मिक कार्यों के लिए सम्पर्क करें।
संपर्क :- 9811445481, 9911255575

Dr. Shroff's Charity Eye Hospital
आप सभी को डॉ. श्रॉफ आई केयर इंस्टीट्यूट की ओर से
गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं
उपलब्ध जाँच व सेवाएं:-
अत्याधुनिक मशीनों से आंखों की संपूर्ण जाँच
फेको विधि से मोतियाबिन्द का ऑपरेशन
पर्दे (रेटिना), पुतली (कॉर्निया) का इलाज
पलकबंदी, नाखूना व काला मोतिया का इलाज
बाल नेत्र चिकित्सा (भेंगापन) का इलाज
ECHS, TPA व कैशलेस सुविधा भी उपलब्ध
बीएचआरसी-डॉ. श्रॉफ आई केयर इंस्टीट्यूट
टीबी अस्पताल के पास, अटल्ला चुंगी, वृंदावन (मथुरा)
+91 8171607676, +91 8171664949, +91 8171755757

गणतंत्र दिवस
26 जनवरी
SERVE UTTAM VENTURES
PVT LTD
VIRENDER DAHIYA
DIRECTOR
GOVT. AUTHORISED REGD. VEHICLE SCRAPPING FACILITY
Adid.: Village Lohat, Khasra No. 25/14/2/2, 15/2, Badli, Jhajjar, Haryana-
1241005 (India)
Contact No. +91- 9990630006
website : www.serveuttamventures.com
Email. serveuttamventures01@gmail.com

STEPWORLD
Step World Tour & Travel Pvt. Ltd.
The Weddingz The Edutantra
WISH YOU ALL A VERY
HAPPY REPUBLIC DAY
Address: Office No. 698, 6th Floor, Plot No. 06, Pocket 01, Vegas Mall Sector
14, Dwarka, New Delhi 110075, 11 4704 6179
Contact person: Rashmi Tanwar
Mail id: md@stepworldtravels.com
Phone No: 11 4704 6179
Mobile No: 98102 86369 / 7836090008 +91 9311204072
Rashmi Tanwar
Managing Director

समस्त देशवासियों को
भारतीय लोकतंत्र के महापर्व
गणतंत्र दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएं
वतन पर जो फिदा होगा, अमर वो हर
नौजवान होगा, रहेगी जब तक दुनिया ये,
अफसाना उसका बयाँ होगा।
MRINAL
KUNDU
7053533190
26 JANUARY
UNIVERSAL COATING
Specialist : Electostatic Powder Coating
First floor Khasra no. 27/4, Village Nangli sakravati,
Najafgarh, New Delhi 110043

HAPPY Republic Day
LEGALIS SUBSIDIO LAW FIRM
For Every Challenge, We Have A Solution
ADVOCATES, SOLICITORS & LEGAL CONSULTANTS
VIKASDEEP SHARMA
ADVOCATE)
Supreme Court Of India
011-46529129
9911994525
9911994525
Legalissubsidiolawfirm@gmail.com
Advocatevikasdeepsharma@gmail.com
Lawyer's Chamber No. 522-A, Dwarka Court Complex,
New Delhi- 75
RZ-101/13 D Gali No. 6 Mohan Nagar Pankha Road New
Delhi.46

# 6 तरह की ग्रीन टी — प्रोफेशनल रेसिपी

पिंकी कुंडू

कलेक्शन (स्वाद + सेहत), नीचे दी गई रेसिपीज़ को क्लीन प्रोफेशनल और सोशल - पोस्ट फ्रेंडली भाषा में व्यवस्थित किया गया है — ताकि पढ़ने में आसान हों और सेव / शेयर करने योग्य बनें।

**1. क्लासिक लेमन & हनी ग्रीन टी डिटॉक्स • इम्युनिटी • रिफ्रेशिंग**

* सामग्री
* पानी — 1 कप
* ग्रीन टी — 1 टी-बैग / 1 छोटा चम्मच पत्ती
* शहद — 1 चम्मच
* नींबू —
* विधि पानी उबालकर गैस बंद करें।ग्रीन टी डालें, ढककर 2–3 मिनट रखें। छानें। गुनगुना होने पर नींबू रस व शहद मिलाएँ।

**2. अदरक–तुलसी ग्रीन टी इम्युनिटी बूस्टर • सर्दी-खांसी में लाभकारी**

* सामग्री
* पानी — 1 कप
* तुलसी पत्ते — 5–6
* अदरक — इंच (कद्दूकस)
* ग्रीन टी — 1 चम्मच
* विधि पानी में अदरक व तुलसी 2 मिनट उबालें। गैस बंद कर ग्रीन टी डालें, 2–3 मिनट ढकें। छानें; चाहें तो शहद / गुड़ मिलाएँ।

3. पुदीना ग्रीन टी ताज़गी • पाचन में सहायक,

* सामग्री
* पानी — 1 कप
* पुदीना — 8–10 पत्ते
* ग्रीन टी — 1 चम्मच
* काला नमक — 1 चुटकी
* विधि पानी उबालें, पुदीना डालकर गैस बंद करें। ग्रीन टी डालें, 3 मिनट ढकें। छानकर काला नमक मिलाएँ।

**4. दालचीनी ग्रीन टी वेट मैनेजमेंट • मेटाबॉलिज़्म सपोर्ट**

* सामग्री
* पानी — 1 कप
* दालचीनी — छोटा टुकड़ा / चम्मच पाउडर
* ग्रीन टी — 1 चम्मच
* विधि
* दालचीनी को पानी में 2–3 मिनट धीमी आँच पर उबालें। गैस बंद करें, ग्रीन टी डालें। 3 मिनट बाद छानें।

**5. कश्मीरी कहवा-स्टाइल ग्रीन टी एरोमैटिक • रॉयल फ्लेवर**

* सामग्री
* पानी — 1 कप
* इलायची — 2 (कुटी हुई)
* केसर — 1 धागा
* बादाम — 2–3 (कटे)
* ग्रीन टी — 1 चम्मच
* विधि पानी में इलायची व केसर उबालें। गैस बंद कर ग्रीन टी डालें, 2–3 मिनट ढकें। कप में बादाम डालकर चाय छानें; चाहें तो शहद मिलाएँ।

**6. लेमन ग्रास ग्रीन टी स्ट्रेस रिलीफ • बेहतर नींद**

* सामग्री
* पानी — 1 कप
* लेमन ग्रास — 1 चम्मच (कटी)
* ग्रीन टी — 1 चम्मच
* विधि लेमन ग्रास को पानी में 2 मिनट उबालें। गैस बंद करें, ग्रीन टी मिलाएँ। 3 मिनट ढककर रखें, फिर छानें।

**ज़रूरी टिप्स**

* ग्रीन टी खाली पेट न लें (एसिडिटी का जोखिम)।
* शहद हमेशा गुनगुनी चाय में मिलाएँ।
* ग्रीन टी को कभी उबालें नहीं — कड़वाहट बढ़ती है।

# बिना किसी केमिकल, बिना शुगर, बिल्कुल नेचुरल घर पर बना प्रोटीन पाउडर

पिंकी कुंडू

घर पर बना प्रोटीन पाउडर

सामग्री

* कद्दू के बीज (Pumpkin Seeds) – ½ कप
* चिया सीड्स (Chia Seeds) – ¼ कप
* अलसी के बीज (Flax Seeds) – ¼ कप
* तिल (Sesame Seeds) – ¼ कप
* बादाम (Almonds) – ½ कप
* अखरोट (Walnut) – ½ कप
* पिस्ता (Pistachio) – ¼ कप

**बनाने की विधि**

1. ड्राई रोस्ट करें (बहुत ज़रूरी)

* कढ़ाही को धीमी आंच पर गरम करें
* एक-एक करके सारी चीज़ें हल्की आँच पर भूनें:
* कद्दू के बीज – 2–3 मिनट
* तिल – 1–2 मिनट
* अलसी – चटकने तक
* चिया सीड्स – 30 सेकंड
* बादाम, अखरोट, पिस्ता – हल्के कुरकुरे होने तक। जलने न दें, वरना स्वाद खराब होगा

**2. ठंडा करें**

* सभी चीज़ों को प्लेट में निकाल लें
* पूरी तरह ठंडा होने दें

**3. पीसें मिक्सर जार में:**

* पहले बीज डालें और दरदरा पीसें
* फिर ड्राई फ्रूट्स डालें
* Pulse mode में पीसें
* पाउडर बहुत बारीक नहीं, हल्का दरदरा बेहतर रहता है

**स्टोरेज**

* एयरटाइट कांच के जार में रखें
* ठंडी और सूखी जगह पर रखें
* 1 महीने तक सुरक्षित

**सेवन करने का तरीका**

* दूध के साथ
* 1 गिलास गुनगुना दूध
* 1 टेबलस्पून प्रोटीन पाउडर
* चाहें तो 1 चुटकी इलायची / दालचीनी - दही या स्मूदी में
* दही / केला स्मूदी में 1 टेबलस्पून मिलाएँ

**ज़रूरी टिप्स**

* खाली पेट न ले
* दिन में 1–2 चम्मच काफी है
* बच्चों के लिए आधी मात्रा
* गर्भवती महिलाएं डॉक्टर से पूछें

**फायदे**

* नेचुरल प्रोटीन
* वेट लॉस में मदद
* हड्डियों और मसल्स के लिए अच्छा
* पेट साफ रखता है।

# खजूर का बीज कचरा नहीं! इसमें छुपा है सेहत का अनमोल खजाना

पिंकी कुंडू

खजूर का बीज जिसे हम बेकार समझकर फेंक देते हैं, वही खजूर का बीज सेहत के लिए एक कमाल का देसी विकल्प है। क्या आप जानते हैं, इससे कैफीन-फ्री कॉफी भी बनती है?

खजूर (Date) के बीज से "कॉफी जैसा पेय" बनाया जा सकता है, लेकिन इसे असली कॉफी समझना थोड़ा गलत होगा। इसका सही नाम है — Date Seed Coffee / Date Pit Coffee

**खजूर बीज की कॉफी क्या होती है?**

* खजूर के बीजों को धोकर, सुखाकर और भूनकर पाउडर बनाया जाता है
* इस पाउडर को उबालकर या फिल्टर करके पिया जाता है
* रंग, खुशबू और स्वाद कॉफी से मिलता-जुलता होता है

**क्या इसमें कैफीन होता है? नहीं**

* खजूर बीज की कॉफी पूरी तरह कैफीन-फ्री होती है
* इसलिए यह BP, एसिडिटी और अनिद्रा वालों के लिए बेहतर विकल्प मानी जाती है

**स्वाद कैसा होता है?**

* हल्का नटी (Nuts जैसा)
* कभी-कभी कोको / चॉकलेट की झलक
* रोस्टिंग जितनी गहरी, स्वाद उतना स्ट्रॉन्ग

**सेहत से जुड़े फायदे**

* एंटीऑक्सिडेंट्स से भरपूर
* पाचन में सहायक
* ब्लड शुगर स्पाइक नहीं करता
* लीवर और आंतों के लिए फायदेमंद माना जाता है

घर पर बनाने का आसान तरीका

* खजूर के बीज साफ करके सुखाएँ
* गहरे भूरे रंग तक भूनें
* मिक्सर में पीस लें।

# अपराजिता फूल के फायदे

अपराजिता फूल के कई फायदे हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख लाभ इस प्रकार हैं:

1. मानसिक स्वास्थ्य: अपराजिता फूल तनाव, चिंता और अनिद्रा जैसी समस्याओं में राहत दिलाने में मदद करता है। यह छात्रों और मानसिक कार्य करने वालों के लिए विशेष रूप से लाभकारी माना जाता है।
२. आंखों की रोशनी: अपराजिता फूल के अर्क या काढ़े का उपयोग आंखों की समस्याओं जैसे कंजेक्टिवाइटिस, आंखों की जलन और थकान में राहत दिलाने में मदद कर सकता है।
३. महिलाओं की समस्याएं: अपराजिता फूल महिलाओं में पीरियड्स के दौरान अत्यधिक रक्तस्राव, अनियमित मासिक धर्म और हार्मोनल असंतुलन की समस्याओं में मदद कर सकता है।
4. पाचन तंत्र और वजन नियंत्रण: अपराजिता फूल के एंटीऑक्सीडेंट गुण पाचन तंत्र को बेहतर बनाने और वजन घटाने में मदद कर सकते हैं।
5. ब्लड शुगर और हृदय स्वास्थ्य: अपराजिता फूल के सेवन से ब्लड शुगर लेवल को नियंत्रित करने और हृदय स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद मिल सकती है।

अपराजिता फूल का सेवन करने से पहले आयुर्वेदिक विशेषज्ञ या डॉक्टर की सलाह लेना उचित होगा, खासकर यदि आप किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित हैं या गर्भवती हैं।

बैंगनी फूल का सेवन कैसे करें? बैंगनी फूल जिसे अपराजिता फूल भी कहा जाता है, का सेवन कई तरीकों से किया जा सकता है। यहाँ कुछ तरीके दिए गए हैं:

1. चाय: अपराजिता फूल की चाय बनाकर पी जा सकती है। इसके लिए 4-5 ताजे या सूखे फूलों को 1 कप पानी में उबाल लें और फिर छानकर पी लें। स्वाद के लिए शहद या नींबू मिलाया जा सकता है।
२. काढ़ा: अपराजिता फूल का काढ़ा बनाकर भी इसका सेवन किया जा सकता है। इसके लिए फूलों को पानी में उबालकर छान लें और फिर इसका सेवन करें।
३. सलाद: अपराजिता फूल के पत्तों और फूलों को सलाद में मिलाकर भी खाया जा सकता है।
4. आयुर्वेदिक मिश्रण: अपराजिता फूल को अन्य आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों के साथ मिलाकर भी इसका सेवन किया जा सकता है।

लेकिन, इसके सेवन से पहले आयुर्वेदिक विशेषज्ञ या डॉक्टर की सलाह लेना आवश्यक है, खासकर यदि आप किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित हैं या गर्भवती हैं।

# कौन-सा खाना किस अंग को साफ करता है?

पिंकी कुंडू

1 नींबू – लिवर को साफ करता है
2 पालक – खून को साफ करता है
3 खीरा – किडनी को साफ करता है
4 लहसुन – धमनियों को साफ करता है
5 गाजर – आँखों को साफ करता है
6 ब्रोकली – फेफड़ों को साफ करती है
7 सेव – आंतों को साफ करता है
8 मक्का – कोलन को साफ करता है
9 अंगूर – दिल को साफ करते हैं
10 ग्रीन टी – कोशिकाओं को साफ करती है
11 ब्लूवेरी – दिमाग को साफ करती है
12 पपीता – पाचन तंत्र को साफ करता है
13 (चुकदंर – खून की नसों को साफ करता है
14 दही – आंतों की परत को साफ करता है
15 अनानास – साइनस को साफ करता है

# जाने औषधीय हल्दियों के प्रकार, किस बीमारी में कौन सी हल्दी का सेवन करना है लाभदायक व कैसे करें उपयोग

पिंकी कुंडू

हल्दी के प्रकार एवं उनके औषधीय उपयोग

1. साधारण पीली हल्दी (घर की हल्दी)
उपयोगी रोग
* • सूजन,
* चोट, दर्द
* • सर्दी-खांसी
* • इम्यूनिटी कम होना
* • त्वचा रोग
* सेवन तरीका:- चम्मच हल्दी + गुनगुना दूध रात में

2. कस्तूरी हल्दी (जंगली हल्दी) उपयोगी रोग
* • चेहरे के दाग - धब्बे
* • मुहांसे
* • त्वचा की एलर्जी
* • सौंदर्य उपचार
* उपयोग:- चेहरे पर लेप (खाने में प्रयोग नहीं)

3. लक्ष्मी हल्दी उपयोगी रोग
* • घाव जल्दी भरना
* • संक्रमण
* • पूजा एवं आयुर्वेदिक प्रयोग
* उपयोग:- घाव पर हल्दी + नारियल तेल का लेप

4. काली हल्दी उपयोगी रोग
* • जोड़ों का दर्द
* • अस्थमा
* • कमजोरी
* • रोग प्रतिरोधक क्षमता
* सेवन बहुत कम मात्रा, वैद्य की सलाह से

5. दारुहल्दी (दारुहरिद्रा) उपयोगी रोग
* • जिगर की समस्या• पीलिया• पेट के रोग
* • संक्रमण
* सेवन:- चूर्ण चम्मच शहद के साथ

6. सफेद हल्दी उपयोगी रोग
* • पाचन समस्या
* • सूजन
* • गैस, अपच
* सेवन:- चूर्ण रूप में या काढ़ा बनाकर

7. लाल हल्दी उपयोगी रोग
* • रक्त शुद्धि
* • त्वचा रोग
* • घाव
* उपयोग:- लेप या काढ़ा

8. नारंगी हल्दी उपयोगी रोग
* • गठिया (Arthritis)
* • मांसपेशियों का दर्द
* • सूजन
* • शरीर में जकड़न
* सेवन:- चम्मच दूध या गर्म पानी के साथ

9. सुगंधित हल्दी उपयोगी रोग
* • तनाव
* • अनिद्रा
* • मानसिक थकान
* • सिरदर्द
* उपयोग:- काढ़ा या तेल मालिश

10. अमर हल्दी (वन हल्दी) उपयोगी रोग
* • बार-बार बीमार होना
* • कमजोरी
* • संक्रमण
* सेवन:- चूर्ण शहद के साथ सुबह

11. मदर हल्दी (जड़ वाली ताजी हल्दी) उपयोगी रोग
* • खून की कमी
* • पाचन शक्ति कमजोर
* • शरीर में सूजन
* सेवन:- कच्ची हल्दी का छोटा टुकड़ा चबाएँ या रस

12. कृष्णा हल्दी उपयोगी रोग
* • पुराने जोड़ों का दर्द
* • नसों की कमजोरी
* • वात रोग
* सेवन:- तेल बनाकर मालिश (खाने में कम प्रयोग)

13. औषधीय हल्दी (आयुर्वेदिक ग्रेड) उपयोगी रोग
* • कैंसर से बचाव (सहायक)
* • सूजन
* • रोग प्रतिरोधक क्षमता
* • हृदय रोग
* सेवन:- डॉक्टर/वैद्य की सलाह से कैप्सूल या चूर्ण

रोग अनुसार सही हल्दी चुनें
* रोग उपयोगी हल्दी
* सर्दी-खांसी पीली हल्दी
* त्वचा रोग कस्तूरी / लाल हल्दी
* जोड़ दर्द काली / नारंगी हल्दी
* पाचन सफेद / दारुहल्दी
* पीलिया दारुहल्दी
* कमजोरी अमर / मदर हल्दी
* घाव लक्ष्मी / लाल हल्दी
* तनाव सुगंधित हल्दी

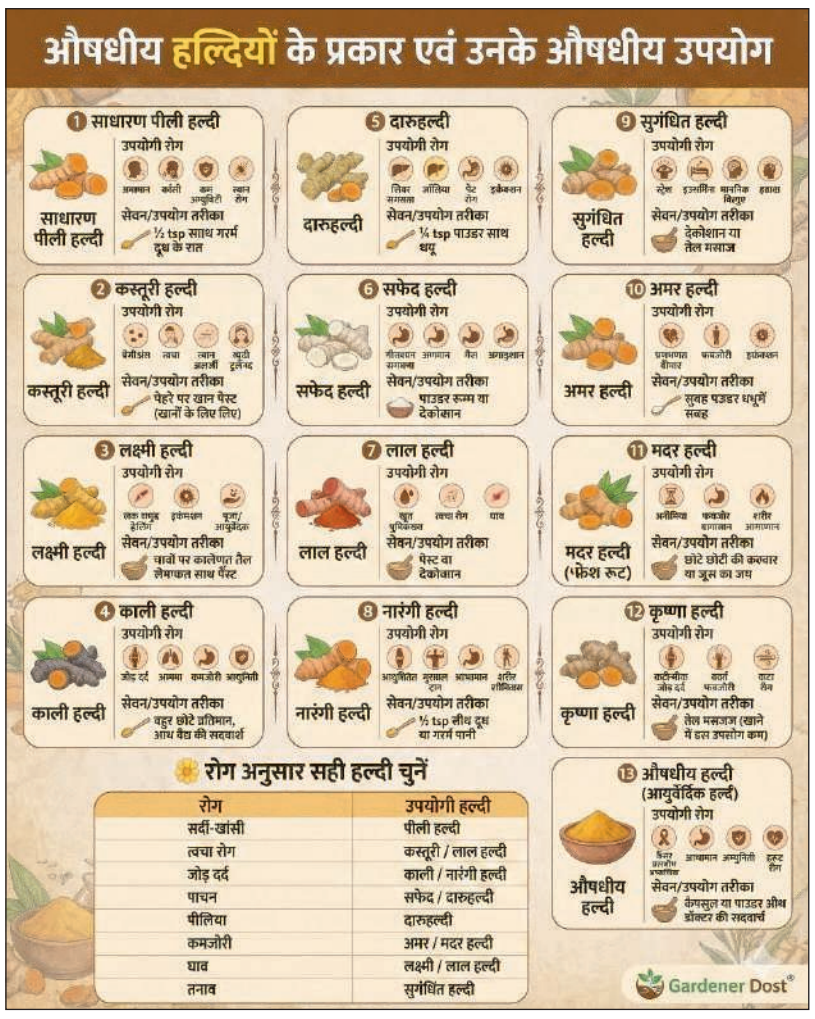

नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

# परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

वर्ष 03, अंक 327, नई दिल्ली, सोमवार 26 जनवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 77वां गणतंत्र दिवस 2026: वंदे मातरम के 150 वर्ष

06 परिणाम से परे: परीक्षा-जुनूनी दुनिया में सफलता को पुनः परिभाषित करना

08 केंद्र सरकार के कर्मचारियों के खिलाफ भ्रष्टाचार मामलों की जांच कर सकती है राज्य एजेंसी: सुप्रीम कोर्ट

# 77वां गणतंत्र दिवस 2026: वंदे मातरम के 150 वर्ष

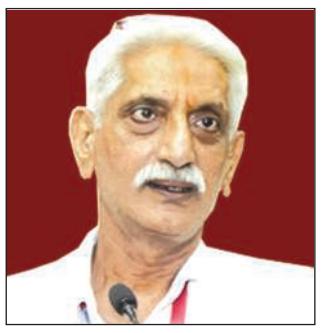

संजय कुमार बाठला

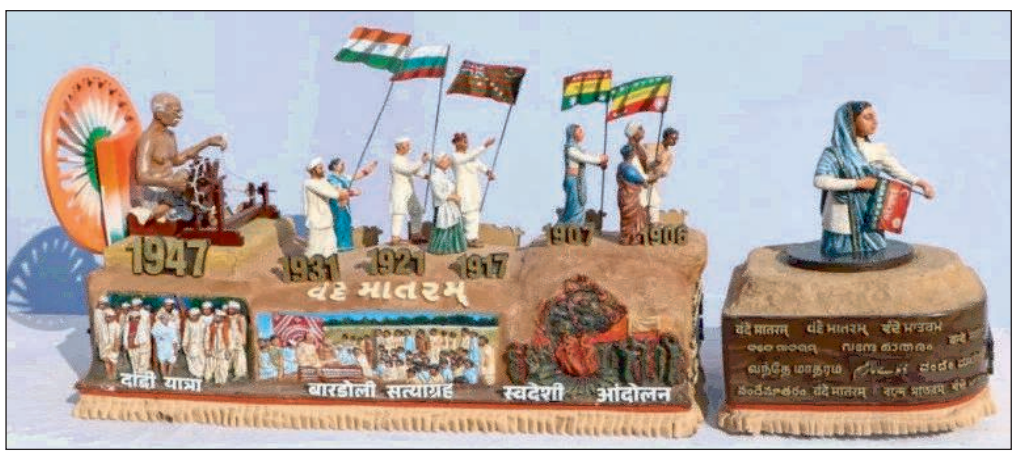


**आत्मनिर्भर भारत और बदलती वैश्विक भूमिका का ऐतिहासिक संगम - एक समग्र विश्लेषण** भारतीय सेना के पशु दल पहली बार कर्तव्य पथ पर मार्च करेंगे, जिसमें बैक्ट्रियन ऊंट, ज़ांस्कर टट्टू, शिकारी पक्षी और स्वदेशी कुत्तों की नस्लें शामिल होंगी

भारत अपनी जड़ों से शक्ति लेकर भविष्य की ओर बढ़ रहा है। 77वां गणतंत्र दिवस वास्तव में भारत की बदलती वैश्विक भूमिका और अटूट राष्ट्रीय आत्मा का उत्सव होगा।

भारत एक बार फिर इतिहास के ऐसे निर्णायक मोड़ पर खड़ा है, जहां परंपरा और भविष्य एक - दूसरे से हाथ मिलाते दिखाई दे रहे हैं।

26 जनवरी 2026 को भारत अपना 77वां गणतंत्र दिवस मना रहा है और इस बार यह समारोह केवल एक संवैधानिक उत्सव नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और वैश्विक कूटनीति का भव्य प्रदर्शन बनने जा रहा है।

कर्तव्य पथ पर होने वाला यह आयोजन भारत की उस यात्रा का प्रतीक है, जिसमें वह औपनिवेशिक विरासत से निकलकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और वैश्विक नेतृत्वकर्ता राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर है।

इस वर्ष का गणतंत्र दिवस समारोह विशेष इसलिए भी है क्योंकि यह भारत के राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' के 150 वर्ष पूरे होने का प्रतीक है। 1875 में बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित यह गीत न केवल स्वतंत्रता संग्राम की आत्मा रहा, बल्कि इसने भारतीय राष्ट्रवाद को एक सांस्कृतिक और भावनात्मक आधार प्रदान किया।

2026 में जब कर्तव्य पथ पर 'वंदे मातरम' की गूंज सुनाई देगी, तब वह केवल एक गीत नहीं होगा, बल्कि डेढ़ सौ वर्षों के संघर्ष, बलिदान और संकल्प का सामूहिक स्मरण होगा।

26 जनवरी का दिन हर भारतीय के लिए गर्व, आत्मसम्मान और संविधान के प्रति निष्ठा का दिन होता है। यह वह दिन है जब भारत ने स्वयं को एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित किया।

77 वर्षों की इस संवैधानिक यात्रा में भारत ने अनेक चुनौतियों का सामना किया, आर्थिक असमानता सामाजिक विविधता, सीमाई संघर्ष और वैश्विक दबाव।

इसके बावजूद भारत ने लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखते हुए निरंतर प्रगति की है।

2026 का गणतंत्र दिवस इसी लोकतांत्रिक परिपक्वता का उत्सव है।

इस बार का समारोह पिछले वर्षों से कई मायनों में अलग और विशिष्ट होने वाला है।

सबसे बड़ा प्रतीकात्मक परिवर्तन यह है कि कर्तव्य पथ पर दर्शकों के लिए वीआईपी लेबल को समाप्त कर दिया गया है।

यह निर्णय भारतीय लोकतंत्र की उस भावना को सशक्त करता है, जिसमें सभी नागरिक समान हैं। दर्शक दीर्घाओं को अब गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा जैसी भारतीय नदियों के नाम दिए गए हैं। यह कदम न केवल सांस्कृतिक एकता को दर्शाता है, बल्कि भारत की भौगोलिक, सभ्यतागत और पारिस्थितिक चेतना को भी रेखांकित करता है।

साथियों बात अगर हम 26 जनवरी 2026 के 77वें गणतंत्र दिवस के थीम को समझने की करें तो, मुख्य विषय वंदे मातरम रखा गया है, जबकि आत्मनिर्भर भारत को द्वितीयक विषय के रूप में प्रस्तुत किया जाएगा।

यह विषय चयन अपने आप में गहरा संदेश देता है।

वंदेमातरम जहां भारत की आत्मा, संस्कृति और स्वतंत्रता संग्राम की स्मृति है, वहीं आत्मनिर्भर भारत भविष्य की ओर देखता हुआ संकल्प है। यह बताता है कि भारत अपनी जड़ों से जुड़कर ही वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ना चाहता है।

हम 2026 के गणतंत्र दिवस समारोह को अंतरराष्ट्रीय परिपेक्ष में समझने की बात करें तो यह इस दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

भारत - यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौते से ठीक पहले यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन और यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष एंटोनियो कोस्टा का मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होना भारत की वैश्विक कूटनीतिक स्थिति को रेखांकित करता है। यह उपस्थिति केवल औपचारिक नहीं, बल्कि संकेत है कि भारत अब वैश्विक आर्थिक और रणनीतिक संतुलन में एक केंद्रीय भूमिका निभा रहा है।

यूरोपीय संघ के शीर्ष नेतृत्व की मौजूदगी यह दर्शाती है कि भारत - यूरोप संबंध अब केवल व्यापार तक सीमित नहीं रहे, बल्कि वे साझा लोकतांत्रिक मूल्यों, तकनीकी सहयोग, रक्षा साझेदारी और वैश्विक स्थिरता के मुद्दों तक विस्तृत हो चुके हैं।

गणतंत्र दिवस के मंच से यह संदेश जाएगा कि भारत किसी एक ध्रुव के साथ नहीं, बल्कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में संतुलन बनाने वाला प्रमुख स्तंभ है।

सैन्य परेड को समझने की करें तो यह इस बार भी समारोह का केंद्र बिंदु होगी, लेकिन 2026 की परेड कई ऐतिहासिक नवाचारों के साथ सामने आएगी।

भारतीय सेना के पशु दल पहली बार कर्तव्य पथ पर मार्च करेंगे, जिसमें

बैक्ट्रियन ऊंट, ज़ांस्कर टट्टू, शिकारी पक्षी और स्वदेशी कुत्तों की नस्लें जैसे मुधोल और राजपालयम शामिल होंगी।

यह केवल एक दृश्यात्मक आकर्षण नहीं बल्कि भारत की पारंपरिक सैन्य विरासत और जैवविविधता के प्रति सम्मान का प्रतीक है।

सैन्य परेड में पहली बार बैटल ऐरे फॉर्मेट का प्रदर्शन किया जाएगा, जो आधुनिक युद्ध रणनीतियों, नेटवर्क - केंद्रित युद्ध और स्वदेशी रक्षा तकनीक की क्षमता को प्रदर्शित करेगा। यह संदेश स्पष्ट होगा कि भारत न केवल हथियारों का आयातक बल्कि रक्षा उत्पादन और नवाचार का उभरता हुआ वैश्विक केंद्र है।

आत्मनिर्भर भारत की यह झलक भारत की सामरिक स्वतंत्रता को मजबूती प्रदान करती है।

कर्तव्य पथ पर इस वर्ष कुल 30 झांकियां प्रस्तुत की जाएंगी, जो भारत की सांस्कृतिक विविधता, राज्यों की विशिष्ट पहचान, तकनीकी प्रगति और सामाजिक नवाचारों को दर्शाएंगी।

ये झांकियां केवल परंपरा का प्रदर्शन नहीं होंगी, बल्कि यह दिखाएंगी कि कैसे भारत अपनी विरासत को आधुनिक विकास के साथ जोड़ रहा है।

गणतंत्र दिवस 2026 में जनभागीदारी को विशेष महत्व में समझने की कोशिश करें तो देश के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े 10 हज़ार नागरिकों को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है, जबकि सांस्कृतिक कार्यक्रमों में 2,500 कलाकार अपनी प्रस्तुतियां देंगे। यह सहभागिता यह संदेश देती है कि गणतंत्र दिवस केवल सत्ता का उत्सव नहीं, बल्कि जनता का पर्व है।

सरकार द्वारा माय भारत पोर्टल के माध्यम से नागरिकों को वंदे मातरम गायन और निबंध लेखन जैसी प्रतियोगिताओं में भाग लेने का अवसर दिया गया है।

यह डिजिटल माध्यम नई पीढ़ी को राष्ट्रीय प्रतीकों से जोड़ने का सशक्त प्रयास है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि भारत का राष्ट्रवाद समावेशी है, जिसमें हर नागरिक की भागीदारी महत्वपूर्ण है।

77वां गणतंत्र दिवस समारोह यह भी दर्शाता है कि भारत अपनी पहचान को केवल अतीत में नहीं खोजता, बल्कि भविष्य के लिए नए प्रतिमान स्थापित करता है।

वंदे मातरम के 150 वर्ष पूरे होना हमें याद दिलाता है कि स्वतंत्रता केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं, बल्कि सतत जिम्मेदारी है।

आत्मनिर्भर भारत का संकल्प इसी जिम्मेदारी की आधुनिक अभिव्यक्ति है।

अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए यह समारोह भारत की उस छवि को प्रस्तुत करेगा, जो सांस्कृतिक रूप से समृद्ध, सैन्य रूप से सक्षम, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर और लोकतांत्रिक रूप से सशक्त है।

यह आयोजन संदेश देगा कि भारत न तो आक्रामक राष्ट्रवाद में विश्वास करता है और न ही निर्भरता में बल्कि सहयोग, संतुलन और आत्मसम्मान के रास्ते पर चलता है।

26 जनवरी को राष्ट्रपति द्वारा और 15 अगस्त को प्रधानमंत्री द्वारा झंडा वंदन करने के मुख्य उद्देश्य को जानने का प्रयास करें तो 26 जनवरी (गणतंत्र दिवस) को राष्ट्रपति इसलिए संबोधन देता हैं क्योंकि राष्ट्रपति देश का संवैधानिक प्रमुख होता हैं। 26 जनवरी को संविधान लागू हुआ था, और संविधान के सर्वोच्च संरक्षक राष्ट्रपति होते हैं। इस दिन राष्ट्र राज्य का उत्सव मनाता है, न कि सरकार का इसलिए यह भूमिका राष्ट्रपति की होती है। राष्ट्रपति सशस्त्र सेनाओं का सर्वोच्च कमांडर भी हैं और परेड उसी का प्रतीक है।

**वहीं 15 अगस्त (स्वतंत्रता दिवस) को प्रधानमंत्री लाल किले से बोलते हैं** क्योंकि वह सरकार के प्रमुख होते हैं। यह दिन आज़ादी और सरकार की नीतियों, उपलब्धियों से जुड़ा होता है।

**अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि 26 जनवरी 2026 का दिन केवल एक तिथि नहीं, बल्कि एक विचार एक भावना और एक संकल्प है।**

कर्तव्य पथ पर जब वंदे मातरम की गूंज आत्मनिर्भर भारत की झलक के साथ मिलेगी, तब यह स्पष्ट होगा कि भारत अपनी जड़ों से शक्ति लेकर भविष्य की ओर बढ़ रहा है।

**77वां गणतंत्र दिवस वास्तव में भारत की बदलती वैश्विक भूमिका और अटूट राष्ट्रीय आत्मा का उत्सव होगा।**

## साप्ताहिकी अंकशास्त्र

परिवहन विशेष के सभी पाठकों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

# भारत का अंकशास्त्रीय (Numerology) विश्लेषण:-

डॉ. पूजाप्रसून एन
गोल्ड मेडलिस्ट
09599101326, 07303855446

आइए भारत का अंकशास्त्र के आधार पर विस्तृत अध्ययन करें — स्पष्ट, संतुलित और पारंपरिक अंकशास्त्रीय सिद्धांतों पर आधारित।

1 भारत की जन्म तिथि का अंकशास्त्र:-

भारत की स्वतंत्रता तिथि:-
15 अगस्त 1947
कुल योग:
मूलांक:-
1 + 5 =6

इस मूलांक का स्वामी ग्रह शुक्र (Venus) है, जिसे सौंदर्य, प्रेम और भौतिक सुखों का कारक माना जाता है। शुक्र की ऊर्जा के कारण ये उन क्षेत्रों में सफलता देता है, जहाँ सौंदर्य, कला और लोगों से जुड़ाव हो।मूलांक 6 प्रेम, सौंदर्य और सामंजस्य का प्रतीक है। यह मूलांक जीवन को सुंदर बनाने की कला सिखाता है, साथ ही यह भी सिखाता है कि सच्चा सुख संतुलन में ही है।

**भाग्यांक:-**

1 + 5 + 8 + 1 + 9 + 4 + 7 = 35 3 + 5 = 8

भाग्य / जीवन पथ संख्या: 8
संख्या 8 का भारत के लिए अर्थ:-
संख्या 8 का स्वामी ग्रह शनि है,
यह संख्या कर्म, शक्ति, संघर्ष, न्याय, अनुशासन, जनसमूह और अधिकार का प्रतीक है।
शनि धीमे लेकिन स्थायी परिणाम देता है।

**भारत के संदर्भ में अर्थ:-**

*भारत की यात्रा एक कर्मप्रधान यात्रा है,
*संघर्षों और बाधाओं के बाद उन्नति,
*विलंब, बाधाएँ और प्रशासनिक जटिलताएँ,
*लेकिन अंततः स्थायी और सशक्त उभार,

**भारत का मुख्य फोकस:-**

*संविधान और कानून
*लोकतंत्र
*श्रमिक वर्ग और जनसामान्य
*आधारभूत ढाँचा, शासन और न्याय
*शनि कभी जल्दी फल नहीं देता,
लेकिन जो देता है, स्थायी रूप से देता है।

२ नाम अंकशास्त्र – "INDIA"
(चाल्डियन प्रणाली के अनुसार)
I = 1
N = 5
D = 4
I = 1
A = 1
कुल योग = १२ 1 + २ = ३
नाम संख्या: ३ (गुरु / बृहस्पति)

**संख्या ३ का भारत पर प्रभाव:-**

ज्ञान, बुद्धि और मार्गदर्शन की संख्या।
शिक्षा, दर्शन और आध्यात्मिकता का प्रतीक।
गुरु तत्व का प्रतिनिधित्व।

**भारत पर प्रभाव:-**

INDIA की जन्मतिथि 15/6 है, जो शुक्र का अंक है, और INDIA का नामांक १२/३ है, जो गुरु (बृहस्पति) का अंक है।
शुक्र (6) और बृहस्पति (3) को प्राकृतिक शत्रु माना जाता है।
संख्या ३ देवगुरु है और संख्या 6 दैत्यगुरु है, और ये एक-दूसरे के पूर्ण शत्रु हैं।
इनकी जीवन दर्शन की सोच एक-दूसरे से पूरी तरह टकराती है।
शुक्र जीवन का आनंद लेना चाहता है, जबकि बृहस्पति जीवन के पाठ सिखाना चाहता है।
यह टकराव तब आंतरिक विरोधाभास उत्पन्न करता है जब दोनों संख्याएँ एक ही कुंडली में मौजूद होती हैं, या किसी व्यक्ति के मूलांक एवं नामांक में एक साथ प्रभाव में हों:-
इससे आंतरिक द्वंद्व, भावनात्मक असंतोष, करियर और व्यावसायिक चुनौतियाँ,
क्षमता होते हुए भी विलंब, व्यक्तिगत जीवन की समस्याएँ और स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं।
यह संयोजन कर्मजन्य (कर्मिक) प्रभाव भी दे सकता है।
यह संयोजन पूर्वजन्म में भोग और उत्तरदायित्व के बीच असंतुलन को दर्शाता है।
यह सफलता को नकारता नहीं है, लेकिन उसमें विलंब अवश्य करता है।
यह हृदय और सिद्धांतों के बीच आंतरिक तनाव उत्पन्न करता है।
जीवन एक निरंतर संतुलन साधने की प्रक्रिया जैसा महसूस होता है।
यहाँ INDIA के भाग्यांक 8 (शनि) और नामांक ३ (गुरु/बृहस्पति) का अंक है।
शनि कर्म, अनुशासन और न्याय का ग्रह है।
भाग्यांक 8 यह दर्शाता है कि भारत का राष्ट्रीय जीवन परिश्रम, संघर्ष और उत्तरदायित्व से होकर गुजरता है।
नामांक ३ (गुरु) का मूल स्वभाव
गुरु (बृहस्पति) ज्ञान, धर्म और मार्गदर्शन का ग्रह है। नामांक ३ भारत की पहचान को ज्ञान, संस्कृति और नैतिक नेतृत्व से जोड़ता है। गुरु समाज को दिशा देता है, नियमों को अर्थ प्रदान करता है।
*भारत का विश्वगुरु स्वरूप
*प्राचीन ज्ञान परंपरा
*योग, वेद, आयुर्वेद और दर्शन
*उच्च शिक्षा और आध्यात्मिक नेतृत्व
शनि–गुरु का संयुक्त प्रभाव (8 + ३)
शनि और गुरु का संबंध कठोर लेकिन संतुलनकारी माना जाता है।
यह संयोजन कर्म और धर्म को एक साथ जोड़ता है।

३ मुख्य अंकशास्त्रीय संयोजन

भाग्य संख्या: 8 (शनि)
नाम संख्या: ३ (बृहस्पति)
यह एक अत्यंत शक्तिशाली लेकिन कर्मप्रधान संयोजन है।
शनि + बृहस्पति का प्रभाव:
अनुशासन के साथ ज्ञान
न्याय के साथ धर्म
शक्ति के साथ विवेक

**इसी कारण:**

भारत की प्रगति धीमी लेकिन स्थायी होती है
बार-बार परीक्षाओं से गुजरता है
फिर भी नैतिक और आध्यात्मिक नेतृत्व बनाए रखता है

INDIA के नामांक, पिरामिड संख्या और राष्ट्रीय संघर्षों का अंकशास्त्रीय रहस्य:-
अंकशास्त्र में किसी भी नाम का प्रभाव केवल नामांक (Name Number) तक सीमित नहीं होता।
नाम के भीतर एक और अत्यंत महत्वपूर्ण संख्या छिपी होती है, जिसे पिरामिड संख्या (Pyramid Number) कहा जाता है।
यह संख्या नामांक जितनी ही शक्तिशाली, निर्णायक और परिणामदायक मानी जाती है।
जहाँ नामांक व्यक्ति या राष्ट्र की बाहरी पहचान और अभिव्यक्ति दर्शाता है, वहीं पिरामिड संख्या उस नाम की रक्षा-शक्ति, संकट-निवारण क्षमता और आंतरिक सहारा होती है।
India का मूलांक, भाग्यांक और नामांक
India की जन्मतिथि: 15
मूलांक: 15/6 — शुक्र का अंक
**भारत का भाग्यांक:**
15 अगस्त 1947 35/8 — शनि का अंक
नाम: INDIA
नामांक: १२/३ — गुरु (बृहस्पति) का अंक.
**प्रभाव :-**
बार-बार संकट
संघर्षों से भरा इतिहास
सीमित संसाधनों में बड़े दायित्व
स्वतंत्रता के बाद भी चुनौतियाँ
विकास में विलंब, लेकिन विफलता नहीं।
यह स्पष्ट करता है कि नामांक ३ ने भारत के मूलांक 6 के साथ टकराव उत्पन्न किया, जिसके कारण देश को निरंतर संघर्षों का सामना करना पड़ा।
INDIA की पिरामिड संख्या:- २३/5
INDIA नाम की पिरामिड संख्या है:- २३/5
— बुध का अंक।
**बुध (5) का स्वभाव:-**
बुद्धिमता,
संचार और रणनीति,
अनुकूलन क्षमता,
संकट में समाधान,
लचीलापन और चतुराई।
पिरामिड 5 की भारत के मूलांक और भाग्यांक से संगति:-
मूलांक 6 (शुक्र) + पिरामिड 5 (बुध)
बुध और शुक्र मित्र ग्रह हैं,
सौंदर्य + बुद्धि का संतुलन,
कूटनीति और सामाजिक संतुलन,
भाग्यांक 8 (शनि) + पिरामिड 5 (बुध)
बुध शनि का सहयोगी है,
रणनीति के साथ धैर्य,
योजना बनाकर संकट से निकलने की क्षमता, यही कारण है कि भारत हर संकट के बाद स्वयं को पुनः खड़ा कर पाता है।
**भारत के संघर्षों से उबरने का रहस्य:-**
भारत ने युद्ध देखे,
विभाजन झेला,
आर्थिक संकट सहे,
राजनीतिक अस्थिरता देखी,
वैश्विक दबावों का सामना किया,
फिर भी भारत टूटा नहीं,
बिखरा नहीं,
अपनी पहचान नहीं खोया,
इसका मुख्य कारण है INDIA नाम की पिरामिड संख्या २३/5।
यह संख्या:
भारत को लचीलापन देती है,
हर परिस्थिति में नया मार्ग खोजने की शक्ति देती है,
संकट को अवसर में बदलने की क्षमता देती है।
नामांक बनाम पिरामिड: संघर्ष और सुरक्षा का संतुलन
नामांक ३ ने संघर्ष दिए
पिरामिड 5 ने समाधान दिए
गुरु ने परीक्षा ली
बुध ने रास्ता दिखाया।
इसी संतुलन के कारण भारत:
हर चुनौती से ऊपर उठता है,
हर संकट को पार करता है,
और हर बार पहले से अधिक सशक्त होकर उभरता है।
भारत को संघर्ष नामांक से मिले,
लेकिन संरक्षण पिरामिड संख्या से मिला।
नामांक ३ ने भारत को तपाया,
पिरामिड 5 ने भारत को बचाया।
"यदि INDIA नाम का पिरामिड २३/5 न होता,
तो भारत के संघर्ष और भी गहरे होते।
यही वह शक्ति है,
जिसने भारत को हर तूफ़ान में पार लगाया।"
अब हम यहाँ Bharat के नामांक के साथ India के नामांक की तुलना करते हैं :-
BHARAT नाम: नामांक और पिरामिड:-
BHARAT का नामांक
BHARAT = 15/6
ग्रह: शुक्र
*यह नामांक भारत के मूलांक 6 से पूर्ण सामंजस्य में है।
इससे:
सांस्कृतिक एकरूपता
भावनात्मक स्थिरता
परंपरा और पहचान की मजबूती
मिलती है।
BHARAT की पिरामिड संख्या
पिरामिड: २१/3
ग्रह: गुरु (बृहस्पति)
यहाँ एक महत्वपूर्ण मोड़ आता है।
गुरु (3):
शुक्र (6) का शत्रु
शनि (8) के साथ भी कठोर संबंध।
BHARAT पिरामिड ३ का प्रभाव:-
नैतिकता का दबाव,
आदर्शवाद,
निर्णयों में विलंब,
व्यवहारिकता की कमी,
किंतु ३ BHARAT के मूलांक का शत्रु होने के कारण संघर्ष देने का कार्य करता है।

4 भारत की अंकशास्त्रीय शक्तियाँ:-

*अद्भुत सहनशक्ति,
*गहरी आध्यात्मिक जड़ें,
*आक्रमणों और संकटों से उबरने की क्षमता,
*मजबूत लोकतांत्रिक आधार,
*वैश्विक सांस्कृतिक सम्मान,

5 भारत की चुनौतियाँ

कार्यान्वयन में विलंब
राजनीतिक अस्थिरता
भ्रष्टाचार (शनि सत्य की परीक्षा लेता है)
धीमी सुधार प्रक्रिया
ये कमज़ोरियाँ नहीं, बल्कि शनि द्वारा दिए गए कर्मपाठ हैं।

6 वर्तमान और भविष्य का संकेत (२०२६ के बाद)

भारत एक मजबूत प्रभाव काल में प्रवेश कर रहा है।
मुख्य फोकस:
बुनियादी ढाँचा
कानूनी सुधार
वैश्विक नेतृत्व
आध्यात्मिकता और तकनीक का संतुलन
दीर्घकालिक विकास निश्चित है, विशेष रूप से धैर्य और प्रयास के साथ।
अंतिम निष्कर्ष
अंकशास्त्र के अनुसार,
भारत त्वरित प्रसिद्धि के लिए नहीं बना है।
भारत बना है स्थायी शक्ति, ज्ञान और वैश्विक मार्गदर्शन के लिए।
"भारत धीरे-धीरे उठता है — लेकिन जब उठता है, तो स्थायी रहता है।"
भारत का भविष्य न तो त्वरित चमक है, न ही आक्रामक प्रभुत्व।
यह तप, धैर्य और धर्म से अर्जित स्थायी नेतृत्व है।
सार वाक्य:-
शनि भारत को गढ़ रहा है,
गुरु भारत को दिशा दे रहा है,
शुक्र भारत को जोड़ रहा है,
और बुध भारत को आगे बढ़ा रहा है।

पिंकी कुंडू

## टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html I
tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

## आज का साइबर सुरक्षा विचार: मिलिए सहायक सुरक्षा आयुक्त अर्जुन से — भारत का रेलवे रोबोकॉप

### भारत को उन देशों की श्रेणी में ला रहा है जो रोबोटिक पुलिसिंग और एआई - आधारित सार्वजनिक सुरक्षा पर प्रयोग कर रहे हैं।

**ASC अर्जुन क्या है?** रेलवे प्रोटेक्शन फोर्स (RPF), वॉल्टेयर डिवीजन, विशाखापट्टनम द्वारा विकसित, ASC अर्जुन भारत का पहला ह्यूमनॉइड रोबोकॉप है जिसे यात्री सुरक्षा मजबूत करने, निगरानी बढ़ाने और रेलवे सुरक्षा ढांचे का आधुनिकीकरण करने के लिए बनाया गया है।

**मुख्य विशेषताएँ**

*एआई-संचालित निगरानी: घुसपैठ का पता लगाता है, भीड़ घनत्व की निगरानी करता है और संदिग्ध गतिविधियों को वास्तविक समय में चिन्हित करता है।

- यात्री सहायता: अंग्रेज़ी, हिंदी और तेलुगु में घोषणाएँ करता है, यात्रियों को आपातकालीन या भीड़भाड़ के समय मार्गदर्शन देता है।

- सुरक्षा एकीकरण: सीधे RPF कंट्रोल रूम से जुड़ता है, जिससे तुरंत अलर्ट और समन्वित प्रतिक्रिया संभव होती है।

- प्रतीकात्मक उपस्थिति: सलामी देने वाले ह्यूमनॉइड डिज़ाइन से अधिकार का भाव और यात्रियों को आश्वासन मिलता है।

- स्वच्छता एवं सुरक्षा निगरानी: स्टेशन की स्वच्छता, अनुपालन और सुरक्षा मानकों पर नज़र रखता है।

- भीड़ प्रबंधन: व्यस्त समय में यात्री प्रवाह को नियंत्रित करने में मदद करता है, भीड़भाड़ के जोखिम को कम करता है।

- तकनीकी समन्वय: एआई, IoT और विज़न एनालिटिक्स को मिलाकर मानव अधिकारियों की क्षमता को थकान रहित विस्तार देता है।

**ASC अर्जुन की कहानी**

- उत्पत्ति: RPF वॉल्टेयर डिवीजन, ईस्ट कोस्ट रेलवे द्वारा आधुनिकीकरण और स्मार्ट-स्टेशन पहल के हिस्से के रूप में परिकल्पित।

- विकास: वरिष्ठ मंडल सुरक्षा कमांडेंट ए.के. दुबे के नेतृत्व में समर्पित टीम ने एक वर्ष से अधिक समय तक कार्य कर, इसे पूरी तरह विशाखापट्टनम में स्वदेशी संसाधनों से बनाया।

- प्रेरणा: "अर्जुन" नाम महाभारत के महान योद्धा से लिया गया है, जो सतर्कता, सटीकता और सुरक्षा का प्रतीक है।

- प्रक्षेपण: जनवरी 2026 में विशाखापट्टनम रेलवे स्टेशन पर RPF महानिरीक्षक आलोक बोहरा और मंडल रेल प्रबंधक श्री ललित बोहरा द्वारा आधिकारिक रूप से अनावरण किया गया।

**महत्त्व क्यों है**

- सुरक्षा सुदृढ़ीकरण: भीड़भाड़ वाले स्टेशनों पर निगरानी को बेहतर बनाता है जहाँ केवल मानव निगरानी पर्याप्त नहीं होती।

- यात्री विश्वास: इसकी ह्यूमनॉइड उपस्थिति यात्रियों को आश्वस्त करती है और आधुनिक पुलिसिंग का प्रतीक है।

- स्वदेशी नवाचार: एआई और रोबोटिक्स में भारत की बढ़ती क्षमता को दर्शाता है।

- वैश्विक संदर्भ: भारत को उन देशों के साथ जोड़ता है जो रोबोटिक पुलिसिंग की खोज कर रहे हैं, और जवाबदेही, नैतिकता तथा मानव-एआई सहयोग पर महत्वपूर्ण बहस को जन्म देता है।

# राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर दिया लोकतांत्रिक चेतना का संदेश, विद्यार्थी व बीएलओ हुए सम्मानित





- एडीसी ने दिलाई मतदाता शपथ, मतदान को बताया लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत
- झज्जर में 16 वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

**झज्जर, 25 जनवरी।** लोकतंत्र की मजबूती तभी सुनिश्चित हो सकती है जब प्रत्येक मतदाता अपने मताधिकार का निर्भीक, निष्पक्ष एवं जिम्मेदारीपूर्वक प्रयोग करे। यह विचार अतिरिक्त उपायुक्त जगनिवास ने 16वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर लघु सचिवालय स्थित कॉन्फ्रेंस रूम में आयोजित जिला स्तरीय कार्यक्रम को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

एडीसी जगनिवास ने कहा कि भारत का लोकतंत्र इसलिए विशिष्ट है क्योंकि यहां 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने वाले प्रत्येक नागरिक को मतदान का संवैधानिक अधिकार प्राप्त है। उन्होंने बताया कि आज प्रत्येक नागरिक को समान मताधिकार मिला है और इसके सक्रिय उपयोग से ही लोकतंत्र सशक्त बनता है।

एडीसी ने विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को संबोधित करते हुए कहा कि चुनाव लोकतंत्र की आधारशिला हैं, जिनके माध्यम से सामाजिक समरसता, सहभागिता एवं विकास को गति मिलती है। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे स्वयं जागरूक मतदाता बनें और समाज में मतदान के प्रति सकारात्मक वातावरण तैयार करने में सक्रिय भूमिका निभाएं।

इस बीच एडीसी ने उपस्थित अधिकारियों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों एवं नागरिकों को मतदाता जागरूकता की शपथ दिलाई तथा सभी से लोकतंत्र को सुदृढ़ बनाने में सक्रिय सहभागिता निभाने का आह्वान किया।

इस दौरान जिला निर्वाचन कार्यालय द्वारा आयोजित मतदाता जागरूकता गतिविधियों के अंतर्गत पेंटिंग, भाषण, रंगोली एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। इसके साथ ही निर्वाचन प्रक्रिया के दौरान मतदाता जागरूकता में सराहनीय योगदान देने वाले बीएलओ को भी जिला प्रशासन की ओर से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के दौरान मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार का रिकॉर्डेड संदेश प्रदर्शित किया गया, जिसमें भारतीय चुनाव प्रणाली की पारदर्शिता, निष्पक्षता एवं विश्वसनीयता को रेखांकित करते हुए मतदाताओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला गया।

इस अवसर पर नायब तहसीलदार (इलेक्शन) कुलदीप, जनसंपर्क विभाग के कार्यालय अधीक्षक धर्मवीर सिंह गुलिया, बीएलओ सुरेश कुमार, मीनू लोहचाब, नरेश कुमार, राजेश कुमार, सुनीता देवी सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

# बैरागी समाज की भूमिका से तीसरी बार बनी भाजपा सरकार -डॉ. अरविंद शर्मा





परिवहन विशेष न्यूज

**झज्जर, 25 जनवरी।** हरियाणा के सहकारिता, जेल और पर्यटन मंत्री डॉ. अरविंद कुमार शर्मा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने प्रदेश में ऐतिहासिक विकास कार्य किए हैं और यह ठोक-बजाकर कहा जा सकता है कि तीसरी बार सरकार बनने तथा नायब सिंह सैनी के मुख्यमंत्री बनने में बैरागी समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

वे रविवार को झज्जर में बैरागी समाज द्वारा आयोजित जिला स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में पहुंचने पर समाज के लोगों ने उनका स्वागत किया और मांग पत्र सौंपा।

कैबिनेट मंत्री डॉ. शर्मा ने कहा कि अब यह सरकार केवल भाजपा की नहीं, बल्कि समाज के हर वर्ग की साझेदारी वाली सरकार है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के जन्मदिवस के अवसर पर पूरे हरियाणा में यज्ञ, हवन, रक्तदान शिविर, फल वितरण एवं सेवा कार्य किए जा रहे हैं। झज्जर में आयोजित रक्तदान शिविर में 100 से अधिक युवाओं द्वारा रक्तदान किया जाना समाज की सेवा भावना का परिचायक है। इस बीच उन्होंने केक काटकर मुख्यमंत्री का जन्मदिन मनाया। उन्होंने मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी की दीर्घायु और उत्तम स्वास्थ्य की कामना की।

डॉ. शर्मा ने शिक्षा के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि किसी भी समाज की मजबूती उसके शिक्षित बच्चों से आती है। उन्होंने अभिभावकों से आग्रह किया कि लडक़े-लड़कियों दोनों की शिक्षा पर समान ध्यान दें और नई शिक्षा नीति के तहत बच्चों की रुचि के अनुसार उन्हें आगे बढऩे के अवसर दें। उन्होंने समाज के होनहार विद्यार्थियों और सफल अधिकारियों की सराहना करते हुए उन्हें प्रेरणास्रोत बताया।

बैरागी समाज की धर्मशाला में जमीन उपलब्ध होने पर करेंगे सहयोग

बैरागी समाज द्वारा प्रस्तुत की गई मांगों का जिक्र करते हुए कैबिनेट मंत्री डॉ. अरविंद शर्मा ने कहा कि झज्जर शहर में बैरागी समाज के लिए धर्मशाला निर्माण हेतु लगभग दो हजार वर्ग गज भूमि उपलब्ध कराना पूरी तरह जायज मांग है। उन्होंने जिला प्रशासन, उपायुक्त और संबंधित विभागों को निर्देश देने की बात कही कि उपलब्ध भूमि चिन्हित कर समाज को आवेदन प्रक्रिया में पूरा सहयोग दिया जाए। उन्होंने आश्वासन दिया कि भूमि उपलब्ध होते आर्थिक सहयोग किया जाएगा।

इसके साथ ही वीर बंदा बैरागी की स्मृति में एक चौक का नामकरण किए जाने की मांग पर भी सहमति जताई। नगर परिषद स्तर पर प्रस्ताव लाकर इसे शीघ्र पूरा करने का भरोसा दिलाया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रदेशाध्यक्ष शिव कुमार बैरागी ने कहा कि बैरागी समाज सदैव राष्ट्र निर्माण और सामाजिक समरसता में अग्रणी रहा है। उन्होंने सरकार द्वारा समाज की मांगों पर सकारात्मक निर्णय लिए जाने के लिए मंत्री का आभार जताया और समाज से शिक्षा, संगठन और एकता के माध्यम से आगे बढ़ने का आह्वान किया।

इस अवसर पर बैरागी समाज प्रदेश अध्यक्ष शिव पवार, बैरागी समाज के जिलाध्यक्ष कुलदीप सिंह, भाजपा जिलाध्यक्ष विकास वाल्मिकी, नगर परिषद के चेयरमैन जिले सिंह सैनी, नगर पार्षद मिथुन शर्मा, मुकुल कौशिक, तवीन, केशव सिंगल, बैरागी समाज के 22 जिलों के जिला अध्यक्ष, बैरागी समाज जिला कार्यकारिणी के सदस्य, सेवानिवृत्त डीएसपी बसंत स्वामी, भूप सिंह स्वामी, सहित बैरागी समाज के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

## गणतंत्र दिवस के मद्देनजर जिले में ड्रोन व ग्लाइडर उड़ाने पर प्रतिबंध

**झज्जर,25 जनवरी।** जिला में 77 वें गणतंत्र दिवस के मद्देनजर जिलाधीश स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने भारतीय नागरिक संहिता 2023 की धारा 163 के तहत प्रदत्त शक्तियों का इस्तेमाल करते हुए सुरक्षा के दृष्टिगत जिले में ड्रोन व ग्लाईडर आदि उड़ाने पर प्रतिबंध लगाया गया है। जिलाधीश द्वारा जारी आदेशों के 26 जनवरी की मध्य रात्रि तक किसी भी प्रकार के ड्रोन, ग्लाइडर, उड़ाने पर पूर्णतः प्रतिबंधित लगाया गया है। उन्होंने बताया कि सुरक्षा व्यवस्था के दृष्टिगत ड्रोन, ग्लाईडर आदि उड़ाकर किसी भी प्रक्रिया की अप्रिय घटना को अंजाम देने की आशंका के मद्देनजर धारा 163 लागू की गई है।

## एम एस मेकओवर ब्यूटी पार्लर की सुप्रिया गुप्ता ने धूमधाम से मनाया "सरस्वती पूजा"

**देवघर।** स्थानीय जलसार रोड स्थित एम एस मेकओवर ब्युटी पार्लर की सुप्रिया गुप्ता द्वारा पूरे उत्साह, भक्ति, श्रध्दा, व हर्षोल्लास के साथ सरस्वती पूजा मनाया गया। पंडित द्वारा विधिवत पूजा व आरती की गई। प्रसाद व खीर का भोग लगाया गया। गाजे-बाजे के साथ भजन की गई। माँ शारदे को फूलों एवं लाईटों से आकर्षक व भव्य रूप से सजाया गया। आगन्तुकों को प्रसाद वितरण किया गया। मौके पर भारतीय वैश्य महासभा के जिला अध्यक्ष श्री प्रभाष गुप्ता ने सरस्वती पूजा की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि माँ सरस्वती की कृपा से हम सबों का जीवन ज्ञान, सद्बुद्धि और सृजनात्मकता से परिपूर्ण हो। साथ ही नए सपने, और नई ऊर्जा का संचार हों।

## पंजाब कृषि विभाग द्वारा अनधिकृत ऑनलाइन कीटनाशक व्यापार पर शिकंजा, किसानों के लिए एडवाइजरी जारी

**संगरूर,25 जनवरी (जगसीर सिंह)-** राज्य के किसानों को गुणवत्तापूर्ण और असली कृषि रसायनों की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए पंजाब कृषि एवं किसान कल्याण विभाग ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए ऑनलाइन प्लेटफार्मों के माध्यम से हो रही कीटनाशकों की अनधिकृत बिक्री पर पूर्ण रोक लगा दी है। विभाग ने अंतर-राज्यीय व्यापारिक नियमों को और सख्त करते हुए स्पष्ट किया है कि नियमों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध सख्त कानूनी कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। श्री नरिंदर सिंह बेनीपाल, संयुक्त निदेशक कृषि (पौध संरक्षण) ने कहा कि हम नकली और घटिया दर्जे के कृषि उत्पादों से किसानों को बचाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। पारदर्शी मार्केट सिस्टम बनाए रखने के लिए नियमों का उल्लंघन बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। श्री बेनीपाल ने बताया कि विभाग की जांच में यह सामने आया था कि कुछ ऑनलाइन प्लेटफॉर्म डीलरों के बीच अनधिकृत व्यापारिक गतिविधियों का केंद्र बन रहे थे। विभाग के तुरंत हस्तक्षेप के बाद, इन कंपनियों ने अनधिकृत बिक्री बंद कर दी है। अब यह व्यापार केवल नियमित और विभाग द्वारा अनुमोदित चैनलों के माध्यम से ही हो सकेगा। श्री बेनीपाल ने राज्य के सभी मुख्य कृषि अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि वे डीलरों के साथ बैठकें करके कुछ नियम सख्ती से लागू करवाएं, जिसमें कोई भी डीलर राज्य से बाहर की इकाइयों के साथ बिना आधिकारिक परमिट के कीटनाशकों का लेनदेन नहीं करेगा।



# शहीद राष्ट्र की अनमोल धरोहर : डॉ. अरविंद शर्मा

## कैबिनेट मंत्री ने गांव गिजाड़ौद पहुंचकर शहीद मोहित को किया नमन, परिजनों को बंधाया ढांढस

परिवहन विशेष न्यूज



**झज्जर, 25 जनवरी।** हरियाणा के सहकारिता एवं पर्यटन मंत्री डॉ. अरविंद कुमार शर्मा रविवार को झज्जर जिले के गांव गिजाड़ौद पहुंचे और शहीद मोहित को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने शहीद के आवास पर पहुंचकर परिजनों से मुलाकात की, उन्हें ढांढस बंधाया और कहा कि शहीद राष्ट्र की अनमोल धरोहर होते हैं, जिनका बलिदान कभी भुलाया नहीं जा सकता।

डॉ. अरविंद शर्मा ने कहा कि हरियाणा वीरों की भूमि है और यहां के नौजवान बचपन से ही शौर्य गाथाएं सुनकर बड़े होते हैं। वे मां भारती की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं और आवश्यकता पड़ने पर सर्वोच्च बलिदान देने से भी पीछे नहीं हटते। उन्होंने कहा कि शहादत और बलिदान से बड़ा कोई सम्मान नहीं होता। यह वीर भूमि की वही परंपरा है, जिसे शहीद मोहित ने निभाया है। उनकी शहादत पर पूरे प्रदेश को हमेशा गर्व रहेगा।

कैबिनेट मंत्री ने शहीद मोहित के साथ शहीद हुए अन्य दस वीर जवानों को भी नमन किया और उनके बलिदान को राष्ट्र के लिए अमूल्य बताया। उन्होंने कहा कि देश की सुरक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर करने वाले सैनिकों का कर्ज कोई भी नहीं उतार सकता।

गौरतलब है कि शहीद मोहित करीब पांच वर्ष पहले भारतीय सेना की 72 आर्म्ड कोर में भर्ती हुए थे। शहादत के समय वे चार राष्ट्रीय राइफल्स में जम्मू-कश्मीर में तैनात थे। तीन दिन पहले सेना का एक वाहन गहरी खाई में फिसल गया था, इस हादसे में भारतीय सेना के दस बहादुर जवान शहीद हो गए थे।

डॉ. अरविंद शर्मा ने शहीद मोहित की धर्मपत्नी अंजलि, पिता सतपाल सिंह चौहान, माता रेखा देवी और छोटे भाई जितेंद्र को सांत्वना दी। उन्होंने कहा कि इस दुख की घड़ी में सरकार और प्रशासन पूरी मजबूती से शहीद परिवार के साथ खड़े हैं। उन्होंने परिजनों को हर संभव मदद का भरोसा दिया।

इस अवसर पर गांव के सरपंच नरेश कुमार, पार्षद मिथुन शर्मा, मुकुल कौशिक, परमजीत भारद्वाज, विपिन स्वामी और राकेश भारद्वाज सहित अनेक गणमान्य लोगों ने शहीद मोहित को श्रद्धांजलि अर्पित की।

# 77 वां गणतंत्र दिवस समारोह आज, सभी तैयारियां पूरी : डीसी

- जिला स्तरीय समारोह में हरियाणा के खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले राज्य मंत्री राजेश नागर फहराएंगे राष्ट्रीय ध्वज
- जिला व उपमंडल स्तर पर हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा गणतंत्र दिवस



परिवहन विशेष न्यूज

**झज्जर, 25 जनवरी।** राष्ट्रीय पर्व 77 वां गणतंत्र दिवस जिला मुख्यालय झज्जर सहित बहादुरगढ़, बेरी और बादली उपमंडलों में पूरे उत्साह, उल्लास और गरिमामय ढंग से मनाया जाएगा। गणतंत्र दिवस समारोह को लेकर प्रशासन द्वारा सभी आवश्यक तैयारियां की गई हैं।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि 26 जनवरी को रोडवेज वर्कशॉप परिसर में आयोजित होने वाले जिला स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह में हरियाणा के खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले राज्य मंत्री राजेश नागर मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय ध्वज फहराकर परेड की सलामी लेंगे।

उन्होंने बताया कि बहादुरगढ़ स्थित डॉ भीमराव अंबेडकर खेल स्टेडियम में आयोजित उपमंडल स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह में बहादुरगढ़ के विधायक राजेश जून, उपमंडल बेरी खेल स्टेडियम में आयोजित समारोह में रोहतक के मेयर राम अवतार वाल्मिकी तथा बादली में चौधरी धीरपाल सिंह राजकीय कालेज बादली में आयोजित कार्यक्रम में राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा राष्ट्रीय ध्वज फहराएंगे और मार्च-पास्ट की सलामी लेंगे।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान विभिन्न विभागों के कर्मचारी, स्कूलों एवं कॉलेजों के छात्र-छात्राएं देशभक्ति से ओत-प्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रमों की आकर्षक प्रस्तुतियां देंगे। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को कार्यक्रम की सभी व्यवस्थाएं समयबद्ध और सुव्यवस्थित ढंग से पूर्ण करने के निर्देश दिए। डीसी ने झज्जर, बेरी, बादली, बहादुरगढ़ क्षेत्र वासियों से समारोह में सक्रिय भागीदारी का आह्वान किया है।

## तिंरगा

चलों तिंरगा लेकर चलते, देखो शुभ दिन आया।
गाँव गली में फहरा झंडा, खुशी पर्व का लाया।।
बिजली गरजे बरखा आई ,है बादल का घेरा।
जग में प्यारा सबसे न्यारा, सजे तिंरगा मेरा।।

मंगल पांडे लड़े वतन पर, खाई तन पर गोली ।
मातृभूमि पर मरने वाला, खेला खूनी होली।।
याद जहां करता है देखो, नाम चलेगा तेरा।
जग में प्यारा सबसे न्यारा,सजे तिंरगा मेरा।।

प्राण दिया वीरों ने रण में, आजादी मिल पाई।
भगे फिरंगी जान बचाकर, खुशी मुल्क में आई।।
याद शहादत सदा रहेगी, नाम रहेगा तेरा।
जग में प्यारा सबसे न्यारा, सजे तिंरगा मेरा।।

लड़े देश खातिर दुश्मन से, मार खदेड़ भगाया।
जीत गया भारत ही मेरा, नव अरमान जगाया।।
बढ़ती ताकत जग में देखो, है खुशियों का डेरा।
जग में प्यारा सबसे न्यारा, सजे तिंरगा मेरा।।

**शैलेन्द्र पयासी, साहित्यकार**

# डॉ. अमृता अमृत द्वारा लिखित पुस्तक "मन के रोशनदान" का लोकार्पण समारोह हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

**दिल्ली।** मालवीय स्मृति भवन में डॉ. अमृता अमृत द्वारा लिखित काव्य संग्रह "मन के रोशनदान" के लोकार्पण समारोह बड़े ही हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें देश के विभिन्न प्रांतों से आए हुए कई बड़े साहित्यकारों ने भाग लिया।

विवेक कवीश्वर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए इस लोकार्पण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में एडमिरल डॉ. खुर्रम नूर उपस्थित रहे।और विशिष्ट अतिथियों के रूप में ओम प्रकाश प्रजापति, आलोक अविरल, डॉ. प्रीता पंवार, त्रिलोक कौशिक, नरेंद्र शर्मा ?खामोश? ने मंच को गौरव प्रदान किया।

यह कार्यक्रम साहित्य प्रेमियों के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव बन गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन पूनम मल्होत्रा ने बहुत ही सुंदर और रोचक तरीक़े से किया।

पुस्तक की समीक्षा डॉ. प्रीता पंवार, ओम प्रकाश प्रजापति, त्रिलोक कौशिक और आलोक अविरल ने बहुत ही सुंदर तरीक़े से की। उन्होंने प्रत्येक कविता की बारीकियों पर प्रकाश डाला। समीक्षकों द्वारा की गई समीक्षा बहुत ही उत्तम और सार्थक रही। पुस्तक की लेखिका और कार्यक्रम की संयोजिका डॉ. अमृता अमृत ने कहा कि बहुत ख़राब मौसम और भारी बारिश के दौरान इतना सुंदर कार्यक्रम संभव ही नहीं था।लेकिन साहित्य प्रेमियों ने अपने हौसलों से और मौसम की परवाह किए बिना कार्यक्रम को सफलता की ऊंचाईयों तक पहुँचाया। ऐसे साहित्यकारों को नमन है।

इस अवसर पर आचार्य निर्मल, एन.सी. खंडेलवाल, ललित कुमार, पवन मल्होत्रा, गोल्डी गीतकार, सुरेंद्र सिफर, हेमंत अग्रवाल, विकास मिश्रा, हिमांशु शुक्ला, मुल्कराज आकाश, शिवम् झा, संजीव नादान, रुचिका राना, कंचन, नीलम बावरा मन, रामा त्यागी, डॉ. लीज़ा ख़ान, रमा गुरु, मंजु कुशवाहा, शुभ्रा पालीवाल, रक्षा सिन्हा, प्रेरणा सिंह, रितु रस्तोगी, कुलदीप कौर एवं नेहा जैन सहित अनेक ख्याति प्राप्त रचनाकारों ने श्रोताओं को हास्य, श्रृंगार, वीर और करुण रस की रचनाओं से अभिभूत कर दिय।

## मेरे वीर सिपाही

अये, क्या कहूँ मेरे वीर सिपाही!
आप शोर नहीं, सन्नाटा हो,
आप पहचान नहीं, भारत की परछाईं
हो।
आप आर्मी नहीं, एक मिशन हो,
आप आवाज नहीं, एक संकल्प हो।
हे मेरे वीर जवानों!
तेरी आँखों में
न अंधेरी रात का खौफ,
न मौत का कोई डर।
तुमने तो खुशियों के दीये जलाए हैं
हर-हर घर।
तेरे सीने में जलती है
देशभक्ति की ज्वाला
तेरे तेज से हो जाते हैं
दुश्मन के इरादे काले।
भारत माँ की आन-बान-शान की
खातिर
खाए हैं तुमने
हज़ारों गोलियाँ अपने सीने में।
आपके ये बलिदान अमर रहें
हर भारतीय के सीने में।
आज जो आज़ादी
हमारी साँसों में बसी है,
वो आपके रक्त में बहती
देशभक्ति की कहानी है।
हर भारतीय की
मुँह-जुबानी है—
अये भारत के वीर योद्धा,
तेरी वजह से ही
ये जिंदगानी है।
अये मेरे वीर क्रांतिकारी,
शहीद-ए-आज़म,
देश के अमर जवान!
क्या-क्या कहूँ तुम्हें—
रणबांकुरे हो तुम,
तुम ही हो देश की
गौरव और शान।
सत-सत नमन
आपके शौर्य को,
आपके बलिदान को।
भारत माँ की पावन भूमि के
हर कण-कण में
आप अमर हो,
अमर हैं
और अमर रहेंगे।
हर भारतीय के दिल में—
जय हिन्द
जय भारत
जय भारतीय सेना

**अदिती कुशवाहा**
**बैकुंठपुर (कोरिया), छत्तीसगढ़**

# भारतीय गणतंत्र की आधारशिला महिलाएं

प्रमोद दीक्षित मलय

गणतंत्र भारत के निवासी होने के कारण हमें कर्म और अभिव्यक्ति की आजादी प्राप्त है पर इस आजादी के लिए हमारे पुरखों ने मूल्य चुकाया है। अंग्रेजों के विरुद्ध आजादी की लड़ाई में पुरुषों के साथ ही महिलाओं ने भी सक्रिय भाग लिया और स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहुति दी थी। यह उनके देश प्रेम का परिचायक तो था ही, साथ ही उनकी सामाजिक-राजनीतिक चेतना का प्रखर स्वर भी था। भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास के गगन में अनेक महिलाओं के नाम देदीप्यमान हैं। आजाद हिन्द फौज की महिला पल्टन की सशस्त्र वीरांगनाएं हों, क्रान्किारियों की सतत सहायता करने वाली वीर बालाएँ हों या फिर राजनीति के माध्यम से समाज जागरण का शंखनाद करने का महत्वपूर्ण काम, वे हर कहीं सफल रही हैं और अपनी छाप छोड़ी हैं। अपने शौर्य, मेधा, कर्मठता और चातुर्य से भारतीय गणतंत्र के निर्माण में महिलाओं का योगदान वरेण्य है।

'मैं कित्तूर नहीं दूँगी' का उद्घोष करने वाली कित्तूर की रानी चेन्नम्मा का नाम बड़े आदर और सम्मान से लिया जाता है। कर्नाटक के कित्तूर में सन् 1778 ई. में जन्मी चेन्नम्मा ने बचपन से युद्ध संचालन सीखा था। संस्कृत, मराठी और कन्नड में पारंगत चेन्नम्मा का विवाह दक्षिण भारत के समृद्ध राज्य कित्तूर के राजा मल्लसर्ज के साथ हुआ। राजा निःसंतान स्वर्ग सिधार गये। अंग्रेजों ने राज्य को हड़पने के लिए रानी को राज्य छोड़कर जाने का आदेश दिया। रानी नहीं मानीं। फलतः सितम्बर 1824 ई. में धारवाड़ के कलेक्टर थैकरे ने 500 सिपाहियों के साथ किले को घेर लिया। भयंकर युद्ध में रानी पकड़ी गईं और जेल में डाल भीषण यातनाएं दी गईं और वहीं 21 फरवरी, 1825 ई. को रानी के प्राण-पखेरू उड़ गये। वाराणसी में 19.11.1835 को जन्मी मनु को एक दिन इतिहास रानी लक्ष्मीबाई के रूप में याद रखेगा, यह कौन जानता था। झाँसी के राजा गंगाधर राव से विवाह हुआ पर वह लक्ष्मीबाई को निःसंतान अकेला छोडकर चल बसे।

1854 ई. को अंग्रेज अधिकारियों के रानी को झाँसी छोड़ देने का हुक्म के जवाब में रानी ने दृढता से कहा, ''मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।'' अंग्रेजों को तो बहाना चाहिए था। युद्ध प्रारम्भ हुआ। रानी बड़ी वीरता से लड़ रहीं थीं लेकिन एक सैनिक द्वारा



लालचवश किले का द्वार खोल देने के कारण रानी को किला छोड़ना पड़ा। अंग्रेजी सेना ने रानी का पीछा किया। कालपी और ग्वालियर में आमने-सामने भयंकर युद्ध हुआ। घायल रानी अपने दत्तक पुत्र को पीठ पर बाँधे, घोड़े की लगाम मुँह में पकड़े, दोनों हाथों से तलवार चलाती अंग्रेज सैनिकों को मारती-चीरती रास्ता बनाती आगे बढ़ती जा रही थीं। घायल अवस्था में बाबा गंगादास की कुटी में आश्रय लिया और वहीं प्राण निकल गये। वह कुटी रानी की अन्त्येष्टि की समिधा बन जलकर देशप्रेमियों के लिए पावन हो गई। रानी लक्ष्मीबाई की हमशक्ल 1830 ई. में जन्मी झलकारी का विवाह रानी लक्ष्मीबाई के तोपची पूरन सिंह के साथ हुआ था। प्रारम्भिक जीवन जंगल में बीता, इस कारण धीरता, वीरता और चपलता के गुण उसे प्रकृति के सान्निध्य में ही मिल गये थे। रानी जब अंग्रेजों द्वारा किले में घेर ली गई तो झलकारी बाई रानी के वस्त्र धारण कर युद्धक्षेत्र में उतर गईं और रानी सुरक्षित निकल गईं। कालपी और ग्वालियर में युद्ध कर अंग्रेजी सेना को रोकने की भरपूर कोशिश की और राष्ट्र रक्षा के लिए अपने प्राण उत्सर्ग कर दिये। लक्ष्मीबाई की महिला सेना की कमांडर जूही तोपखाना सँभालती रहीं और रानी के साथ ही किले से बाहर निकलीं। अन्त तक उनके साथ रहकर अंग्रेजों को आगे बढ़ने न दिया। इसी तरह रानी के व्यक्तिगत रक्षादल की कमांडर मुन्दर ने रानी के साथ ही प्राण त्यागे और उसका भी गंगादास की कुटी में अंतिम संस्कार हुआ।

अवंतिका बाई लोधी मांडला क्षेत्र के रामगढ राज्य के अंतिम राजा लक्ष्मण सिंह की रानी थीं। राजा की मृत्यु के बाद पुत्र विक्रमजीत राजकाज न चला सका। अंग्रेज कमिश्नर ने रानी को पत्र लिखा कि कलेक्टर से मिलकर सरकार से संधि कर पेंशन लेकर राज्य सौप दें अन्यथा परिणाम भुगतें। रानी के स्वाभिमान को यह स्वीकार न था फलतः अप्रैल 1858 ई. में अंग्रेजी सेना के साथ भयंकर युद्ध हुआ। रानी ने स्वयं युद्ध किया पर अपनी हार को देखते हुए रानी ने जंगलों की शरण ली और वहीं से गुरिल्ला युद्ध करती रहीं। नाना साहब की 12 वर्षीय बेटी मैना की चर्चा किए बिना वीरांगनाओं की यह मलिका अधूरी ही रहेगी। नाना साहब को पकड़ने बिठूर गई अंग्रेजी सेना नाना जी को ना पाकर गुस्से में बिठूर के किले को ध्वस्त कर दिया और आग लगा दी। इसी बीच उनकी बेटी मैना हाथ लग गई। उससे नाना साहब का पता ठिकाना पूछने पर मैना ने कहा कि उसे नहीं मालम और मालूम भी होता तो उन्हें नहीं बताती। इतना सुनकर अंग्रेज अधिकारी भड़क गया और मैना को भभकती आग में उछाल दिया, देखते ही देखते वह वीर कन्या आग की धधकती लपटों में समा गई। धन्य है भारत की वह बेटी। अवध के नवाब वाजिद अली शाह की बेगम हजरत महल का नाम भी भारत की आजादी की लड़ाई में भाग लेने वाली महिलाओं की अग्र पंक्ति में शुमार किया जाता है। अंग्रेजों से युद्ध कर नाको चने चबवा दिए और अन्त में नेपाल चलीं गईं।

एक समृद्ध बंगाली परिवार में जन्मी अरुणा आसफ अली ने नमक आन्दोलन से राष्ट्रीय राजनीति में भागीदारी प्रारम्भ की। गैर कानूनी रूप से नमक बनाने पर कैद कर लिया गया और एक साल की सजा हुई। जेल से छूटने के बाद भी राजनीति में सक्रिय रहीं। 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' आन्दोलन में भाग लिया। फलतः आपकी सम्पूर्ण सम्पत्ति जब्त कर ली गई। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पत्रिका 'इन्कलाब' का सम्पादन किया। हैदराबाद में 1879 ई. में जन्मी सरोजिनी नायडू की क्षमता को पहचान गोपाल कृष्ण गोखले ने इन्हें राष्ट्रीय राजनीति में आने का न्योता दिया। सरोजिनी पहली बार गाँधी से 1914 में लंदन में मिलीं। यह उनके साथ अफ्रीका भी गईं और समाज संगठन के गुर सीखे। 1925 के कांग्रेस के कानपुर अधिवेशन की अध्यक्ष चुनीं गईं। गोलमेज सम्मेलन मे गाँधी जी के साथ लंदन गईं और भारत का जोरदार पक्ष रखा। देश की आजादी के बाद आपको उत्तर प्रदेश का राज्यपाल बनाया गया। भारत सरकार ने आपके जन्मदिन के अवसर पर 13.2.1964 को 15 पैसे का डाक टिकट जारी किया। मैडम भीकाजी कामा, कस्तूरबा गाँधी, दुर्गा भाभी, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, विजयलक्ष्मी पंडित, लक्ष्मी मेनन, हंसाबेन मेहता, ऊदा देवी सदृश सहस्रों महिलाओं ने एक गणराज्य भारत बनाने के लिए अप्रतिम योगदान दिया है। महिलाओं के महान त्याग और बलिदान के आदर्श को हम समझें और भेदभाव रहित समाज निर्माण में अपनी भूमिका निर्वहन करें तभी उनका महनीय अवदान सार्थक हो सकेगा।

# संवैधानिक मूल्यः गणतंत्र की आत्मा और नागरिक दायित्व

बाबूलाल नागा

भारतीय संविधान केवल शासन चलाने का दस्तावेज नहीं, बल्कि एक जीवंत दर्शन है जो देश की आत्मा, उसकी चेतना और दिशा—तीनों को परिभाषित करता है। संविधान की उद्देशिका में निहित स्वतंत्रता, समता, समानता, बंधुता, संप्रभुता, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र जैसे मूल्य पूरे संविधान की वैचारिक रीढ़ हैं। ये मूल्य "हम भारत के लोग" द्वारा स्वयं को दी गई वह सामूहिक प्रतिबद्धता हैं जो प्रत्येक नागरिक को अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों का भी निरंतर स्मरण कराती है। संविधान का सच्चा सम्मान केवल औपचारिक आयोजनों से नहीं, बल्कि इन मूल्यों को अपने व्यवहार और सार्वजनिक जीवन में उतारने से होता है।

भारत 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस की 77वीं वर्षगांठ मना रहा है। 26 नवंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा भारतीय संविधान को अंगीकार किया गया और 26 जनवरी 1950 को इसे देश की शासन व्यवस्था के रूप में लागू किया गया। यह वही ऐतिहासिक क्षण था, जब भारत औपनिवेशिक शासन की छाया से बाहर निकलकर एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में विश्व पटल पर स्थापित हुआ। गणतंत्र दिवस केवल अतीत का स्मरण नहीं, बल्कि वर्तमान का आत्मावलोकन और भविष्य का संकल्प भी है।

संविधान की प्रस्तावना में निहित मूल्य हमारे दैनिक जीवन से गहराई से जुड़े हुए हैं। ये हमें बताते हैं कि नागरिक होना केवल अधिकारों का उपभोग करना नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करना भी है। समानता और न्याय जैसे मूल्य समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक अवसर और सम्मान पहुंचाने की संवैधानिक भावना को सुदृढ़ करते हैं। लोकतंत्र की सार्थकता इसी में है कि सत्ता का केंद्र केवल संस्थाएं नहीं, बल्कि जागरूक नागरिक हों।

भारतीय संविधान व्यक्तिगत स्वतंत्रता का संरक्षण करता है—विचार, अभिव्यक्ति, आस्था और गरिमापूर्ण जीवन की स्वतंत्रता। यह स्वतंत्रता नागरिकों को अपनी पहचान के साथ जीने का अधिकार देती है, लेकिन साथ ही यह भी अपेक्षा करती है कि स्वतंत्रता अनुशासन और संवैधानिक मर्यादाओं के भीतर रहे। अधिकार और कर्तव्य के इसी संतुलन में लोकतंत्र की स्थायित्व और विश्वसनीयता निहित है।

संविधान राष्ट्रीय एकता और अखंडता का भी मजबूत आधार प्रस्तुत करता है। भारत विविधताओं का देश है—यहां अनेक धर्म, भाषाएं, संस्कृतियां और परंपराएं सह अस्तित्व में हैं। यही विविधता सदियों से भारत की पहचान और शक्ति रही है। बंधुता का संवैधानिक मूल्य हमें यह सिखाता है कि भिन्नताओं के बावजूद हम एक साझा राष्ट्रीय चेतना से जुड़े हैं और परस्पर सम्मान ही राष्ट्र को मजबूती देता है।

संविधान निर्माताओं ने सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक न्याय की स्थापना का स्वप्न देखा था। यह स्वप्न तब तक पूर्ण नहीं हो सकता, जब तक नागरिक स्वयं इसके लिए सजग, जागरूक और सक्रिय न हों। अन्याय, भेदभाव और असमानता के विरुद्ध आवाज़ उठाना केवल नैतिक साहस नहीं, बल्कि एक संवैधानिक दायित्व भी है। लोकतंत्र तब कमजोर पड़ता है, जब नागरिक मौन दर्शक बन जाते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति में कोई न कोई प्रतिभा, अनुभव या क्षमता होती है। यदि उसका उपयोग समाज के हित में किया जाए तो सामाजिक परिवर्तन की गति स्वतः तेज हो सकती है। जब समाज सशक्त होगा, तभी राष्ट्र सशक्त बनेगा। यह परिवर्तन केवल नीतियों या कानूनों से नहीं, बल्कि नागरिकों की सोच, व्यवहार और सहभागिता से संभव है।

आज के समय में राष्ट्रीय एकता, शांति, सद्भाव और आपसी विश्वास की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। संवाद की जगह टकराव और सहमति की जगह विभाजन समाज को कमजोर करता है। प्रेम, मेलजोल और आपसी समझ से ही लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होती हैं। हमारे महामानवों ने जिस भारत की परिकल्पना की थी—जहां न्याय, स्वतंत्रता, समता और बंधुता का संतुलन हो—हमें उसी वैचारिक दिशा में निरंतर आगे बढ़ना होगा।

इसके लिए ऐसे सामाजिक और सांस्कृतिक प्रयासों की आवश्यकता है, जो विभिन्न समुदायों को एक-दूसरे के करीब लाएं। सभी धर्मों और संस्कृतियों का सम्मान करना भारतीयता की मूल पहचान है। साथ ही यह भी आवश्यक है कि हम अपने संविधान को पढ़ें, समझें और उसके मूल्यों को अपने व्यवहार में उतारें। संविधान मानवतावादी है—समानता, गरिमा और न्याय का संरक्षक।

गणतंत्र दिवस का अर्थ केवल परेड, भाषण या तिरंगा फहराने तक सीमित नहीं है। इसका वास्तविक अर्थ है—संविधान को अपने जीवन में जीना। जब तक संवैधानिक मूल्य केवल पुस्तकों और औपचारिक समारोहों तक सीमित रहेंगे, तब तक लोकतंत्र अधूरा रहेगा। सच्चा गणतंत्र वही है, जहां नागरिक अन्याय के विरुद्ध खड़ा हो, भिन्नताओं का सम्मान करे और समाज के कमजोर वर्ग के साथ खड़ा दिखाई दे। डॉ. भीमराव आंबेडकर द्वारा देखे गए भारत का सपना तभी साकार होगा, जब प्रत्येक नागरिक यह समझे कि संविधान केवल शासन का आधार नहीं, बल्कि हमारी साझा नैतिक जिम्मेदारी है। यही गणतंत्र दिवस का वास्तविक संदेश और सबसे बड़ा संकल्प होना चाहिए।

**लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं**

# भारत का 77वाँ गणतंत्र दिवस : संविधान, उपलब्धियाँ और चुनौतियाँ

सुनील महला

26 जनवरी 1950 वह दिन है जब भारत का संविधान लागू हुआ था और इसी दिन भारत एक गणतंत्र राष्ट्र बना। इससे पूर्व 26 नवंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा भारतीय संविधान को अंगीकार किया गया था। इस बार अर्थात् वर्ष 2026 में भारत अपना 77वाँ गणतंत्र दिवस मनाने जा रहा है। दूसरे शब्दों में कहें तो 26 जनवरी 1950 वह ऐतिहासिक दिन था जब भारत एक संप्रभु, समाजवादी, लोकतांत्रिक एवं धर्मनिरपेक्ष गणराज्य के रूप में विश्व पटल पर स्थापित हुआ। गणतंत्र (रि-पब्लिक) का अर्थ है-एक ऐसी शासन व्यवस्था, जिसमें सत्ता का स्रोत जनता होती है और सरकार लोकतांत्रिक प्रक्रिया द्वारा चुनी जाती है। गणतंत्र में शासन का सर्वोच्च पद प्राचीनकाल की भांति किसी राजा या महाराजा के पास नहीं होता, बल्कि इसमें संविधान ही सर्वोपरि होता है। वास्तविक अर्थों में, गणतंत्र का मतलब यही है कि संविधान वह मूल कानून है, जो नागरिकों के अधिकारों और कर्तव्यों को निर्धारित करता है। सरल शब्दों में कहा जाए तो गणतंत्र वह व्यवस्था है, जहाँ जनता का शासन कानून और संविधान के माध्यम से चलता है। संविधान का अर्थ है-देश का सर्वोच्च कानून, जिसके ऊपर कोई व्यक्ति, सरकार या संस्था नहीं होती। यही कारण है कि संविधान को देश को चलाने वाली नियम-कानूनों की सर्वोच्च पुस्तक कहा जाता है।

पाठकों को जानकारी होगी कि भारतीय संविधान विश्व का सबसे बड़ा लिखित संविधान है। यह स्पष्ट करता है कि देश कैसे चलेगा, सरकार कैसे बनेगी और कैसे कार्य करेगी, नागरिकों के मूल अधिकार और कर्तव्य क्या होंगे तथा देश में न्याय, समानता और स्वतंत्रता कैसे सुनिश्चित की जाएगी। यह कहना ग़लत नहीं होगा कि जिस देश में संविधान सुरक्षित है, वहाँ लोकतंत्र भी सुरक्षित रहता है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि भारतीय संविधान के निर्माणकर्ता और संविधान की प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ. भीमराव अंबेडकर थे तथा भारतीय संविधान का मूल आधार लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, न्याय, समानता और स्वतंत्रता है।

**गणतंत्र दिवस 2026 की मुख्य थीम व उपलब्धियांः-**

इस वर्ष गणतंत्र दिवस 2026 की मुख्य थीम '150 वर्षः वंदे मातरम्' रखी गई है। अर्थात् इस बार देश के राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम्' की रचना के 150 वर्ष पूरे होने का उत्सव मनाया जा रहा है। यह थीम बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित वंदे मातरम् की 150वीं वर्षगांठ को सम्मान देती है, जो हमारे देश की संस्कृति, इतिहास और स्वतंत्रता संग्राम की भावना को अभिव्यक्त करती है। इसके अतिरिक्त वर्ष 2026 के समारोह की दूसरी महत्वपूर्ण थीम 'विकसित भारत और आत्मनिर्भर भारत' है, जिसका उद्देश्य वर्ष 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प को प्रदर्शित करना है। इस वर्ष गणतंत्र दिवस परेड की एक विशेष उपलब्धि यह है कि पहली बार यूरोपीय संघ के शीर्ष नेताओं को संयुक्त रूप से मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है। यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष एंटोनियो कोस्टा तथा यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन इस अवसर पर भारत आएंगे। यह आमंत्रण भारत-यूरोपीय संघ (ईयू) संबंधों की बढ़ती मजबूती का प्रतीक है। यूरोपीय संघ यूरोप के 27 देशों का एक आर्थिक-राजनीतिक समूह है, जो आपसी सहयोग, व्यापार, अर्थव्यवस्था, शांति, लोकतंत्र, मानवाधिकारों और सीमा-रहित यात्रा जैसे विषयों पर साझा निर्णय लेता है। गणतंत्र दिवस 2026 की एक और खास बात यह है कि भारतीय सेना पहली बार कर्तव्य पथ पर एक नया 'बैटल ऐरे फॉर्मेशन' प्रस्तुत करेगी। इसके साथ ही दर्शक दीर्घाओं के नाम अब नेताओं के बजाय भारत की प्रमुख नदियों के नाम पर रखे गए हैं, जो वीवीआईपी संस्कृति के अंत और जन-प्रधान लोकतंत्र की भावना को दर्शाता है।

**उभरती हुई अर्थव्यवस्था है भारतः-**

बहरहाल, आज भारत वैश्विक मंच पर लगातार उभरती हुई एक बड़ी शक्ति बन चुका है। वर्तमान में भारत विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। जनवरी 2026 के ताज़ा आँकड़ों के अनुसार, भारत ने नॉमिनल जीडीपी के मामले में जापान को पीछे छोड़ते हुए यह गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। भारत की अर्थव्यवस्था लगभग 4.18 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के पार पहुँच चुकी है और यह दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ने वाली बड़ी अर्थव्यवस्था बनी हुई है। क्रय शक्ति समानता (पीपीपी) के आधार पर भारत पहले से ही विश्व में तीसरे स्थान पर है। अब भारत का अगला लक्ष्य जर्मनी को पीछे छोड़कर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बनना है, जिसके 2027-28 तक साकार होने की पूरी संभावना है। यह आर्थिक प्रगति मज़बूत घरेलू उपभोग, बुनियादी ढाँचे में भारी निवेश और डिजिटल क्रांति के कारण संभव हुई है।

**गणतंत्र के समक्ष विद्यमान प्रमुख चुनौतियांः-**

हालाँकि, 76 वर्ष पूरे करने के बावजूद आज भारतीय गणतंत्र के समक्ष कई गंभीर चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। वास्तव में कोई भी गणतंत्र तभी जीवित रहता है जब उसके नागरिक जागरूक और सजग हों। यह अत्यंत चिंताजनक है कि वर्तमान समय में हमारे लोकतांत्रिक मूल्यों का क्षरण होता जा रहा है। संवाद, सहमति और असहमति की स्वस्थ परंपरा कमजोर पड़ रही है। मतभेद को देशद्रोह और आलोचना को विरोध मानने की प्रवृत्ति किसी भी लोकतंत्र के लिए घातक है। यह बहुत दुखद है आज संवैधानिक संस्थाओं की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लगाए जा रहे हैं। न्यायपालिका, विधायिका, कार्यपालिका और मीडिया जैसी संस्थाओं पर दबाव और पक्षपात के आरोप गणतंत्र की नींव को चुनौती देते हैं। धर्म, जाति, भाषा और विचारधारा के आधार पर बढ़ता सामाजिक ध्रुवीकरण राष्ट्रीय एकता और भाईचारे को कमजोर करता है। नागरिक अधिकारों और स्वतंत्रताओं पर दबाव, राजनीति का अपराधीकरण, धनबल का बढ़ता प्रभाव, मीडिया और सोशल मीडिया की चुनौतियाँ-जैसे फेक न्यूज़, ट्रोल संस्कृति और प्रोपेगैंडा भी लोकतंत्र के लिए गंभीर खतरे हैं। इसके साथ ही अमीर और गरीब के बीच बढ़ती खाई, सामाजिक न्याय की चुनौतियाँ और नागरिक कर्तव्यों-जैसे मतदान, कर भुगतान, पर्यावरण संरक्षण और संवैधानिक मर्यादा-के प्रति बढ़ती उदासीनता गणतंत्र को कमजोर करती है। आर्थिक दृष्टि से भी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। हालिया रिपोर्टों के अनुसार घरेलू बचत में कमी आई है, परिवारों की बचत घट रही है और कर्ज पर निर्भरता बढ़ी है, जो आर्थिक स्थिरता के लिए चिंता का विषय है। आवश्यकता इस बात की है कि आर्थिक असमानता कम की जाए और मध्यम वर्ग के लिए शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ और सस्ता बनाया जाए। राष्ट्रीय सुरक्षा और वैश्विक चुनौतियों की बात करें तो सीमा विवाद-विशेषकर चीन और पाकिस्तान के साथ-साइबर सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संरक्षण जैसे विषय आज गणतंत्र के सामने बड़े और अहम मुद्दे हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आज गणतंत्र को सबसे अधिक आवश्यकता संविधान के अक्षरों को ही नहीं, बल्कि उसकी आत्मा को समझने और जीने की है। सजग नागरिक, स्वतंत्र संस्थाएँ, नैतिक राजनीति और सहिष्णु समाज-इन्हीं के माध्यम से भारतीय गणतंत्र सुरक्षित रहेगा। तभी हम प्रगति और उन्नयन की दिशा में आगे बढ़ते हुए अपने भारत को वास्तव में 'सपनों का भारत' बना सकेंगे।

# तिरंगे का पांचवां रंग

पिंकी कुंडू



कक्षा में मास्टर जी ने पूछा ??
"बच्चों, बताओ तो भारत के IN राष्ट्रीय ध्वज में कितने रंग है ?"
"तीन"! सारे बच्चों के स्वर कक्षा में एक साथ गूंजा।
शोर थमने के बाद एक सहमा-सा बच्चा धीरे धीरे खड़ा होकर विनम्र स्वर में बोला,
"मास्टर जी, पांच"।
सारे बच्चे यह सुन कर हँसने लगे।
मास्टर जी अपने गुस्से को दबाने की कोशिश करते हुए बोले :
"चलिए, आप ही सबको बता दीजिए कौन कौन से पाँच रंग है हमारे तिरंगे में"?
तिरंगे के नाम सुनने के बाद भी बच्चा धीरे धीरे बोलने लगा-₹सबसे उपर केसरिया, उसके नीचे सफेद, सबसे नीचे हरा और बीच में एक चक्र जिसका रंग नीला है।"
मास्टर जी ने अपने हाथ दायें-बायें हिलाते हुए हल्के से ऊंची आवाज में पूछा-
"फिर भी तो चार ही हुआ। ये पांचवां रंग कौन सा है?"
मासूम बच्चे ने आंख झुकाए सरलता से उत्तर दिया-"वो है पूरे ध्वज में फैला हुआ लाल-लाल धब्बा, मुझे याद है मास्टर जी, जब मैंने पापा को अंतिम बार देखा था"
घर के आंगन में एक ताबूत के अंदर पापा एक वैसे ही ध्वज को ओढ़ कर सोये हुए थे।"
कक्षा का शोर अचानक थम सा गया।
मास्टर जी का गुस्सा गायब हो चुका था। गला भर आया था। कुछ बोल नहीं पा रहे थे
सिर्फ हाथ के इशारे से सबको शाँत बैठने को कह कर सर झुकाए कक्षा के बाहर निकल आए और भीगी आँखों से आसमान के तरफ़ देखते हुए सोंचने लगे-
"तिरंगे में लगे खून के उन लाल धब्बों को हम कैसे भूल सकते है?
प्रणाम, हर एक वीर जवान को जो मातृभूमि के लिए अपने घर परिवार को छोड़ देता है। अपना पूरा जीवन न्योछावर कर देता है..

**जय हिन्द जय भारत**
**जय जवान जय किसान!**

# आखिर कबतक जटिल पूर्वाग्रहों से परेशान रहेगा भारत गणतंत्र?

कमलेश पांडेय

भारत का गणतंत्र पूर्वाग्रहों जैसे जातिवाद, सांप्रदायिकता, भाषा जनित क्षेत्रवाद, वंशवाद, राजनीतिक पक्षपात और सामाजिक असमानताओं से जूझ रहा है जो संवैधानिक मूल्यों को कमजोर कर रहे हैं। खासकर गणतंत्र दिवस जैसे अवसरों पर ये मुद्दे अकसर उभरकर सामने आ जाते हैं, जहां लोकतंत्र की चुनौतियां स्पष्ट दिखती हैं। इसलिए कतिपय प्रमुख पूर्वाग्रहों पर चर्चा लाजिमी है जो इसे समदर्शी और सर्वसम्मत लोकतंत्र बनने देने की राह के सबसे बड़े रोड़े तब भी थे, आज भी हैं और अगर यही हालात बने रहे तो भविष्य में भी रहेंगे। लिहाजा प्रबुद्धजनों से लेकर आम आदमी के दिलोदिमाग में यह यक्षप्रश्न बना हुआ है कि आखिर कबतक जटिल पूर्वाग्रहों से परेशान रहेगा भारत गणतंत्र?

पिछली शताब्दी के अंतिम तीन भागों से लेकर मौजूदा शताब्दी के प्रथम भाग तक यानी पूरे सौ सालों में भारतीय शासन-प्रशासन की जो पूर्वाग्रही गतिविधियां दिखाई-सुनाई पड़ीं, उससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि भारतीय गणतंत्र को दलित-आदिवासी-पिछड़े-अल्पसंख्यक-सवर्ण कोटि के अभिजात्य वर्गों के चंगुल से बाहर निकालना बहुत मुश्किल है। खासकर धर्मनिरपेक्षता ने तो एक पाकिस्तान दे देने के बाद कई और पाकिस्तान देने की पृष्ठभूमि तैयार कर दी है। शांतिपूर्ण सनातन भूमि पर ब्रेक के बाद होते रहने वाले सांप्रदायिक दंगे भी इसी बात की चुगली करते प्रतीत होते हैं। मीडिया और सोशल मीडिया की मुहिम हमारी धर्मनिरपेक्ष सोच को खुली चुनौती देती है, लेकिन प्रशासनिक लाचारी भी जगजाहिर है, जिसे बदले बिना धर्मनिरपेक्ष पूर्वाग्रहों से मुक्ति पाना बिल्कुल कठिन है।

वहीं, भारतीय संविधान से जिन दलितों, पिछड़ों, सवर्णों और अल्पसंख्यकों ने स्थायी लाभ लिए, अब वहीं इसे वंशानुगत बनाये रखने की सियासी तिकड़म रच रहे हैं। यह संवैधानिक लाभ महादलितों, अत्यंत पिछड़े लोगों, गरीब सवर्णों और पसमांदा लोगों तक पहुंचे, इसकी राह में तरह तरह से रोड़े अटकाए जाते हैं। जिस तरह से जातिवादी आरक्षण का दुरूपयोग हो रहा है और एक बार इसका लाभ ले चुके लोग अपने बच्चों के लिए दुबारा लाभ लेने से भी नहीं हिचकिचाते हैं, जिससे जरूरतमंद लोगों तक आरक्षण का लाभ पहुंचना मुश्किल हो रहा है। आरक्षण के जातीय स्वरूप, क्रीमीलेयर मानदंडों में अव्यवहारिक तर्क और एक ही व्यक्ति को बार बार निर्वाचन क्षेत्रों में आरक्षण देने या फिर एक ही परिवार को नौकरियों में बार बार आरक्षण का लाभ देते रहने से यह पवित्र सोच भी अब कलुषित हो चुकी है। समाज के अन्य लोगों में इससे सत्ता प्रतिष्ठान के प्रति गहरा रोष देखा जाता है।

सच कहूं तो जातिवाद और सांप्रदायिकता जैसे पूर्वाग्रह समदर्शिता की राह के रोड़े बनकर भारतीय गणतंत्र की जड़ों को खोखला कर रही हैं जबकि सर्वसम्मति की जगह बहुमत वाला गणतंत्र अपने ही अल्पमत लोगों के नैसर्गिक हितों पर कुठाराघात करता प्रतीत होता है। आलम यह है कि प्रवासी मजदूरों और छात्रों तक को प्रताड़ित करने में साधन संपन्न वर्ग नहीं हिचकता और भीड़ का न्याय भी जहां तहां सम्पन्न लोगों के खिलाफ दिख जाता है। भारत में ब्रेक के बाद होने वाले जातीय या क्षेत्रीय/भाषाई दंगे इसी बात की तस्दीक करते हैं।

दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि मीडिया और राजनीतिक विमर्श में पूर्वाग्रही ध्रुवीकरण बढ़ रहा है, जो नीतिगत मुद्दों को नजरअंदाज कर भावनात्मक विभाजन पैदा करता है। जहां कांग्रेस व क्षेत्रीय दलों की तुष्टीकरण वाली धर्मनिरपेक्ष राजनीति खतरनाक है, तो आरएसएस-बीजेपी की सेक्युलरिज्म विरोधी विचारधारा से भी लोग सांसत में रहने को अभिशप्त हैं। इसलिए बेहतर होगा कि संविधान के प्रस्तावना से 'समाजवादी' और 'सेक्युलर' शब्द हटाने की पहल की जाए, क्योंकि जाति व धर्म की आड़ में इनका दुरुपयोग हो रहा है।

ऐसे में राजनीतिक विवाद स्वाभाविक बात है। आपने देखा होगा कि गणतंत्र दिवस परेड में दिल्ली के टेबलो को लगातार चौथी बार खारिज करने पर आप ने बीजेपी पर पूर्वाग्रह का आरोप लगाया, जबकि गुजरात-उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों को प्राथमिकता मिली। वहीं रक्षा मंत्रालय चयन प्रक्रिया को निष्पक्ष बताता है लेकिन विपक्ष इसे राजनीतिक प्रतिशोध मानता है। पंजाब जैसे राज्यों के टेबलो अस्वीकृति ने भी विवाद बढ़ाया।

ऐसे में संवैधानिक चुनौतियां भी स्वाभाविक हैं। आपको पता होना चाहिए कि संविधान निर्माता डॉ भीम राव अंबेडकर ने स्पष्ट चेतावनी दी थी कि सामाजिक असमानताओं पर लोकतंत्र की 'टॉप ड्रेसिंग' विफल हो जाएगी जो आज मतदाता सूची शुद्धिकरण और नागरिकता संशोधन अधिनियम से साकार हो रही है। जहां कार्यपालिका का केंद्रीयकरण विधायिका-न्यायपालिका को कमजोर कर रहा है, वहीं UAPA जैसे कानून असहमति को दबाते हैं लेकिन आपराधिक मिजाज पर अंकुश लगाते हैं।। कुलमिलाकर तमाम किंतु परन्तु के चलते देश में आर्थिक असमानता और बेरोजगारी जैसे मुद्दे गर्त में या हाशिए पर धकेल दिए गए हैं जो सार्वजनिक चिंता और लोक दुश्चिंता का सबब बना हुआ है।

देखा जाए तो भारत में राजनीतिक पूर्वाग्रहों के प्रमुख स्रोत पहचान-आधारित राजनीति, मीडिया प्रभाव, सामाजिक ध्रुवीकरण और संस्थागत दबाव आदि हैं। कमोबेश ये तमाम पूर्वाग्रह लोकतंत्र को कमजोर करते हुए विभाजनकारी विमर्श को बढ़ावा देते हैं, जिससे कहीं न कहीं समग्र राष्ट्रहित भ्रमित होता है। जहां पहचान-आधारित राजनीति यानी जाति और धर्म पर आधारित राजनीति पूर्वाग्रहों को गहरा करती है, वहीं दल विशेष इन पहचानों का उपयोग वोट बैंक के लिए करते हैं। वहीं, राम जन्मभूमि आंदोलन और नागरिकता संशोधन अधिनियम जैसे मुद्दों ने हिंदू-मुस्लिम ध्रुवीकरण बढ़ाया। कुछ लोग आरएसएस-बीजेपी जैसे संगठनों पर सांप्रदायिक पूर्वाग्रह के आरोप लगते रहे हैं, लेकिन वो कांग्रेसियों और क्षेत्रीय दलों के सांप्रदायिक तुष्टीकरण वाली सोच की निंदा करने में भी गुरेज करते हैं।

एक बात और, मीडिया और सोशल मीडिया यानी मीडिया घरानों पर सरकारी विज्ञापनों, कॉर्पोरेट हितों और राजनीतिक दबाव से पक्षपातपूर्ण कवरेज होता है। जबकि, सोशल मीडिया एल्गोरिदम फेक न्यूज और भावनात्मक फ्रेमिंग से ध्रुवीकरण तेज करते हैं। इस मामले में कांग्रेस और भाजपा एवं उनके समर्थक या विरोधी दल प्रचार दर प्रचार पर भारी खर्च कर पूर्वाग्रह फैलाते हैं। इससे संस्थागत और आर्थिक कारक तक प्रभावित होते हैं। खासकर राजनीतिक दलों का विज्ञापन और नियामक शक्ति मीडिया को प्रभावित करती है, जबकि आर्थिक मंदी सामाजिक विभाजनों को भड़काती है। इससे अभिप्रेरित कानून-व्यवस्था सम्बन्धी विफलताएं जैसे महाजंगलराज आदि पूर्वाग्रहपूर्ण राजनीति को जन्म देती हैं। इस प्रकार राजनीतिक पूर्वाग्रह मीडिया को विकृत करते हुए एकतरफा कवरेज, ध्रुवीकरण और जनमत निर्माण को प्रभावित करते हैं। ये पूर्वाग्रह सरकारी दबाव, कॉर्पोरेट हितों और संपादकीय झुकाव से उत्पन्न होकर लोकतंत्र की निष्पक्षता को कमजोर करते हैं। जहां तक चयनात्मक रिपोर्टिंग की बात है तो राजनीतिक पूर्वाग्रह मीडिया को विशिष्ट घटनाओं को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाने या दबाने के लिए प्रेरित करते हैं, जैसे विपक्षी दलों की आलोचना पर अधिक जोर। वहीं, भारत में मुख्यधारा मीडिया अक्सर सरकार समर्थक या विरोधी रुख अपनाता है, जिससे जनता में ध्रुवीकृत धारणा बनती है। इनकी फंडिंग और नियंत्रण भी सवालों के दायरे में है क्योंकि दल और सरकारें विज्ञापनों, कानूनी दबाव या स्वामित्व के माध्यम से मीडिया को प्रभावित करती हैं, जिससे पक्षपातपूर्ण सामग्री बढ़ती है। उदाहरणस्वरूप, कांग्रेस या भाजपा या क्षेत्रीय दलों के शासनकाल में कुछ चैनलों पर विपक्षी मुद्दों की उपेक्षा देखी गई।

वहीं सोशल मीडिया प्रभाव भी इनपर स्पष्ट देखा जाता है। खासकर राजनीतिक एल्गोरिदम भावनात्मक सामग्री को प्राथमिकता देकर पूर्वाग्रह फैलाते हैं, फेक न्यूज और ट्रायल बाय मीडिया को बढ़ावा देते हुए। इससे मीडिया ट्रायल जैसे आरुषि तलवार मामले में न्याय प्रक्रिया प्रभावित होती है।

कहना न होगा कि भारतीय गणतंत्र को जातिगत, धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक पूर्वाग्रहों से मुक्त करने के लिए बहुआयामी सुधार आवश्यक हैं। ये सुधार कानूनी, शैक्षिक, सामाजिक और संस्थागत स्तर पर होने चाहिए। इसके लिए निम्नलिखित प्रमुख कदम उठाए जा सकते हैं।

पहला, कानूनी सुधार यानी सामाजिक विधान बनाकर पूर्वाग्रहों को गैरकानूनी घोषित किया जाए, जैसे छुआछूत को समाप्त करने वाला कानून जो दलितों के प्रति पूर्वाग्रह कम करने में सफल रहा।

दूसरा, चुनावी सुधारों में धनबल और अपराधीकरण को रोकने के लिए पारदर्शिता सुनिश्चित करें, जैसे उम्मीदवारों का आपराधिक रिकॉर्ड अनिवार्य घोषित करना।

तीसरा, शैक्षिक प्रयास यानी शिक्षा पाठ्यक्रम में पूर्वाग्रह-विरोधी सामग्री शामिल करें जो उदारता बढ़ाए और जाति-धर्म आधारित रूढ़ियों को तोड़े।

चतुर्थ, अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से परिवार और समुदाय स्तर पर जागरूकता फैलाएं, क्योंकि उच्च शिक्षा पूर्वाग्रह कम करती है।

पांचवां, सामाजिक संपर्क बढ़ावा देने के तहत अंतर-जातीय विवाह और समूह संपर्क को प्रोत्साहित करें, जैसे आर्थिक सहायता देकर, ताकि गलतफहमियां दूर हों।

छठा, अलगाव-विरोधी नीतियां अपनाएं, जैसे एकीकृत आवास योजनाएं, जो पूर्वाग्रह मजबूत करने वाली पृथक परियोजनाओं को बदलें।

सातवां, संस्थागत मजबूती यानी चुनाव आयोग की स्वतंत्रता बढ़ाएं, जैसे मुख्य न्यायाधीश को नियुक्ति प्रक्रिया में शामिल कर पारदर्शिता लाएं। वहीं, न्यायपालिका को पूर्वाग्रह-मुक्त बनाने के लिए डिजिटलीकरण और विविधता बढ़ाएं। आठवां, प्रचार और जागरूकता यानी पूर्वाग्रह-विरोधी प्रचार रेडियो, टीवी और मीडिया से करें, जो अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावी साबित हुआ है। राजनीतिक दलों में आंतरिक लोकतंत्र लाकर पारदर्शिता सुनिश्चित करें।

# गणतंत्र के 77 वर्ष: उपलब्धियाँ, चुनौतियाँ और भविष्य का संकल्प

**- डॉ. सत्यवान सौरभ**

भारत की पहली और सबसे बड़ी चुनौती थी—विविधता में एकता। महाद्वीप के आकार का यह देश सौ तीस करोड़ से अधिक लोगों, सैकड़ों भाषाओं-बोलियों, विविध धर्मों-संस्कृतियों का मेल था। स्वतंत्रता के समय आशंका थी कि यह एकजुट नहीं रहेगा। विभाजन की त्रासदी ने आशंकाओं को बल दिया, लाखों जानें गईं, लेकिन संविधान ने संघीय ढांचे से एकता सुनिश्चित की। अनुच्छेद एक ने 'भारत एक अखंड राज्य' घोषित किया। भाषाई राज्यों का पुनर्गठन, एकीकृत न्यायपालिका और संवैधानिक संस्थाओं ने क्षेत्रीय आकांक्षाओं को मुख्यधारा से जोड़ा।

भारत का गणतंत्र आज 77 वर्ष का हो चुका है। 26 जनवरी 1950 को लागू हुए संविधान ने एक नई भारत की नींव रखी, जो स्वतंत्रता संग्राम के बलिदानों से प्रेरित थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से हमने अनेक क्षेत्रों में प्रगति की—साहित्य, खेल, कृषि, विज्ञान-प्रौद्योगिकी से लेकर आर्थिक-सैन्य क्षमता तक। विविध संस्कृति को मजबूत करते हुए राष्ट्र ने वैश्विक पटल पर अपनी पहचान बनाई। चंद्रयान मिशनों से अंतरिक्ष विज्ञान में अग्रणी बने, यूपीआई जैसी डिजिटल क्रांति ने भुगतान व्यवस्था बदल दी, जबकि ओलंपिक-एशियाड में पदकों की बौछार ने खेलक्षेत्र में नई ऊंचाइयां छुईं। आज विश्व भारत को चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में देखता है, जहां सात से आठ प्रतिशत की विकास दर ने गरीबी उन्मूलन में योगदान दिया। लेकिन यह यात्रा सहज नहीं रही। आंतरिक चुनौतियां, सीमापार खतरे और सामाजिक विषमताएं बनी रहीं। गणतंत्र दिवस पर आत्मचिंतन आवश्यक है: हमने क्या पाया, क्या खोया और भविष्य के लिए क्या संकल्प लें?

भारत की पहली और सबसे बड़ी चुनौती थी—विविधता में एकता। महाद्वीप के आकार का यह देश सौ तीस करोड़ से अधिक लोगों, सैकड़ों भाषाओं-बोलियों, विविध धर्मों-संस्कृतियों का मेल था। स्वतंत्रता के समय आशंका थी कि यह एकजुट नहीं रहेगा। विभाजन की त्रासदी ने आशंकाओं को बल दिया, लाखों जानें गईं, लेकिन संविधान ने संघीय ढांचे से एकता सुनिश्चित की। अनुच्छेद एक ने 'भारत एक अखंड राज्य' घोषित किया। भाषाई राज्यों का पुनर्गठन, एकीकृत न्यायपालिका और संवैधानिक संस्थाओं ने क्षेत्रीय आकांक्षाओं को मुख्यधारा से जोड़ा। नक्सलवाद, अलगाववाद जैसी चुनौतियों के बावजूद हमने एकता बनाए रखी। पिछले 25 वर्षों में जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाना, पूर्वोत्तर में शांति प्रक्रियाएं इसका प्रमाण हैं। आज 'एक देश, एक राशन' जैसी योजनाएं विविधता को शक्ति बना रही हैं। यह उपलब्धि कम नहीं—विश्व के अधिकांश बहुलवादी देश टूट चुके,



लेकिन भारत अटल खड़ा है।

दूसरी चुनौती थी—लोकतंत्र को जीवंत बनाना। संविधान ने वयस्क मताधिकार, मौलिक अधिकार, धर्मनिरपेक्षता प्रदान की। संसदीय प्रणाली अपनाई, जो ब्रिटिश मॉडल से प्रेरित किंतु भारतीय आवश्यकताओं के अनुरूप। नेहरू युग से चली आ रही परंपरा में अठारह लोकसभा चुनाव शांतिपूर्ण हुए। न्यायपालिका ने जनहित याचिका के माध्यम से गरीबों के अधिकार स्थापित किए—विशाखा दिशानिर्देशों से महिला सुरक्षा, शिक्षा का अधिकार से शिक्षा का अधिकार। महिला आरक्षण ने पंचायती राज में तैंतीस से पचास प्रतिशत क्रांति लाई, जो राष्ट्रीय स्तर पर विस्तार की प्रतीक्षा कर रहा। सूचना का अधिकार ने पारदर्शिता बढ़ाई, जबकि वस्तु एवं सेवा कर ने आर्थिक एकीकरण किया। चुनौतियां रहीं—आपातकाल जैसे काले अध्याय, लेकिन संस्थाओं ने पुनरुद्धार किया। आज त्रस्तंभ मजबूत हैं: चुनाव आयोग निष्पक्ष, भारतीय रिज़र्व बैंक आर्थिक स्थिरता का प्रहरी। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र ने साबित किया कि गरीबी और निरक्षरता के बावजूद प्रजातंत्र फल-फूल सकता है।

तीसरी चुनौती थी विकास। 1947 में सकल घरेलू उत्पाद दो लाख तीस हजार करोड़ था, आज चार सौ लाख करोड़ से अधिक। हरित क्रांति ने अन्न भंडार भरे, सफेद क्रांति ने दूध उत्पादन में विश्व रिकॉर्ड बनाया। इसरो के सौ से अधिक उपग्रह मिशन, कोविशील्ड वैक्सीन ने आत्मनिर्भरता दिखाई। डिजिटल भारत ने सौ करोड़ से अधिक आधार कार्ड जोड़े, जबकि स्टार्टअप भारत ने एक लाख से अधिक स्टार्टअप जन्मे। सामाजिक मोर्चे पर राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम ने अस्सी करोड़ को सस्ता अनाज दिया, स्वच्छ भारत ने बारह करोड़ शौचालय बनाए। आयुष्मान भारत ने पचास करोड़ गरीबों को स्वास्थ्य बीमा प्रदान किया। लेकिन असमानता बनी—ऊपर दस प्रतिशत के पास सत्तावन प्रतिशत संपत्ति, जबकि निचले पचास प्रतिशत के पास तीन प्रतिशत। ग्रामीण-शहरी खाई, किसान आत्महत्याएं चिंताजनक। फिर भी, गरीबी रेखा से बाहर पच्चीस करोड़ लोग निकले—यह गर्व का विषय।

गणतंत्र की उपलब्धियां गर्व का कारण हैं, किंतु खोया भी बहुत। भ्रष्टाचार ने जड़ें जमा लीं—दो जी, कोयला आवंटन जैसी घोटालों ने अरबों लूटे। चुनावी बॉन्ड पर सवाल, नोटबंदी के बाद काला धन वापसी असफल। महिला असुरक्षा चरम पर—निर्भया से हाथरस तक बलात्कार की घटनाएं थम नहीं रही। जातिगत हिंसा, दलित अत्याचार जारी। किसान संकट गहरा: न्यूनतम समर्थन मूल्य की मांग, कर्जमाफी नाकाफी। युवा बेरोजगारी तीनों प्रतिशत पर, असंतोष से हिंसा भड़क रही। प्रदूषण घातक, प्रांतीयता का जहर बरकरार। अभिव्यक्ति स्वतंत्रता पर दुरुपयोग। नक्सलवाद, आतंकवाद बने सिरदर्द। ये घाव भारत माता को रक्तरंजित कर रहे।

खोया भले हो, लेकिन हल संभव। भ्रष्टाचार पर प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण ने रिसाव रोका। महिला सुरक्षा हेतु फास्ट-ट्रैक कोर्ट, निर्भया कोष उपयोग बढ़ाएं। किसानों के लिए प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, किसान उत्पादक संगठन मजबूत करें। रोजगार हेतु कौशल भारत, आत्मनिर्भर तीन से दस करोड़ नौकरियां सृजित संभव। सामाजिक सद्भाव हेतु संविधान जागरण अभियान चलाएं। प्रदूषण पर विद्युत वाहन नीति, नमामि गंगे को गति। पंचायती राज को सशक्त बनाएं—महिला प्रतिनिधित्व से स्थानीय शासन मजबूत। युवाओं को मुख्यधारा जोड़ें। कृत्रिम बुद्धिमत्ता-बिग डेटा से नफरत फैलाव रोका जा सकता। 2047 तक विकसित भारत का सपना साकार करने हेतु एकजुट हों।

गणतंत्र दिवस मात्र परेड-झंडारोहण नहीं, आत्मचिंतन का अवसर। हमने एकता, लोकतंत्र, विकास पाया; भ्रष्टाचार, असमानता खोया। लेकिन युवा शक्ति हमारा हथियार। आशावादी रहें—भारतीय मॉडल अपनाएं। राष्ट्रपिता गांधी, संविधान निर्माता अम्बेडकर के सिद्धांतों पर चलें। गणतंत्र को कंटीली झाड़ियों से निकालें, उज्ज्वल भविष्य बनाएं। जय हिंद, जय भारत!

# समस्याओं से जूझता भारतीय गणतंत्र: 2026 की कठोर सच्चाई

**- डॉ. प्रियंका सौरभ**

दो हज़ार छब्बीस का गणतंत्र दिवस नज़दीक आते ही देशभक्ति का उन्माद छा जाता है। राजपथ पर भव्य परेड, ड्रोन शो, सैन्य मिस्वाह प्रदर्शन—सब कुछ चकाचौंध। राष्ट्रपति का भाषण, प्रधानमंत्री का संदेश, स्कूलों में निबंध प्रतियोगिताएँ। लेकिन उत्सव के परदे के पीछे भारत का गणतंत्र बदहाली से जूझ रहा है। सत्तावन वर्षों बाद भी भ्रष्टाचार, हिंसा, बलात्कार, सांप्रदायिक नफरत जैसी बुराइयाँ समाज को खा रही हैं। विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश बन चुका भारत आर्थिक चमक-दमक के साथ-साथ गरीबी, असमानता के अंधेरे में डूबा है। लोकतंत्र की आड़ में तानाशाही प्रवृत्तियाँ पनप रही हैं। युवा बेरोजगारी से ग्रस्त, किसान आत्महत्या के आँकड़ों में शामिल हो रहे। महिला असुरक्षा चरम पर, न्याय व्यवस्था चरमरा गई। गणतंत्र दिवस अब चिंतन का अवसर बनना चाहिए—हम कहाँ गलत हो गए? क्या हमारा संविधान अब भी प्रासंगिक है, या समय के साथ अप्रासंगिक हो चला?

भारत का गणतंत्र उन्नीस सौ पचास में जन्मा था। डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर द्वारा निर्मित संविधान ने उच्च आदर्श स्थापित किए—समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व। लेकिन सत्तावन वर्ष बाद वास्तविकता कड़वी है। अर्थव्यवस्था विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी बताई जाती है, परंतु शीर्ष एक प्रतिशत अमीरों के पास पचासी प्रतिशत संपत्ति केंद्रित। सत्तर से अधिक अरबपति मिलकर राष्ट्रीय बजट से अधिक धन रखते हैं। बहुआयामी गरीबी इक्कीस प्रतिशत आबादी को लील रही। ग्रामीण भारत में छियालीस प्रतिशत परिवार मूलभूत सुविधाओं से वंचित। शहरी झुग्गी-झोपड़ियाँ बढ़ रही, जबकि मेट्रो शहरों में लग्ज़री टावर उभर रहे। यह असमानता सामाजिक विस्फोट का कारण बनी। महिला अनुपात नौ सौ बीस प्रति हज़ार, कुपोषण में पैंतीस प्रतिशत बच्चे स्टंटेड। एनएफएचएस-छह के आँकड़े चेतावनी हैं—पोषण रहित नस्लें भारत का भविष्य नहीं संवारी जा सकतीं।

भ्रष्टाचार इस गणतंत्र का कैंसर बन चुका। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के दो हज़ार पच्चीस सूचकांक में भारत पचासीवें स्थान पर लुढ़क गया। राजनीति से नौकरशाही, व्यापार से न्यायपालिका तक भ्रष्टाचार व्याप्त। दो हज़ार छब्बीस के चुनावों में चुनावी बॉन्ड घोटाले ने नया विवाद खड़ा किया। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के डीपफेक ने प्रचार को और जटिल बना दिया। कॉर्पोरेट धन ने पार्टियों को खरीद लिया। सड़क निर्माण से लेकर हवाई अड्डे तक हर ठेका कमीशन का शिकार। डीबीटी ने पाँच लाख करोड़ की बचत तो की, लेकिन आधार डेटा लीक, पैन कार्ड धोखाधड़ी ने नई समस्याएँ खड़ी कीं। निचले स्तर पर चपरासी से लेकर थाना प्रभारी तक रिश्वतखोरी आम। यह भ्रष्टाचार लोकतंत्र की जड़ें खोखला कर रहा।

राजनीति का अपराधीकरण गंभीर संकट। अठारहवीं लोकसभा में दो सौ पचास से अधिक सांसद आपराधिक मामलों से जूझ रहे। हत्या, अपहरण, बलात्कार के आरोपी विधायक बन रहे। धनबल-बाहुबल ने चुनाव प्रक्रिया विकृत कर दी। एक लाख करोड़ के अनुमानित चुनावी खर्च में चालीस प्रतिशत फंड का स्रोत अस्पष्ट। नकदी बंटवारे, शराब की नदियाँ, वोटर स्लिप के नाम पर खरीद-फरोख्त। जातिवाद ने राजनीति को जकड़ लिया। उत्तर प्रदेश में यादव-जाट, बिहार में कुर्मी-राजपूत, हर राज्य में जाति की राजनीति। सम्प्रदायवाद ने सांप्रदायिक दंगों को हवा दी। दो



हज़ार पच्चीस में उत्तराखंड, मणिपुर में दंगे भड़के। सोशल मीडिया पर ध्रुवीकरण चरम पर—व्हाट्सएप फॉरवर्ड से लेकर ट्विटर ट्रेंड तक नफरत का जहर।

महिला असुरक्षा गणतंत्र के लिए कलंक। निर्भया कांड से हाथरस, उन्नाव तक बलात्कार की घटनाएँ थम नहीं रही। प्रतिदिन छियासी मामले दर्ज, वास्तविक आँकड़े दोगुने। दलित महिलाओं पर अत्याचार दोगुने हो गए। शहरों में स्टॉकिंग, ग्रामीण क्षेत्रों में खाप पंचायतों का डर। निर्भया फंड के दस हज़ार करोड़ व्यय नगण्य। फास्ट-ट्रैक कोर्ट अपर्याप्त, साइबर सेल निष्क्रिय। कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न बढ़ा, बॉलीवुड से लेकर कॉर्पोरेट तक मी-टू आंदोलन थम गए। लिंग भेदभाव शिक्षा-रोजगार में बरकरार। लड़कियों की स्कूल ड्रॉपआउट दर ऊँची। यह असुरक्षा समाज की आधी आबादी को बाँधे रख रही।

न्याय व्यवस्था चरमरा गई। चार लाख पचास हज़ार मामले लंबित, जज-जनसंख्या अनुपात उन्नीस प्रति दस लाख। उच्च न्यायालयों में औसतन दस वर्ष लगते हैं। अन्याय बराबर न्याय में देरी। वकीलों की हड़तालें, जजों की कमी, जटिल कानून। ई-कोर्ट प्रोजेक्ट अधर में। पुलिस सुधार नाममात्र के—औपनिवेशिक मानसिकता कायम। थानों में रिश्वत, हिरासत में टॉर्चर आम। एस आई टी गठन के बाद भी SIT रिपोर्ट दब जाती हैं। खाप पंचायतों ने कानून हाथ में ले लिया। पितृसत्ता परिवारों में लोकतंत्र को कुचल रही। क्षेत्रवाद तीव्र—बंगाल में टीएमसी, केरल में एलडीएफ केंद्र के विरुद्ध। दक्षिणी राज्य भाषा-आरक्षण के नाम पर विद्रोह पर उतारु। पूर्वोत्तर में अलगाववाद सुलगा हुआ।

युवा बेरोजगारी तेईस प्रतिशत पर। आईआईटी-आईआईएम से सिविल सेवा न निकलने वाले स्टार्टअप की ओर। लेकिन अधिकांश बेरोजगार ग्रामीण युवा कौशलहीन। किसान संकट गहरा—न्यूनतम समर्थन मूल्य की माँग अधर में। पंजाब-महाराष्ट्र में कर्ज से आत्महत्या का सिलसिला। बाढ़-सूखे ने फसलें बर्बाद की। एमएसपी कानून बनने के बाद भी किसान सड़कों पर। प्रदूषण घातक—दिल्ली का एक्यूआई पाँच सौ पार। यमुना-गंगा काली। जलवायु संकट बाढ़-सूखा चक्रवृद्धि। नक्सलवाद छत्तीसगढ़-झारखंड में सक्रिय। आतंकवाद जम्मू-कश्मीर से केरल तक फैला। अभिव्यक्ति स्वतंत्रता पर यूपीएपीए, सूचना प्रौद्योगिकी नियमों का दुरुपयोग। पत्रकार जेलों में, सोशल मीडिया सेंसरशिप।

क्या कोई समाधान संभव? भ्रष्टाचार पर डीबीटी ने लाभ पहुँचाया, लेकिन कृत्रिम बुद्धिमत्ता निगरानी, ब्लॉकचेन मतदान आवश्यक। निर्भया फंड का पूरा व्यय, एक हज़ार फास्ट-ट्रैक कोर्ट। साइबर क्राइम सेल हर जिले में। पीएम-विश्वकर्मा, आत्मनिर्भर चार दशा से पंद्रह करोड़ नौकरियाँ। कौशल भारत को विस्तार। 'संविधान यात्रा' से सांप्रदायिक सद्भाव—स्कूलों में एकता पाठ्यक्रम अनिवार्य। चुनाव सुधार विधेयक—आपराधिक उम्मीदवार आजीवन प्रतिबंधित, राज्य फंडिंग पारदर्शी। राजनीतिक दलों का ऑडिट। ई-कोर्ट तीन दशा, पचास हज़ार नए जज। अधिकतम न्याय समय सीमा। पुलिस सुधार—सीसीटीवी थानों में अनिवार्य। क्षेत्रीय असंतुलन पर नीति आयोग दो दशा, दक्षिणी राज्यों को विशेष पैकेज। राष्ट्र निर्माण इंटर्नशिप—प्रत्येक युवा को एक वर्ष सेवा। पंचायती राज सशक्तिकरण—सत्तर तिहाई संशोधन को राष्ट्रीय महिला आरक्षण। विद्युत वाहन तीस प्रतिशत लक्ष्य, नमामि गंगे दो दशा को गति। नक्सल क्षेत्रों में विकास पैकेज।

गणतंत्र दिवस पर मात्र परेड-झंडारोहण पर्याप्त नहीं। समस्याओं को स्वीकारना होगा। औपचारिक लोकतंत्र बचाया, अब वास्तविक सामाजिक न्याय सुनिश्चित करें। युवा शक्ति आगे आए, भारत को विश्व गुरु बनाएँ। विविधता शक्ति बने। डॉक्टर अम्बेडकर का संविधान जीवंत हो, काँटों भरी झाड़ियों से निकले। अन्यथा गणतंत्र मात्र दिखावा बन जाएगा। जय हिंद, जय भारत!

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक हैं।)




# लोकतंत्र नहीं, जनसत्ता का उत्सव है गणतंत्र

**कृति आरके जैन**

26 जनवरी की सुबह कोई साधारण सुबह नहीं होती। उस दिन सूरज की किरणें सिर्फ़ रोशनी नहीं लातीं, वे आत्मसम्मान की लौ जलाती हैं। सड़कों पर लहराता तिरंगा, कदम से कदम मिलाती टुकड़ियाँ और आकाश में गूँजती गर्जना हमें याद दिलाती है कि यह देश किसी एक के आदेश से नहीं, बल्कि करोड़ों इच्छाओं से चलता है। यहाँ सत्ता का सिंहासन किसी महल में नहीं, बल्कि हर नागरिक के भीतर स्थापित है। गणतंत्र का यही अद्भुत सत्य है कि इसमें शासन का स्रोत जनता है और जनता ही शासन की दिशा तय करती है।

गणतंत्र का अर्थ केवल व्यवस्था नहीं, बल्कि चेतना है। यह वह विचार है जो कहता है कि जन्म से कोई ऊँचा या नीचा नहीं, सब समान हैं। यहाँ मुकुट किसी के सिर पर स्थायी नहीं रहता, बल्कि जिम्मेदारी के रूप में हर हाथ में बँट जाता है। जब हम कहते हैं कि अब हर कोई राजा है, तो उसका मतलब अधिकारों का उन्माद नहीं, बल्कि कर्तव्यों की साझेदारी है। गणतंत्र हमें सिखाता है कि सच्चा राजा वही है जो अपने निर्णयों से समाज को मजबूत बनाए, न कि केवल स्वयं को।

इस व्यवस्था की सबसे बड़ी शक्ति वह क्षण है जब एक साधारण नागरिक मतदान केंद्र पर खड़ा होता है। वहाँ न धन बोलता है, न पद, न पहचान। वहाँ केवल विवेक बोलता है। एक बटन दबाते समय वह व्यक्ति इतिहास की धारा को मोड़ने की क्षमता रखता है। उस एक क्षण में सत्ता उसके हाथों में होती है। यही वह जादू है जो गणतंत्र रचता है, जहाँ सबसे शांत दिखने वाला नागरिक भी सबसे बड़ा निर्णायक बन जाता है और सत्ता को दिशा देने का अधिकार पाता है।

हमारा संविधान इस गणतंत्र की आत्मा है। यह कोई मोटी किताब भर नहीं, बल्कि करोड़ों आशाओं का लिखित संकल्प है। इसमें अधिकार हैं ताकि कोई कुचला न जाए और कर्तव्य हैं ताकि कोई स्वेच्छाचारी न बने। संविधान हमें बोलने की स्वतंत्रता देता है, पर सुनने की जिम्मेदारी भी सिखाता है। यह हमें चुनने का अधिकार देता है, पर सोचने की अपेक्षा भी रखता है। 1950 में लिया गया यह संकल्प आज भी जीवित है, क्योंकि हर पीढ़ी इसे अपने कर्मों से नया अर्थ देती है।

गणतंत्र का सौंदर्य उसकी सहनशीलता में छिपा है। यहाँ असहमति अपराध नहीं, बल्कि विकास का साधन है। सवाल पूछना विद्रोह नहीं, बल्कि जागरूकता का संकेत है। जब नागरिक प्रश्न करते हैं, तब व्यवस्था सजग होती है। यही कारण है कि यह देश कठिन दौर से गुजरकर भी टूटता नहीं। गरीबी, विपत्तियाँ, संकट और संघर्ष आते रहे, पर हर बार गणतंत्र ने लोगों को यह भरोसा दिया कि हार अंतिम सत्य नहीं। उठना, सीखना और आगे बढ़ना ही इसकी असली पहचान है।

इस देश का हर नागरिक अपने क्षेत्र में राजा है। किसान खेत में फैसले लेता है, शिक्षक कक्षा में भविष्य गढ़ता है, मजदूर ईंट पर ईंट रखकर



सपनों की इमारत खड़ी करता है। महिलाएँ सीमाएँ तोड़कर नेतृत्व करती हैं और युवा नए रास्ते खोजते हैं। यहाँ राजत्व किसी सिंहासन से नहीं, बल्कि श्रम और समर्पण से मिलता है। जब हर व्यक्ति अपने दायित्व को ईमानदारी से निभाता है, तब गणतंत्र केवल शासन पद्धति नहीं रहता, वह जीवन शैली बन जाता है।

आज का गणतंत्र केवल अधिकारों का उत्सव नहीं, बल्कि उत्तरदायित्वों की परीक्षा भी है। अगर हम राजा हैं, तो हमें न्यायप्रिय भी होना होगा। अगर हमारी आवाज़ की कीमत है, तो दूसरों की चुप्पी का सम्मान भी जरूरी है। सड़क पर नियम मानना, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना और कमजोर के पक्ष में खड़ा होना भी राजधर्म ही है। गणतंत्र तब खोखला हो जाता है जब हम अधिकार तो माँगते हैं, पर कर्तव्य से मुँह मोड़ लेते हैं। सच्चा राजा वही है जो अनुशासन को सम्मान समझे।

तिरंगे को सलामी देते समय हमें यह भी याद रखना चाहिए कि यह ध्वज केवल गर्व का प्रतीक नहीं, बल्कि भरोसे की कसौटी है। इसमें उन बच्चों के सपने हैं जो शिक्षा से भविष्य बदलना चाहते हैं और उन बुजुर्गों का विश्वास है जिन्होंने संघर्ष में जीवन बिताया। यह झंडा हमें जोड़ता है, बाँटता नहीं। गणतंत्र की सफलता इसी में है कि विविधता के बीच भी एकता बनी रहे। जब हर रंग अपनी पहचान के साथ साथ दूसरे रंग का सम्मान करता है, तभी तिरंगा पूर्ण दिखता है।

आज की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि हम गणतंत्र को केवल पर्व न बनने दें। इसे रोज़मर्रा के व्यवहार में उतारें। सवाल पूछें, पर समाधान भी सुझाएँ। आलोचना करें, पर निर्माण की भावना से। जब नागरिक सजग होते हैं, तब शासन पारदर्शी होता है। तब कोई प्रजा नहीं बचती, क्योंकि सब सहभागी बन जाते हैं। यही वह अवस्था है जहाँ सत्ता ऊपर से नीचे नहीं, बल्कि भीतर से बाहर बहती है और देश को मजबूती देती है।

गणतंत्र का संदेश सरल और स्पष्ट है। यहाँ कोई स्थायी राजा नहीं और कोई स्थायी प्रजा नहीं। यहाँ हर व्यक्ति अपने निर्णयों से राजा बनता है और अपने कर्तव्यों से व्यवस्था को जीवित रखता है। जब सब मिलकर जिम्मेदारी उठाते हैं, तब राष्ट्र आगे बढ़ता है। यही गणतंत्र की जीत है, यही भारत की ताकत है। इस विचार को केवल शब्दों में नहीं, कर्म में जिएँ। क्योंकि जब हर नागरिक राजा होता है, तब देश केवल बड़ा नहीं, महान बनता है।

# परिणाम से परे: परीक्षा-जुनूनी दुनिया में सफलता को पुनः परिभाषित करना : डॉ. विजय गर्ग

जैसे ही आप परीक्षा का परिणाम खोलते हैं, ऐसा लगता है कि ब्रह्मांड एक अक्षर या तीन अंकों की संख्या में तब्दील हो गया है। कई लोगों के लिए, यह क्षण माता-पिता, शिक्षकों और एक ऐसे समाज से अपेक्षाओं के बोझ से भरा है जो अक्सर ग्रेड को मूल्य का अंतिम साधन मानता है। लेकिन एक बार जब स्याही सूख जाती है और एड्रेनालाईन या निराशा की प्रारंभिक लहर फीकी पड़ जाती है, तो एक महत्वपूर्ण सच्चाई बनी रहती है: परिणाम एक स्नैपशॉट होता है, पूरी कहानी नहीं। --- ₹स्नैपशॉट₹ बनाम. कहानी परीक्षा में यह मापा जाता है कि आपने किसी विशिष्ट दिन, किसी विशेष परिस्थिति में कितने अच्छे प्रश्न पूछे। यह माप नहीं करता: आपका चरित्र: आपकी दयालुता, लचीलापन, या जब कोई नहीं देख रहा हो तो आप लोगों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं। आपकी क्षमता: कैरियर का ₹विगली₹ मार्ग जिसमें नेतृत्व, सहानुभूति या रचनात्मकता जैसे कौशल शामिल हो सकते हैं। इनमें से किसी को भी बहुविकल्पीय परीक्षण में आसानी से नहीं पकड़ा जा सकता है। आपकी अनुकूलन क्षमता: दुनिया के कुछ सबसे सफल उद्यमी और दूरदर्शी ₹औसत₹ छात्र थे, जो इसलिए फले-फूले क्योंकि वे जानते थे कि वास्तविक दुनिया में कैसे नेविगेट किया जाए, न कि केवल पाठ्यक्रम। ₹प्लान बी₹ की शक्ति हमें अक्सर सिखाया जाता है कि केवल एक ही ₹सही₹ रास्ता है: उच्च ग्रेड से शीर्ष विश्वविद्यालय की ओर जाना, जिससे प्रतिष्ठित नौकरी मिलती है। वास्तव में, सफलता शायद ही कभी एक सीधी रेखा होती है। वैकल्पिक मार्ग: प्रशिक्षुता, व्यावसायिक प्रशिक्षण और कार्य अनुभव अक्सर पारंपरिक डिग्री की तुलना में उच्च-स्तरीय करियर के लिए एक तेज और अधिक व्यावहारिक मार्ग प्रदान करते हैं। असफलता का उपहार: अंक न मिल पाना एक मृत अंत के बजाय एक ₹पुनर्निर्देशन₹ हो सकता है। यह एक ऐसे क्षेत्र को मजबूर करता है जो आपको उस क्षेत्र की ओर ले जा सकता है जिसके प्रति आप वास्तव में जुनूनी हैं, न कि उस क्षेत्र के लिए जिसे अपनाने के लिए आप बाध्य महसूस करते हैं। अपनी ₹परीक्षा-पश्चात₹ पहचान का निर्माण करना यदि आप स्वयं को केवल अपने शैक्षणिक प्रदर्शन से परिभाषित करते हैं, तो आपका आत्म-सम्मान हमेशा मूल्यांकनकर्ता की दया पर रहेगा। परिणाम से आगे बढ़ने के लिए, इन तीन स्तंभों का निर्माण करने पर ध्यान केंद्रित करें: स्कोर से अधिक कौशल: समस्या-समाधान, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और संचार जैसे ₹स्थायी कौशल₹ पर ध्यान केंद्रित करें। ये वे परिसंपत्तियां हैं जो वास्तव में नौकरियां पैदा करती हैं और व्यवसाय का निर्माण करती हैं। विकास मानसिकता: परिणाम को डेटा के रूप में उपयोग करें। यदि यह वैसा नहीं था जैसा आपने आशा की थी, तो पूछें: ₹मैंने अपनी तैयारी से क्या सीख सकता हूँ?₹ बजाय इसके कि ₹मेरे साथ क्या गलत है? समग्र कल्याण: आपका मानसिक स्वास्थ्य किसी भी प्रतिलिपि से अधिक मूल्यवान है। परीक्षा के दौरान ₹लड़ाई करो या भागो₹ का तनाव बना रह सकता है; अपने आप को आराम करने, सामाजिक मेलजोल बढ़ाने और अपने शौक से पुनः जुड़ने की अनुमति दें।

हर साल, लाखों छात्र परीक्षा परिणामों का उत्सुकता से इंतजार करते हैं, यह मानते हुए कि मार्कशीट पर कुछ संख्याएं उनकी बुद्धिमत्ता, क्षमता और भविष्य को परिभाषित करेंगी। जब परिणाम अच्छे होते हैं, तो जश्न मनाया जाता है; जब वे अच्छे नहीं होते, तो निराशा, भय और आत्म-संदेह अक्सर हावी हो जाते हैं। लेकिन सच्चाई सरल और शक्तिशाली है: परीक्षा का परिणाम किसी छात्र के जीवन का अंतिम निर्णय नहीं है - यह एक बहुत लंबी यात्रा में सिर्फ एक मील का पत्थर है।

परीक्षाएं विशिष्ट परिस्थितियों में, किसी विशेष समय पर प्रदर्शन का आकलन करने के लिए बनाई जाती हैं। वे यह मापते हैं कि कोई छात्र किसी दिन कितनी अच्छी तरह से जानकारी याद रखता है, अवधारणाओं को लागू करता है या समय का प्रबंधन करता है। वे जिन गुणों को नहीं मापते हैं, वे वास्तव में जीवन को आकार देते हैं - जिज्ञासा, रचनात्मकता, लचीलापन, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, नैतिकता, नेतृत्व और अनुकूलन की क्षमता। इतिहास और रोजमर्रा की जिंदगी ऐसे लोगों के उदाहरणों से भरी हुई है जो परीक्षाओं में तो सफल नहीं हुए, लेकिन असाधारण सफलता हासिल कर ली।

जब छात्रों का स्कोर अपेक्षा से कम होता है, तो वास्तविक चुनौती शुरू होती है - शैक्षणिक नहीं, बल्कि भावनात्मक। समाज अक्सर ऐसे परिणामों को ₹विफलता₹ के रूप में लेबल करता है, तथा यह भूल जाता है कि असफलता कोई अंत नहीं बल्कि प्रतिक्रिया होती है। एक निराशाजनक परिणाम एक महत्वपूर्ण मोड़ बन सकता है, जो छात्रों को चिंतन करने, रणनीतियों पर पुनर्विचार करने, नई रुचियों की खोज करने या अपनी शक्तियों के अनुरूप मार्ग चुनने के लिए प्रोत्साहित करता है। आजकल कई करियर केवल अंक की तुलना में कौशल, नवाचार और निरंतर सीखने को अधिक महत्व देते हैं।

छात्र परिणामों को किस प्रकार देखते हैं, इसे आकार देने में माता-पिता और शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सहायक मार्गदर्शन छात्रों को यह समझने में मदद करता है कि प्रयास परिणाम से अधिक मायने रखता है, तथा विकास रैंक से भी अधिक महत्व रखता है। पूछने के बजाय, ₹आपने कितना स्कोर किया? एक अधिक सार्थक प्रश्न यह है कि, ₹आपने क्या सीखा, और आप आगे क्या करेंगे? ऐसी बातचीत आत्मविश्वास और विकास की मानसिकता का निर्माण करती है।

परीक्षा परिणामों से आगे देखने का अर्थ विविध प्रतिभाओं को पहचानना भी है। कुछ छात्र कला, खेल, उद्यमिता, संचार या तकनीकी कौशल में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं, जिन्हें पारंपरिक परीक्षाएं हासिल करने में विफल रहती हैं। प्रौद्योगिकी और रचनात्मकता से प्रेरित तेजी से बदलती दुनिया में, सफलता के कई रास्ते हैं, न कि केवल एक रास्ता जो निशानों द्वारा परिभाषित होता है।

अंत में, परीक्षाएं महत्वपूर्ण हैं—लेकिन वे सब कुछ नहीं हैं। जीवन अनगिनत दूसरे अवसर, वैकल्पिक मार्ग और स्वयं को पुनः आविष्कृत करने के अवसर प्रदान करता है। परिणाम एक दरवाजा खोल या बंद कर सकता है, लेकिन यह कभी भी पूरी इमारत को लॉक नहीं करता।

जो बात वास्तव में मायने रखती है, वह है आगे बढ़ने का साहस, असफलताओं से सीखने की इच्छा, तथा यह विश्वास कि किसी व्यक्ति का मूल्य कागज पर लिखे गए किसी भी अंक से कहीं अधिक है।

परिणाम से आगे बढ़ें - क्योंकि आपका भविष्य एक परीक्षा से भी बड़ा है अंतिम विचार: आप वास्तुकार हैं एक ग्रेड दरवाजा खोल सकता है, लेकिन वह आपके लिए उसमें से नहीं गुजर सकता। इसके विपरीत, खराब ग्रेड एक दरवाजा बंद कर सकता है, लेकिन यह आपको नया दरवाजा बनाने से नहीं रोक सकता। आपका जीवन एक दीर्घकालिक परियोजना है, और किसी भी परीक्षा में अंतिम रेखा को परिभाषित करने की शक्ति नहीं होती। ₹सफलता अंतिम नहीं है, असफलता घातक नहीं है: आगे बढ़ने का साहस ही मायने रखता है।

*सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर*

# जीरो डिफेक्ट-जीरो इफेक्ट- भारत के विश्व गुरु बनने का सटीक मंत्र:-भारतीय युवाओं की वैश्विक शक्ति और विज़न 2047 की निर्णायक यात्रा-एक समग्र विश्लेषण

**एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर भारत आज एक ऐसे ऐतिहासिक मोड़ पर खड़ा है जहाँ उसकी सबसे बड़ी पूंजी-युवाशक्ति- के पास न केवल संख्या का बल है,बल्कि बौद्धिक क्षमता,नवाचार की ऊर्जा और वैश्विक नेतृत्व का आत्मविश्वास भी है।इक्कीसवीं सदी का भारत अब केवल संभावनाओं का देश नहीं,बल्कि परिणाम देने वाला राष्ट्र बन चुका है। ऐसे समय में जीरो डिफेक्ट-जीरो इफेक्ट केवल एकनारा नहीं,बल्कि भारत के भविष्य का रणनीतिक मंत्र बनकर उभरा है। यह मंत्र भारतीय युवाओं के चरित्र, कार्यशैली और वैश्विक छवि को परिभाषित करने की क्षमता रखता है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि आज पूरी दुनियाँ भारत के युवाओं की बौद्धिक क्षमता का लोहा मान रही हैअमेरिका यूरोप, एशिया और खाड़ी देशों की बड़ी राजनीतिक संस्थाओं, शासन प्रणालियों, वैश्विक कंपनियों और तकनीकी दिग्गजों में भारतीय मूल के युवा नेतृत्वकारी भूमिकाओं में हैं। सीईओ से लेकर नीति-निर्माता तक, स्टार्ट- अप संस्थापकों से लेकर शोध वैज्ञानिकों तक,भारतीय युवा वैश्विक निर्णय प्रक्रिया का हिस्सा बन चुके हैं।यह स्थिति स्वत:नहीं आई,बल्किकठोर परिश्रम ज्ञान-संस्कृति और नैतिक मूल्यबोध का परिणाम है।अब आवश्यकता है कि इस बौद्धिक शक्ति को जीरो डिफेक्ट - जीरो इफेक्ट के सिद्धांत से जोड़ा जाए,ताकि भारत की कार्यसंस्कृति विश्व के लिए एक मानक बने। यही वह मार्ग है जो भारत पर लगाए जा रहे टैरिफ जैसे आर्थिक स्पीड ब्रेकर अस्त्रों को निष्प्रभावी कर सकता है।यदि भारत को वैश्विक नेतृत्व की भूमिका निभानी है,तो शासकीय और निजी दोनों क्षेत्रों में कार्यरत प्रत्येक कर्मचारी को यह समझना होगा कि भ्रष्टाचार राष्ट्र की सबसे बड़ी कमजोरी है।अल्पकालिक व्यक्तिगत सुख सुविधा या स्वार्थ के लिए लिया गया एक भी गलत निर्णय देश की दीर्घकालिक साख को चोट पहुँचाता है।जीरो डिफेक्ट जीरो इफेक्ट का वास्तविक अर्थ तभी साकार होगा जब कार्यप्रणाली में ईमानदारी,पारदर्शिता और जवाबदेही होगी।निजी हित को परे रखकर राष्ट्रहित को प्राथमिकता देना आज कोई आदर्शवादी कल्पना नहीं, बल्कि आर्थिक और नैतिक अनिवार्यता बन चुकी है।जब कर्मचारी, उद्यमी और अधिकारी अपने दायित्व को राष्ट्र- निर्माण से जोड़ेंगे,तभी भारत पुन: सोने की चिड़िया की संज्ञा को आधुनिक संदर्भ में सार्थक कर पाएगा न केवल त्रेता युग या सतयुग की कल्पना के रूप में,बल्कि इक्कीसवीं सदी की आर्थिक और तकनीकी वास्तविकता के रूप में भी भारत का हर नागरिक अपने जीवन को स्वर्ग से सुंदर बना सकते हैं।

साथियों बात अगर हम मेक इन इंडिया और जीरो डिफेक्ट - जीरो इफेक्ट का अभिन्न संबंध इसको समझने की करें तो मेक इन इंडिया तब तक पूर्ण नहीं हो सकता, जब तक उसके केंद्र में जीरो डिफेक्ट-जीरो इफेक्ट का दर्शन न हो। विनिर्माण, उत्पादन आपूर्ति श्रृंखला, सेवा क्षेत्र और पर्यावरण हर गतिविधि में युवाओं की सक्रिय भागीदारी अनिवार्य है।गुणवत्ता में कोई दोष न हो और पर्यावरण पर कोई नकारात्मक प्रभाव न पड़े यही आधुनिक विकास का वैश्विक मानदंड है।जब भारत में निर्मित वस्तुएँ और सेवाएँ गुणवत्ता, विश्वसनीयता और पर्यावरणीय जिम्मेदारी का प्रतीक बनेंगी, तब मेड इन इंडिया केवल एक टैग नहीं, बल्कि भरोसे की मुहर बन जाएगा। दुनियाँ यह कहने लगे कि यदि कोई उत्पाद लेना है, तो भारत में निर्मित उत्पाद ही लेना चाहिए, क्योंकि वह सर्वोत्तम है, टिकाऊ है और नैतिक उत्पादन का सटीक उदाहरण है।

साथियों बात अगर हम विश्व गुरु की अवधारणा और विज़न 2047 इसको समझने की करें तो,यदि विश्व में यह धारणा स्थापित हो जाती है कि भारत की वस्तुएँ और सेवाएँ गुणवत्ता में बेजोड़ हैं,तो भारत का विश्व गुरु बनना कोई दूर का सपना नहीं रहेगा। विज़न 2047 जब भारत अपनी स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे करेगा तब तक विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य तभी प्राप्त होगा,जब विकास केवल आंकड़ों में नहीं,बल्कि मानसिकता और मूल्यों में भी दिखाई दे।भारत की अर्थव्यवस्था का दसवें स्थान से चौथे स्थान तक पहुँचना यह संकेत देता है कि दिशा सही है। अब समय है कि युवा मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत की कमान स्वयं संभालें। नेतृत्व केवल पद से नहीं, बल्कि दृष्टि, कौशल और चरित्र से आता है।

साथियों बात अगर हम टेक- आत्मनिर्भर भारत :अगली बड़ी छलांग इसको समझने की करें तो, आने वाले दशक का सबसे बड़ा फोकस टेक-आत्मनिर्भर भारत होना चाहिए।नवाचार अनुसंधान,आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, सेमीकंडक्टर,रक्षा तकनीक,हरित ऊर्जा,बायोटेक और डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर,इन सभी क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता भारत की रणनीतिक सुरक्षा और आर्थिक मजबूती दोनों के लिए आवश्यक है।अब समय आ गया है कि भारत की आवश्यकताओं को प्राथमिकता दी जाए और नए उत्पादों का विकास तेज़ी से किया जाए। ये उत्पाद केवल सस्ते नहीं, बल्कि श्रेष्ठ होने चाहिए,जीरो डिफेक्ट- जीरो इफेक्ट के




सिद्धांत पर आधारित। भारत के युवाओं की प्रतिभा ही आत्मनिर्भर भारत के इस विज़न का नेतृत्व करेगी और विश्व को बताएगी कि नवाचार का नया केंद्र अब भारत है।

साथियों बात अगर हम राष्ट्रीय हित,स्पष्ट इरादे और ईमानदार प्रयास इसको समझने की करें तो,भारत तेजी से दुनियाँ की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है।लेकिन आर्थिक आकार तभी सार्थक होगा जब उसके पीछे राष्ट्रीय हित को समर्पित दृष्टिकोण होगा। चाहे हम राष्ट्र-राज्य की सेवा में हों या निजी क्षेत्र में हम सबको भ्रष्टाचार के प्रति जीरो टॉलरेंस अपनानी होगी।यदि हर नागरिक यह संकल्प ले कि वह एक रुपये का भी भ्रष्टाचार नहीं करेगा, तो विज़न 2047 की मंज़िल तक पहुँचने से भारत को कोई शक्ति नहीं रोक सकती। यह गति सुधार, प्रदर्शन और परिवर्तन की भावना से आएगी। यह गति स्पष्ट इरादों और ईमानदार प्रयासों से जन्म लेगी।

साथियों बात अगर हम भारतीय प्रधानमंत्री का संदेशऔर युवाओं की भूमिका को समझने की करें तो पीएम द्वारा लाल किले से लेकर विभिन्न मंचों तक और 25 जनवरी 2026 के मन की बात कार्यक्रम में जीरो डिफेक्ट जीरो इफेक्ट पर दिया गया ज़ोर यह स्पष्ट करता है कि यह केवल औद्योगिक नीति नहीं,बल्कि राष्ट्रीय चरित्र निर्माण का आह्वान है। युवाओं के लिए यह संदेश विशेष रूप से रेखांकित करने योग्य है, क्योंकि भविष्य का भारत उन्हीं के हाथों में है।आज जो अवसर, संसाधन और सुविधाएँ उपलब्ध हैं,संभव है भविष्य में वैसीपरिस्थितियाँ न रहें। इसलिए समय की मांग है कि निजी स्वार्थ छोड़कर राष्ट्रीय लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाया जाए और मेक इन इंडिया को अभूतपूर्व प्रतिसाद दिया जाए।

साथियों बात अगर हम टैरिफ की दीवारें और भारतीय गुणवत्ता की ताकत इसको समझने की करें तो यदि भारत जीरो डिफेक्ट-जीरो इफेक्ट के मंत्र पर ईमानदारी से चलता है तो कोई भी देश,चाहे वह अमेरिका ही क्यों न हो 100,500 या 1000 प्रतिशत तक टैरिफ लगाए,भारतीय उत्पादों की वैश्विक मांग को रोक नहीं सकता।जब गुणवत्ता निर्विवाद होगी,तो टैरिफ की दीवारें स्वयंकमजोर पड़ जाएँगी दुनियाँ तब भारतीय उत्पादों को इसलिए खरीदेगी क्योंकि वे श्रेष्ठ हैं, टिकाऊ हैं और भरोसेमंद हैं। भारत में निर्मित वस्तुओं का ऐसा सिक्का जमेगा कि टैरिफ का बंधन भी उसे रोक नहीं पाएगा। यही स्थिति भारत के विकास और विज़न 2047 की यात्रा में मील का पत्थर सिद्ध होगी।

अत: अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि मंत्र के सहयोगसे मिशन तक पहुंचने की यात्रा हम आसानी से पूरी कर सकते हैंजीरो डिफेक्ट- जीरो इफेक्ट आज एक मंत्र नहीं, बल्कि मिशन बन चुका है।यह मिशन भारतीय युवाओं की सोच, कार्य और नेतृत्व को वैश्विक मानकों के अनुरूप ढालने का आह्वान करता है।यदि भारत का हर युवा इसे अपने जीवन और कार्यशैली का हिस्सा बना ले, तो न केवल भारत आत्मनिर्भर बनेगा,बल्कि दुनियाँ के लिए एक नैतिक,टिकाऊ और विश्वसनीय विकास मॉडल भी प्रस्तुत करेगा।विज़न 2047 कोई सपना नहीं, बल्कि एक साकार होने योग्य लक्ष्य है, बशर्ते हम आज सही संकल्प लें, सही दिशा चुनें और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखें। यही भारत की शक्ति है, यही भारत का भविष्य हैं।

# राज्य BJP ने मशहूर म्यूज़िक डायरेक्टर अभिजीत मजूमदार के निधन पर दुख जताया

*ओडिया म्यूज़िक और कला की दुनिया के लिए बहुत बड़ा नुकसान : मनमोहन सामल*

**मनोरंजन मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा**



**भुवनेश्वर:** राज्य अध्यक्ष श्री मनमोहन सामल ने ओडिशा के मशहूर म्यूज़िक डायरेक्टर और गायक अभिजीत मजूमदार के निधन पर गहरा दुख जताया है। दिवंगत मजूमदार ने ओडिया फ़िल्मों और एल्बम की दुनिया को कई हिट गाने दिए हैं। उन्होंने 700 से ज़्यादा गानों के लिए म्यूज़िक डायरेक्ट किया है। ओडिया म्यूज़िक के क्षेत्र में स्वर्गीय मजूमदार के योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा। उनका असमय निधन ओडिया म्यूज़िक और कला की दुनिया के लिए एक बहुत बड़ा नुकसान है। दिवंगत मजूमदार की आत्मा की शांति और आशीर्वाद की कामना करते हैं और भगवान श्री जगन्नाथ से प्रार्थना करते हैं कि वे इस दुख की घड़ी में उनके परिवार और दोस्तों को असीम धैर्य प्रदान करें।

# इस साल पद्म पुरस्कार दिए जाएंगे, ओडिशा से चार लोगों को सम्मानित किया जाएगा




**मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा**

**भूबनेश्वर :** 2026 के लिए पद्म अवॉड्र्स की घोषणा कर दी गई है। पद्म अवॉड्र्स से सम्मानित होने वाले काबिल लोगों की लिस्ट जारी कर दी गई है। 2026 में पद्म अवॉड्र्स से सम्मानित होने वाले बहादुर लोगों की शुरुआती लिस्ट नीचे दी गई है। रविवार शाम (25 जनवरी, 2026) को केंद्र सरकार ने उन लोगों की ऑफिशियल लिस्ट जारी की जिन्हें पद्म विभूषण, 13 लोगों को पद्म भूषण और 113 लोगों को पद्म अवॉड्र्स से सम्मानित किया जाएगा।ओडिशा के चरण हेम्ब्रम, महेंद्र मिश्रा और सीमांचल पात्रा को अलग-अलग कैटेगरी में पद्म श्री से सम्मानित किया जाएगा।भारत सरकार ने इस बार पद्म विभूषण के लिए 5 लोगों, पद्म भूषण के लिए 13 लोगों और पद्म श्री पुरस्कार के लिए 113 लोगों के नामों की घोषणा की है। मयूरभंज जिले के रायरंगपुर ब्लॉक के हल्दा ग्राम पंचायत के नुआगांव गांव के चरण हेम्ब्रम एक जाने-माने संताली लेखक और म्यूज़िक कंपोज़र हैं, जिन्होंने अपना जीवन संताली भाषा और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए समर्पित कर दिया है। संताली भाषा को एक अलग पहचान और पहचान दिलाने में उनका योगदान बेमिसाल है।

# गणतंत्र के सामने चुनौतियाँ : हमारा दायित्व



**शम्भू शरण सत्यार्थी**

गणतंत्र केवल शासन-प्रणाली का नाम नहीं है, यह एक जीवित चेतना है जो नागरिकों के आचरण, सोच और साहस से जीवित रहती है। 26 जनवरी 1950 को भारत ने स्वयं को गणराज्य घोषित करते हुए यह संकल्प लिया था कि सत्ता किसी व्यक्ति, वंश या वर्ग की बपौती नहीं होगी, बल्कि जनता की इच्छा और संविधान की मर्यादा से संचालित होगी। यह दिन केवल एक ऐतिहासिक तिथि नहीं बल्कि उस संघर्ष, बलिदान और स्वप्न की परिणति है जिसमें एक औपनिवेशिक गुलामी से निकला समाज स्वयं को समानता, स्वतंत्रता और न्याय के पथ पर स्थापित करना चाहता था किंतु आज, जब हम गणतंत्र के दशकों लंबे सफर को पीछे मुड़कर देखते हैं तो यह प्रश्न अनिवार्य रूप से सामने आता है कि क्या हमारा गणतंत्र अपने मूल आदर्शों की दिशा में आगे बढ़ रहा है, या धीरे-धीरे केवल एक औपचारिक ढांचे में सिमटता जा रहा है।

भारतीय गणतंत्र की सबसे बड़ी विशेषता उसका संविधान है, जिसे केवल कानूनों की किताब समझना उसकी आत्मा के साथ अन्याय होगा। यह संविधान सामाजिक क्रांति का दस्तावेज़ है जो एक असमान, विभाजित और शोषित समाज को बराबरी की जमीन देने का वादा करता है। इसमें निहित स्वतंत्रता, समानता, धर्मनिरपेक्षता और बंधुत्व के मूल्य केवल राज्य के लिए नहीं, बल्कि समाज और नागरिक के लिए भी मार्गदर्शक हैं लेकिन आज सबसे गंभीर चुनौती यह है कि संविधान को उसकी भावना के बजाय सत्ता के अनुकूल व्याख्याओं तक सीमित किया जा रहा है। जब संवैधानिक संस्थाएँ दबाव में आती हैं, जब कानून का प्रयोग न्याय के बजाय प्रतिशोध के लिए होने लगता है, और जब अधिकारों को कृपा के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तब गणतंत्र की आत्मा आहत होती है।

लोकतंत्र का मूल स्वभाव असहमति है। प्रश्न, बहस और आलोचना के बिना लोकतंत्र निर्जीव हो जाता है। किंतु आज का समय ऐसा प्रतीत होता है जहाँ असहमति को अपराध और सवाल पूछने को राष्ट्रविरोध के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा है। विश्वविद्यालयों, लेखन, कला और मीडिया के क्षेत्र में भय का वातावरण बनना गणतंत्र के लिए शुभ संकेत नहीं है। जब नागरिक चुप रहने को विवश हो जाए, तब चुनाव भले ही होते रहें, गणतंत्र भीतर से खोखला हो जाता है। यह स्थिति और भी चिंताजनक तब हो जाती है, जब भीड़ की भावना तर्क पर हावी हो जाती है और विवेक की जगह उन्माद ले लेता है। सोशल मीडिया के दौर में झूठ, अफवाह और नफरत इतनी तीव्र गति से फैलती है कि सच को अपना पक्ष रखने का अवसर ही नहीं मिल पाता। गणतंत्र का भविष्य उस समाज में सुरक्षित नहीं रह सकता, जहाँ भावनाएँ तथ्य से ऊपर रखी जाएँ और विवेक को कमजोरी समझा जाए।

चुनावी प्रक्रिया, जो गणतंत्र की रीढ़ मानी जाती है, आज स्वयं कई प्रश्नों के घेरे में है। धनबल, बाहुबल, जाति और धर्म आधारित ध्रुवीकरण ने लोकतांत्रिक प्रक्रिया को प्रभावित किया है। चुनाव जनसेवा के संकल्प से अधिक सत्ता-प्राप्ति की होड़ बनते जा रहे हैं। इस प्रक्रिया में सबसे बड़ी जिम्मेदारी मतदाता की होती है, लेकिन जब नागरिक स्वयं अपने मताधिकार को तात्कालिक लाभ, डर या पहचान की राजनीति के अधीन कर देता है, तब वह अनजाने में गणतंत्र को कमजोर करता है। मत केवल एक बटन दबाने की क्रिया नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा तय करने वाला नैतिक निर्णय है। गणतंत्र का स्वास्थ्य इस बात पर निर्भर करता है कि नागरिक अपने अधिकार को कितनी समझदारी और स्वतंत्रता से प्रयोग करता है।

भारतीय समाज में गहरी जड़ें जमाए सामाजिक असमानताएँ भी गणतंत्र के सामने एक स्थायी चुनौती हैं। संविधान ने सभी नागरिकों को समान माना, लेकिन सामाजिक व्यवहार में जाति, वर्ग और लिंग के आधार पर भेदभाव आज भी जीवित है। शिक्षा, रोजगार और न्याय तक पहुँच अक्सर सामाजिक पहचान से निर्धारित होती है। जब अवसर समान न हों, तब समान अधिकार केवल कागज़ी रह जाते हैं। स्त्रियों की स्थिति इस असमानता का सबसे स्पष्ट उदाहरण है। संवैधानिक बराबरी के बावजूद स्त्री आज भी असुरक्षा, हिंसा और भेदभाव का सामना कर रही है। जब तक समाज की आधी आबादी को वास्तविक स्वतंत्रता और सम्मान नहीं मिलेगा, तब तक गणतंत्र पूर्ण नहीं हो सकता।

शिक्षा किसी भी गणतंत्र की दीर्घकालिक सुरक्षा की गारंटी होती है लेकिन यदि शिक्षा केवल डिग्री और रोजगार तक सीमित हो जाए और उसमें आलोचनात्मक सोच, वैज्ञानिक दृष्टि और मानवीय मूल्य न हों, तो वह विवेकशील नागरिक के बजाय आज्ञाकारी भीड़ तैयार करती है। अंधविश्वास, पाखंड और अवैज्ञानिक सोच का प्रसार गणतंत्र को भीतर से कमजोर करता है। यह विडंबना है कि जिस देश ने वैज्ञानिक सोच और आधुनिक संविधान को अपनाया, वहीं आज तर्क के बजाय मिथक को प्रतिष्ठा मिलने लगी है। गणतंत्र की रक्षा केवल सीमाओं पर नहीं होती, वह कक्षाओं, पुस्तकों और विचारों में भी होती है।

मीडिया, जिसे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है, आज एक कठिन दौर से गुज़र रहा है। सत्ता से सवाल पूछने की जगह जब मीडिया सत्ता का विस्तार बन जाए, तब नागरिक को सच तक पहुँचने का रास्ता संकरा हो जाता है। प्रचार और समाचार के बीच की रेखा धुंधली होने लगती है। ऐसी स्थिति में नागरिक का दायित्व और बढ़ जाता है कि वह सच और शोर के बीच अंतर करे, स्वतंत्र पत्रकारिता का समर्थन करे और विवेक के साथ सूचनाओं का मूल्यांकन करे।

राष्ट्रवाद भी आज एक जटिल चुनौती के रूप में सामने है। राष्ट्र से प्रेम गणतंत्र का स्वाभाविक गुण है लेकिन जब राष्ट्रवाद को नफरत, बहिष्कार और दमन का औजार बना दिया जाए, तब वह गणतंत्र के मूल सिद्धांतों से टकराने लगता है। सच्चा राष्ट्रवाद वह है जो अपने नागरिकों की गरिमा, अधिकार और विविधता की रक्षा करे न कि उन्हें एकरूपता के साँचे में ढालने का प्रयास करे। भारत की आत्मा बहुलता में है, और गणतंत्र उसी बहुलता का संवैधानिक रूप है।

अंतत: यह स्वीकार करना होगा कि गणतंत्र केवल सरकारों से नहीं चलता, वह नागरिकों के चरित्र से चलता है। अगर नागरिक अपने अधिकारों के प्रति सजग नहीं होगा, तो कोई भी संविधान उसकी रक्षा नहीं कर पाएगा। अगर समाज अन्याय को सामान्य मान लेगा तो कानून निष्प्रभावी हो जाएगा। गणतंत्र की सबसे बड़ी चुनौती यह नहीं कि सत्ता क्या कर रही है, बल्कि यह है कि नागरिक क्या सहन कर रहा है। चुप्पी सबसे बड़ा खतरा है और सवाल सबसे बड़ा संरक्षण।

गणतंत्र को बचाने का अर्थ है—संविधान को पढ़ना, समझना और जीना। इसका अर्थ है—डर के बजाय विवेक से निर्णय लेना, नफरत के बजाय मानवता को चुनना और सुविधा के बजाय सत्य के पक्ष में खड़ा होना। गणतंत्र किसी एक दिन का उत्सव नहीं, बल्कि प्रतिदिन निभाया जाने वाला दायित्व है। यदि हम अपने दायित्वों के प्रति सजग होंगे, तो चुनौतियाँ चाहे कितनी भी गहरी हों, गणतंत्र सुरक्षित रहेगा क्योंकि अंतत: गणतंत्र का भविष्य संसद भवनों में नहीं, नागरिक के अंत:करण में तय होता है।

# कौन है झारखंड के दिसोम गुरू शिबू सोरेन जिन्हें देश दे रहा आज पद्म सम्मान

**कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड**

**रांची,** झारखंड मुक्ति मोर्चा से लेकर अलग झारखंड राज की सफल आन्दोलन व स्थापन करने वाले शिबू सोरेन झारखंड के तीन बार मुख्यमंत्री रह चुके हैं।

शिबू सोरेन झारखंडी राजनीति में आदिवासियों का काफी ऊंचे कद-काठी के बड़े नेता माने जाते है। वे दिशोम गुरु के नाम से भी जाने जाते हैं। उनका जन्म 11 जनवरी 1944 को तत्कालीन बिहार राज्य के रामगढ़ जिला के नेमरा गांव में हुआ था। वह संथाल जनजाति से थे। स्कूली शिक्षा के दौरान उनके पिता की हत्या कर दी गई थी। 18 साल की उम्र में उन्होंने संथाल नवयुवक संघ का गठन किया। 1972 में बंगाली मार्क्सवादी ट्रेड यूनियन नेता एके रॉय, बिनोद बिहारी महतो और शिबू सोरेन ने मिलकर झारखंड मुक्ति मोर्चा का गठन किया। सोरेन झामुमो के महासचिव बने। झामुमो ने जनजातीय भूमि को वापस पाने के लिए आंदोलन किए।




शिबू सोरेन पहले 2005 में 10 दिनों के लिए (2 मार्च से 12 मार्च तक), फिर 2008 से 2009 तक और फिर 2009 से 2010 तक झारखंड के मुख्यमंत्री रहे। सोरेन 1980 से 1984, 1989 से 1998 और 2002 से 2019 तक दुमका से लोकसभा सदस्य रहे। उन्होंने केंद्रीय मंत्रिमंडल में तीन बार कोयला मंत्री के रूप में भी कार्य किया। हालांकि, उन्हें दिल्ली की एक जिला अदालत ने 1994 में अपने निजी सचिव शशि नाथ झा की हत्या में शामिल होने का दोषी ठहराया था। उन पर अतीत में भी अन्य आपराधिक आरोप लगाए गए थे।

शिबू सोरेन का विवाह रूपी किस्कू से हुआ है जो आज सरायकेला खरसावां जिले में है। उनके तीन बेटे दुर्गा सोरेन, हेमंत सोरेन, बसंत सोरेन और एक बेटी अंजलि सोरेन हैं। उनके बेटे हेमंत सोरेन वर्तमान में झारखंड के मुख्यमंत्री हैं। हेमंत इससे पहले जुलाई 2013 से दिसंबर 2014 तक मुख्यमंत्री थे। बसंत विधायक हैं अंजली ओडिशा मे जेऐमेम प्रमुख हो।

उन्होंने झारखंड के किसानों, कामगारों और काश्तकारों को एकजुट किया और आदिवासियों को शोषण से मुक्त करवाने में अहम भूमिका निभाई। यही वजह है कि शिबू सोरेन को झारखंड के लोगों ने दिशोम गुरु की उपाधि दी। दिशोम का मतलब देश और उसे रस्ता यानी दिशा देने वाला होता है और यहां जहां देश का मतलब आदिवासी क्षेत्र से है। 4 अगस्त 2025 को दिल्ली के एक अस्पताल में 81 साल की आयु में उनका निधन हो गया।

# कॉमर्स और ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर ने रोड सेफ्टी पर ज़ोर

**मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा**



**भूबनेश्वर :** कॉमर्स और ट्रांसपोर्ट और माइंस और स्टील मिनिस्टर विभूति भूषण जेना ने सर्किट हाउस में डिपार्टमेंट के अधिकारियों के साथ रिव्यू मीटिंग की। ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर ने जिले के ट्रांसपोर्ट प्रोग्राम, एक्सीडेंट की स्थिति वगैरह पर सख्ती से नज़र रखने की ज़रूरत पर चर्चा की। उन्होंने डिस्ट्रिक्ट माइनिंग ऑफिसर से जिले के छोटे और बड़े माइनिंग एरिया के बारे में जानकारी ली और रेगुलर मॉनिटरिंग करने का निर्देश दिया। रोड सेफ्टी पर ज़ोर देते हुए मिनिस्टर ने एक्सीडेंट में मदद के बारे में और ज़्यादा जागरूकता फैलाने का निर्देश दिया। मिनिस्टर ने ज़्यादा से ज़्यादा ऑथराइज़्ड पॉल्यूशन सेंटर खोलने का निर्देश दिया है। इसी तरह, रीजनल ट्रांसपोर्ट ऑफिस में पब्लिक की मदद के लिए एक हेल्प डेस्क खोलने और एक ऑफिसर तैनात करने को कहा है। OSRTC अधिकारियों को भी सभी गाड़ियों का रूट बदलने को कहा है। मिनिस्टर ने जिले में लापरवाह ड्राइवरों को पकड़ने के लिए गोविंदपाली से मोटू तक रोड पर IMS (इंसिडेंट मैनेजमेंट सर्विस) लगाने का प्रपोज़ल देने का आदेश दिया है। इसी तरह, मिनिस्टर ने पूछा कि क्या OSRTC डिपो पर इससे जुड़ी सभी सुविधाएँ मौजूद हैं। मलकानगिरी शहर के बस स्टैंड के लिए सभी ज़रूरी इंतज़ाम करने के भी आदेश दिए गए हैं। डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर को माइनिंग सेक्टर में रेगुलर मॉनिटरिंग करने के लिए तहसीलदार, माइनिंग ऑफिसर और पॉल्यूशन सुपरविज़न के लिए ज़िम्मेदार ऑफिसर की एक एनफोर्समेंट टीम बनाने के लिए कहा गया है। इसी तरह, मिनिस्टर ने कहा कि कोई भी नए MSP से ज़्यादा कीमत पर रेत नहीं बेच सकता। मिनिस्टर ने सभी ऑफिसर्स को मिलकर काम करने और प्रोएक्टिव रहने का निर्देश दिया है। डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर ने कहा कि डिपार्टमेंट के ऑफिसर मिनिस्टर के सभी निर्देशों को गंभीरता से लेंगे और एक्शन लेंगे। डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर सोमेश कुमार उपाध्याय ने मीटिंग में सभी का स्वागत किया। दूसरों के अलावा, मलकानगिरी के MLA नरसिंह मदकामी, चित्रकोंडा के MLA मंगू खिल, एडिशनल डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर, रेवेन्यू वेदव प्रधान और चीफ डेवलपमेंट ऑफिसर और एग्जीक्यूटिव ऑफिसर दशरथ सरबू मौजूद थे। ट्रांसपोर्ट और माइंस डिपार्टमेंट के सभी ऑफिसर्स भी मौजूद थे।

# हेल्थ केयर और मानवीय गुणों के लिए मेंटल डेवलपमेंट ज़रूरी : बी.के. सुमन दीदी



**लोगोंवाल, 25 जनवरी (जगसीर सिंह)**- गवर्नमेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल बडबर में डिस्ट्रिक्ट एजुकेशन ऑफिसर सुनीतिंदर सिंह, डिप्टी डिस्ट्रिक्ट एजुकेशन ऑफिसर डॉ. बरजिंदरपाल सिंह की लीडरशिप में प्रिंसिपल निदा अल्ताफ, स्कूल हेड परमजीत कौर की गाइडेंस में एक सेमिनार ऑर्गनाइज़ किया गया। इस सेमिनार के लिए रिसोर्स की भूमिका मास्टर अवनीश कुमार, ऋषि ने निभाई, उन्होंने कहा कि यह दीदी मीरा, इंचार्ज ब्रह्म कुमारीज विश्व विद्यालय सुनाम, दीदी रितु के खास आशीर्वाद से मुमकिन हुआ है, जिसमें बी.के. सुमन सिरसा मोटिवेशनल स्पीकर एनएलपी स्पेशलिस्ट, एनडीएस ब्रह्मा कुमारी यूनिवर्सिटी, दीदी रितु सेंटर लोंगोनवाल, दीदी मीतू सेंटर दिड़बा ने खास तौर पर स्टूडेंट्स तक पहुंचकर मेंटल हेल्थ, सेल्फ-केयर, हेल्दी लाइफस्टाइल, स्ट्रेस और इमोशनल वेल-बीइंग जैसे टॉपिक पर डिटेल में जानकारी दी। स्ट्रेस मैनेज करने और मन की शांति बढ़ाने के प्रैक्टिकल तरीके, सेल्फ-केयर और वर्क-लाइफ बैलेंस - मेंटल और फिजिकल हेल्थ बनाए रखने के आसान तरीके, माइंडसेट और फोकस को बेहतर बनाने के आसान तरीके, पॉजिटिव सोच और मोटिवेशन, असरदार कम्युनिकेशन के ज़रिए स्टूडेंट्स को मोटिवेट करने के तरीके बताए। उन्होंने स्टूडेंट्स को ज़िंदगी में खुद को समझने के लिए मोटिवेट किया और ड्रग्स से दूर रहकर एजुकेशन लेने को कहा। उन्होंने कहा कि स्टूडेंट लाइफ में स्टूडेंट्स को मोबाइल, ड्रग्स से दूर रहकर पॉजिटिव एजुकेशन की तरफ जाना चाहिए। सेमिनार के दौरान स्टूडेंट्स से नशा-मुक्त माहौल के लिए शपथ लेने को कहा गया। सेमिनार में स्टूडेंट्स और सभी स्टाफ ने हिस्सा लिया।

# हेमंत सोरेन ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय मे मरांग गोमके जयपाल सिंह मुंडा के अभिलेखों को देखा

**कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड**



**रांची** / लंदन आक्सफोर्ड, मुख्यमंत्री ने अपने यूके दौरे के दौरान ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय अंतर्गत संचालित सेंट जॉन्स कॉलेज का भ्रमण किया। मुख्यमंत्री का स्वागत सेंट जॉन्स कॉलेज की अध्यक्ष प्रोफेसर लेडी सू ब्लैक, बैरोनेस ब्लैक ऑफ स्ट्रोम ने किया। प्रतिनिधिमंडल का अभिनंदन तथा सम्मान में हाई-टी स्वागत समारोह आयोजित किया गया।

सेंट जॉन्स कॉलेज भ्रमण के क्रम में मुख्यमंत्री ने महान आदिवासी नेता, झारखंड आंदोलन के वैचारिक स्तंभ मरांग गोमके जयपाल सिंह मुंडा से जुड़े दुर्लभ अभिलेखों का अवलोकन किया। जयपाल सिंह मुंडा सेंट जॉन्स कॉलेज के प्रतिष्ठित पूर्व छात्र रहे हैं।

इस अवसर पर कॉलेज द्वारा जयपाल सिंह मुंडा से संबंधित दुर्लभ फोटोग्राफ, ऐतिहासिक दस्तावेज़ एवं संरक्षित अभिलेख प्रदर्शित किए गए, जो उनके ऑक्सफोर्ड काल, छात्र नेतृत्व और खेल उपलब्धियों को बताया। अभिलेख दर्शन के दौरान कॉलेज ने जयपाल सिंह मुंडा के ऑक्सफोर्ड जीवन से जुड़े चयनित दस्तावेज़ प्रस्तुत किए, जिनमें ऑक्सफोर्ड हॉकी टीम के चित्र, डिबेटिंग सोसाइटी के अभिलेख तथा उनके व्यक्तिगत पत्र और नोटबुक शामिल थे। कॉलेज के रिकॉर्ड के अनुसार, जयपाल सिंह मुंडा कॉलेज डिबेटिंग सोसाइटी के सचिव एवं बाद में अध्यक्ष रहे तथा कॉलेज एवं विश्वविद्यालय की ओर से हॉकी में प्रतिनिधित्व करते हुए 'हॉकी ब्लू' सम्मान प्राप्त किया। आगे चलकर उन्होंने 1928 के ओलंपिक खेलों में भारतीय हॉकी टीम की कप्तानी भी की।

मुख्यमंत्री ने सेंट जॉन्स कॉलेज द्वारा जयपाल सिंह मुंडा की विरासत को सम्मान और गरिमा के साथ संरक्षित किए जाने की सराहना की। उन्होंने कहा ऐसे प्रयास झारखंड के ऐतिहासिक और बौद्धिक विरासत को वैश्विक शैक्षणिक केंद्रों से जीवंत रूप में जोड़ते हैं। मुख्यमंत्री ने जयपाल सिंह मुंडा की झारखंड के लिए ऐतिहासिक भूमिका को बताते हुए उन्हें राज्य निर्माण की वैचारिक नींव रखने वाला नेता बताया। मुख्यमंत्री ने यह भी उल्लेख किया कि जयपाल सिंह मुंडा की विचारधारा और संघर्ष की परंपरा को दशकों तक जनआंदोलन के माध्यम से आगे बढ़ाया गया, जिसमें उनके पिता स्वर्गीय "दिशोम गुरु" शिबू सोरेन की केंद्रीय भूमिका रही। दिशोम गुरु शिबू सोरेन ने झारखंड मुक्ति मोर्चा की सह-स्थापना की और लंबे संघर्ष के बाद वर्ष 2000 में झारखंड राज्य के गठन में निर्णायक भूमिका निभाई।

मुख्यमंत्री इस दौरे के आधार पर झारखंड सरकार और सेंट जॉन्स कॉलेज के बीच संरचित सहयोग में रुचि व्यक्त की, जिसमें अभिलेखीय आदान-प्रदान, डिजिटाइजेशन तथा संयुक्त संरक्षण पहलों के माध्यम से झारखंड के ऐतिहासिक एवं बौद्धिक विरासत को भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखने का प्रस्ताव शामिल है। प्रोफेसर लेडी सू ब्लैक ने विरासत संरक्षण के क्षेत्र में झारखंड सरकार की रुचि का स्वागत किया तथा ऑक्सफोर्ड और झारखंड के बीच दीर्घकालिक अकादमिक सहयोग की भावना की सराहना की। उन्होंने चेवनिंग–मरांग गोमके जयपाल सिंह मुंडा छात्रवृत्ति को युवा प्रतिभाओं के लिए एक सशक्त सेतु बताया। दोनों पक्षों के बीच मरांग गोमके जयपाल सिंह मुंडा एवं दिशोम गुरु शिबू सोरेन की स्मृति में सेंट जॉन्स कॉलेज–झारखंड समर्पित पीएचडी/डॉक्टोरेट छात्रवृत्ति की संभावनाओं पर भी विचार-विमर्श हुआ।

# केंद्र सरकार के कर्मचारियों के खिलाफ भ्रष्टाचार मामलों की जांच कर सकती है राज्य एजेंसी: सुप्रीम कोर्ट

संजय कुमार बाठला

सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार (19 जनवरी) को स्पष्ट किया कि केंद्र सरकार के कर्मचारियों द्वारा किए गए भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत दंडनीय अपराधों की जांच राज्य की पुलिस एजेंसियां कर सकती हैं और ऐसे मामलों में आरोप पत्र भी दाखिल कर सकती हैं।

कोर्ट ने यह भी कहा कि राज्य पुलिस द्वारा केंद्र सरकार के कर्मचारी के खिलाफ मामला दर्ज करने से पहले केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (CBI) की पूर्व अनुमति आवश्यक नहीं है। साथ ही केवल इस आधार पर कि CBI की स्वीकृति नहीं ली गई, राज्य की जांच एजेंसी द्वारा दाखिल आरोप पत्र को अवैध नहीं ठहराया जा सकता।

जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस सतीश चंद्र शर्मा की खंडपीठ ने राजस्थान हाइकोर्ट के उस फैसले को बरकरार रखा, जिसमें केंद्र सरकार के एक कर्मचारी के खिलाफ दर्ज भ्रष्टाचार के मामले को रद्द करने से इनकार कर दिया गया। हाइकोर्ट ने माना कि राजस्थान राज्य के भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो को भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 के तहत मामला दर्ज करने और जांच करने का अधिकार है, भले ही आरोपी केंद्र सरकार का कर्मचारी हो।

हाइकोर्ट के समक्ष निम्नलिखित प्रश्न उठाए गए, जिन्हें आरोपी के खिलाफ तय किया गया:

पहला, क्या यदि केंद्र सरकार का कोई कर्मचारी राजस्थान राज्य की क्षेत्रीय सीमा के भीतर भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत अपराध करता है तो क्या राज्य का भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो उस व्यक्ति के खिलाफ आपराधिक मामला दर्ज कर जांच और आरोप पत्र दाखिल कर सकता है, या फिर इस पर विशेष रूप से CBI का ही अधिकार क्षेत्र होगा।

दूसरा, यदि राज्य का भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो केंद्र सरकार के कर्मचारी के खिलाफ CBI की अनुमति के बिना आरोप पत्र दाखिल करता है, तो क्या ऐसा आरोप पत्र विधि की दृष्टि में वैध माना जाएगा।

सुप्रीम कोर्ट ने अपीलकर्ता के इस तर्क को खारिज कर दिया कि केवल दिल्ली विशेष पुलिस स्थापना अधिनियम के तहत गठित CBI ही केंद्र सरकार के कर्मचारियों के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामलों में जांच और आरोप पत्र दाखिल कर सकती है।

अपने निर्णय के समर्थन में कोर्ट ने ए.सी. शर्मा बनाम दिल्ली प्रशासन (1973) के फैसले पर भरोसा किया। उस मामले में दिल्ली प्रशासन द्वारा भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया, जिसमें आरोपी को दोषी ठहराया गया और यह सजा बाद में हाइकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट द्वारा भी बरकरार रखी गई।

उस फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि दिल्ली विशेष पुलिस स्थापना अधिनियम का उद्देश्य नियमित पुलिस अधिकारियों से उनकी जांच की शक्ति छीनना नहीं है, बल्कि यह एक सक्षमकारी कानून है, जो CBI को भी ऐसे अपराधों की जांच का अधिकार देता है, बिना अन्य जांच एजेंसियों के अधिकारों को प्रभावित किए। कोर्ट ने मध्य प्रदेश हाइकोर्ट, आंध्र प्रदेश हाइकोर्ट और केरल हाइकोर्ट के कई फैसलों को भी अनुमोदन के साथ उद्धृत किया, जिनमें यह माना गया कि राज्य में तैनात केंद्र सरकार के कर्मचारियों द्वारा किए गए रिश्वत और भ्रष्टाचार के अपराधों की जांच राज्य पुलिस या विशेष पुलिस स्थापना, दोनों में से कोई भी कर सकती है। इन सभी कारणों से सुप्रीम कोर्ट ने यह कहते हुए विशेष अनुमति याचिका खारिज की कि राजस्थान हाइकोर्ट के फैसले में किसी प्रकार की कानूनी त्रुटि नहीं है।

# अधीनस्थ कानून ऑफिशियल गजट में प्रकाशन की तारीख से ही प्रभावी होता है: सुप्रीम कोर्ट

संजय कुमार बाठला

सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार (21 जनवरी) को फैसला सुनाया कि अधीनस्थ कानून तब तक बाध्यकारी नहीं होता, जब तक कि उसे ऑफिशियल गजट में प्रकाशित न किया जाए, और यह गजट में प्रकाशन की तारीख होती है, न कि सिर्फ नोटिफिकेशन जारी करने की तारीख, जो इसे बाध्यकारी बनाती है।

जस्टिस पीएस नरसिम्हा और जस्टिस आलोक अराधे की खंडपीठ ने टिप्पणी की,

"एक बार जब विधायिका ने प्रचार का निर्धारित तरीका तय कर दिया तो कार्यपालिका कोई वैकल्पिक तरीका पेश नहीं कर सकती और उसे कानूनी परिणाम नहीं दे सकती। एक नोटिफिकेशन टुकड़ों में काम नहीं कर सकता। कानून में यह केवल ऑफिशियल गजट में प्रकाशन के बाद ही अस्तित्व में आता है। केवल उसी तारीख से अधिकारों में कटौती की जा सकती है या दायित्व थोपे जा सकते हैं। इसके विपरीत मानने से अप्रकाशित प्रत्यायोजित कानून नागरिकों पर बोझ डाल सकता है, एक ऐसा प्रस्ताव जिसे इस न्यायालय ने फैसलों की एक लंबी श्रृंखला में स्पष्ट रूप से खारिज कर दिया।"

**कोर्ट ने ऑफिशियल गजट में प्रकाशन के महत्व को इस प्रकार समझाया:**

"संसद द्वारा बनाए गए पूर्ण कानून के विपरीत प्रत्यायोजित कानून कार्यपालिका कक्षों में बिना किसी खुली विधायी बहस के बनाया

जाता है। इसलिए गजट में प्रकाशन की आवश्यकता दोहरे संवैधानिक उद्देश्य को पूरा करती है, यानी (क) यह कानून द्वारा शासित लोगों तक पहुंच और सूचना सुनिश्चित करती है, और (ख) यह प्रत्यायोजित विधायी शक्ति के प्रयोग में जवाबदेही और गंभीरता सुनिश्चित करती है। इसलिए गजट में प्रकाशन की आवश्यकता कोई खाली औपचारिकता नहीं है। यह एक ऐसा कार्य है, जिसके द्वारा एक कार्यकारी निर्णय कानून में बदल जाता है। ठीक इसी कारण से अदालतों ने लगातार इस बात पर जोर दिया कि प्रकाशन आवश्यकताओं का सख्ती से पालन प्रत्यायोजित कानून की प्रवर्तनीयता के लिए एक पूर्व शर्त है।

कोर्ट ने कहा कि यह कई मिसालों में तय हो चुका है कि "किसी वैधानिक आदेश या अधीनस्थ कानून के प्रभावी होने की सच्ची कसौटी यह है कि क्या इसे इस तरह से प्रकाशित किया गया कि यह उन सभी व्यक्तियों की जानकारी में आ जाए जो इससे प्रभावित हो सकते हैं, यानी, एक ऐसे तरीके से जो आमतौर पर और सामान्य रूप से उस उद्देश्य के लिए स्वीकार किया जाता है।"

**मामला**

अपील करने वाले स्टील इंपोर्टर्स ने 29 जनवरी, 2016 और 4 फरवरी, 2016 के बीच विदेशी सप्लायर्स के साथ कॉन्ट्रैक्ट किए और 5 फरवरी 2016 को इररिवोकेबल लेटर ऑफ क्रेडिट (LCs) खोले थे। उसी दिन डायरेक्टरेट जनरल ऑफ फॉरेन ट्रेड (DGFT) ने अपनी वेबसाइट पर एक MIP नोटिफिकेशन अपलोड किया, जिस पर 'ऑफिशियल गजट में प्रकाशित किया जाना है' लिखा था। यह नोटिफिकेशन आखिरकार 11 फरवरी 2016 को गजट ऑफ इंडिया में प्रकाशित हुआ।

नोटिफिकेशन के पैराग्राफ 2 में "इस नोटिफिकेशन की तारीख" से पहले खोले गए इररिवोकेबल LCs के तहत इंपोर्ट को छूट दी गई, जो फॉरेन ट्रेड पॉलिसी (FTP) के पैरा 1.05(b) के अधीन था, जो किसी भी नई पाबंदी लगाए जाने से पहले किए गए कॉन्ट्रैक्ट्स की रक्षा करता है।

हालांकि, अधिकारियों ने 5 फरवरी 2016 (वेबसाइट पर अपलोड की तारीख) को 'नोटिफिकेशन की तारीख' माना और अपील करने वालों को छूट देने से यह कहते हुए मना कर दिया कि उनके LCs उसी दिन खोले गए थे और इसलिए वे सुरक्षा के हकदार नहीं थे।

दिल्ली हाईकोर्ट के फैसले से दुखी होकर, जिसने प्रतिवादी अथॉरिटी के मिनिमम इंपोर्ट प्राइस (MIP) से छूट देने से इनकार करने के फैसले को सही ठहराया था, स्टील इंपोर्टर्स सुप्रीम कोर्ट चले गए।

**फैसला**

विवादास्पद फैसला रद्द करते हुए जस्टिस अराधे द्वारा लिखे गए एक फैसले में फॉरेन ट्रेड (डेवलपमेंट एंड रेगुलेशन) एक्ट, 1992 की धारा 3 पर भरोसा करते हुए कहा गया कि 'एक्ट की धारा 3 के तहत जारी नोटिफिकेशन को कानून का बल तभी मिलता है, जब वह ऑफिशियल गजट में प्रकाशित होता है। 'इस नोटिफिकेशन की तारीख' का मतलब निश्चित रूप से ऐसे प्रकाशन की तारीख ही होना चाहिए।'

चूंकि अपील करने वालों ने प्रकाशन की तारीख यानी 11 फरवरी, 2016 से पहले लेटर ऑफ क्रेडिट का इस्तेमाल किया, इसलिए कोर्ट ने पाया कि प्रतिवादी अथॉरिटी के पास उन्हें FTP के तहत छूट का लाभ देने से इनकार करने का कोई कारण नहीं था।

**कोर्ट ने कहा,**

"अपील करने वालों ने 11.02.2016 से पहले इररिवोकेबल लेटर ऑफ क्रेडिट खोले थे और FTP के पैरा 1.05(b) के तहत प्रक्रियात्मक आवश्यकताओं का पालन किया, इसलिए वे इसमें दिए गए ट्रांजिशनल प्रावधान के लाभ के स्पष्ट रूप से हकदार हैं।"

तदनुसार, अपील स्वीकार कर ली गई, जिससे अपील करने वालों को FTP के तहत सुरक्षा का अधिकार मिला।

Cause Title: VIRAJ IMPEX PVT. LTD. VERSUS UNION OF INDIA & ANR.

## भारत मैत्री भाव बढ़ा रहा....।

विश्व में चल रही उथल-पुथल,
सब अपने-आपको
श्रेष्ठ बताने में लगे हैं,
पर भारत आज भी मैत्री भाव बढ़ा रहा है।

हमने हाथ बढ़ाना सीखा है,
दूसरों से उनका हक नहीं छीनना सीखा
जो अभिमानी हैं, उन्हें पता नहीं,
यह भारत आज भी मैत्री भाव बढ़ा रहा है।

शक्तिशाली बने राष्ट्रों में,
आपसी कुंठा व ईर्ष्या भाव है
वह जल रहे अपनी अति महत्वाकांक्षाओं में,
पर भारत आज भी बढ़ा रहा मैत्री भाव है।

हिंसा, मार-काट, युद्ध कोई समाधान नहीं होता,
अहिंसा, समन्वय और एकजुटता सहयोग का बल बड़ा होता है।
जो जलते हैं अपनी ही अग्नि में, उनका कोई भविष्य नहीं होता,
यह तो भारत है, जो विश्व में मैत्री भाव बढ़ा रहा है॥

**प्रेषक स्वतंत्र लेखक**
**हरिहर सिंह चौहान जबरी बाग नसिया**
**इन्दौर मध्य-प्रदेश**

# गणतंत्र का संकल्प: वसुधैव कुटुम्बकम् से विश्वगुरु भारत तक

डॉ विक्रम चौरसिया

भारत की स्वतंत्रता केवल एक राजनीतिक घटना नहीं, बल्कि त्याग, तपस्या और बलिदान की अमर गाथा है। अनगिनत क्रांतिकारियों और स्वतंत्रता सेनानियों ने हँसते-हँसते फाँसी का फंदा चूमा, काला पानी की अमानवीय यातनाएँ सहीं और मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया।

भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, चंद्रशेखर आज़ाद, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल और रानी लक्ष्मीबाई जैसे महापुरुषों के त्याग के कारण ही भारत आज स्वतंत्र, स्वाभिमानी और लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर खड़ा है।भारत केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि एक जीवंत और सनातन सभ्यता है। इस भूमि ने संसार को शून्य, योग, आयुर्वेद, वेद, गणित, खगोल विज्ञान और अहिंसा जैसे अमूल्य उपहार दिए हैं। आज जब विश्व युद्ध, जलवायु संकट, असहिष्णुता और नैतिक पतन जैसी गंभीर चुनौतियों से जूझ रहा है, तब मानवता को केवल तकनीकी प्रगति नहीं, बल्कि विवेक, संतुलन और करुणा की आवश्यकता है,और यही भारत की आत्मा है। इसी कारण आज एक बार फिर विश्व आशा भरी दृष्टि से भारत की ओर देख रहा है।सच्चा राष्ट्र निर्माण केवल आर्थिक विकास से नहीं होता, बल्कि चरित्र, नैतिकता और सामाजिक समरसता से होता है। हमें ऐसी शिक्षा व्यवस्था चाहिए जो केवल डिग्रियाँ नहीं, बल्कि जिम्मेदार, संवेदनशील और राष्ट्रनिष्ठ नागरिक तैयार करे। ऐसी शिक्षा जो युवाओं को रोजगार के साथ-साथ सेवा, कर्तव्य और संविधान के प्रति प्रतिबद्धता की चेतना भी दे।भारत की सबसे बड़ी शक्ति उसकी युवा आबादी है। दुनिया का सबसे युवा देश होने के नाते भारत पर वैश्विक नेतृत्व की ऐतिहासिक जिम्मेदारी है। हमारे युवाओं को विज्ञान, अंतरिक्ष, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रक्षा, कृषि तकनीक और हरित ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में अग्रणी बनना होगा। किंतु उससे भी अधिक आवश्यक है कि वे ईमानदार, अनुशासित, संवेदनशील और राष्ट्रभक्त बनें,क्योंकि बिना चरित्र के विकास, कोई भी प्रगति स्थायी नहीं हो सकती।

किसान भारत की आत्मा हैं। जिस मिट्टी से अन्न उगता है, वही राष्ट्र को जीवन देती है। "जय जवान, जय किसान" केवल एक नारा नहीं, बल्कि भारत की आत्मा का उद्घोष है। सीमा पर तैनात सैनिक और खेत में पसीना बहाता किसान दोनों मिलकर राष्ट्र की सुरक्षा और समृद्धि सुनिश्चित करते हैं।

श्रमिक, कारीगर, उद्यमी और छोटे व्यापारी हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। उनके परिश्रम से आत्मनिर्भर भारत का स्वप्न साकार होता है। वहीं नारी शक्ति भारत की चेतना है। जब महिलाएँ सशक्त होती हैं, तब समाज सुरक्षित, समावेशी और समृद्ध बनता है।

हालाँकि, यह भी सत्य है कि आज़ादी के अमृतकाल में भी कुछ नालायक, भ्रष्ट और कर्तव्यविहीन अधिकारी एवं जनप्रतिनिधि अपने निजी स्वार्थ के लिए राष्ट्र की छवि को धूमिल कर रहे हैं। जब सत्ता और पद सेवा का माध्यम न बनकर भ्रष्टाचार और अहंकार का साधन बन जाते हैं, तब लोकतंत्र की जड़ें कमजोर होने लगती हैं। ऐसे तत्व केवल व्यवस्था को नहीं, बल्कि ईमानदार नागरिकों की आशा और विश्वास को भी आघात पहुँचाते हैं।

आज आवश्यकता है कि ईमानदार अधिकारियों, कर्मठ जनप्रतिनिधियों और कर्तव्यनिष्ठ नागरिकों को संरक्षण और सम्मान मिले, तथा भ्रष्टाचार के विरुद्ध शून्य सहिष्णुता की नीति केवल घोषणाओं तक सीमित न रहकर व्यवहार में भी दिखाई दे। राष्ट्रभक्ति भाषणों से नहीं, बल्कि ईमानदार आचरण से सिद्ध होती है।भारत का मूल दर्शन है"वसुधैव कुटुम्बकम्", अर्थात संपूर्ण विश्व एक परिवार है। भारत की उन्नति केवल अपने लिए नहीं, बल्कि समस्त मानवता के कल्याण के लिए होनी चाहिए। यही भारत को "विश्वगुरु" बनाने का वास्तविक मार्ग है।

26 जनवरी हमें यह स्मरण कराता है कि हमारा संविधान, हमारी एकता और हमारे कर्तव्य ही हमारी वास्तविक शक्ति हैं। जब हर नागरिक राष्ट्र को अपना परिवार माने, तब भारत अजेय बनता है।

यदि युवा जागृत हों, किसान सशक्त हों, श्रमिक सम्मानित हों, महिलाएँ नेतृत्व करें और प्रत्येक नागरिक राष्ट्रहित को सर्वोपरि माने तो वह दिन दूर नहीं जब भारत फिर से विश्व को दिशा देगा।

एक संकल्प एक भारत, एक विश्व।

जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान।

जय हिंद।

# राष्ट्रपति भवन में आदरणीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी के साथ आपदा मित्र स्वयंसेवकों के फोटो सेशन में सम्मिलित हुआ

नवदीप सिंह

आपदा मित्र, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) द्वारा प्रारंभ की गई एक महत्वपूर्ण योजना है, जिसका उद्देश्य सामुदायिक स्वयंसेवकों को आपदाओं के दौरान जीवन बचाने एवं त्वरित राहत प्रदान करने हेतु आवश्यक बुनियादी कौशल जैसे प्राथमिक उपचार, बचाव कार्य और सीपीआर का प्रशिक्षण देना है। इस योजना का लक्ष्य समुदायों को आपदाओं से निपटने के लिए सक्षम बनाना तथा एक आपदा-प्रतिरोधी भारत का निर्माण करना है।

ये प्रशिक्षित स्वयंसेवक बाढ़, भूकंप, भूस्खलन जैसी आपात स्थितियों में फंसे लोगों को सुरक्षित निकालने, प्राथमिक चिकित्सा प्रदान करने, आग बुझाने तथा आपातकालीन प्रतिक्रिया के समन्वय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के कुशल नेतृत्व तथा माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी के मार्गदर्शन में NDMA आज और अधिक सक्षम हुआ है, जिससे देश का आपदा प्रबंधन तंत्र सुदृढ़ हुआ है।

ऐसे सभी आपदा मित्र स्वयंसेवकों को नमन, जो विषम परिस्थितियों में भी अपनी चिंता किए बिना, संकट में फंसे लोगों तक सहायता पहुँचाते हैं। उनका साहस, सेवा-भाव और राष्ट्रप्रेम हम सभी के लिए प्रेरणादायी है।

# केंद्र सरकार के अनुरोध पर जज का तबादला न्यायपालिका की स्वतंत्रता में हस्तक्षेप: सुप्रीम कोर्ट जज जस्टिस उज्जल भुइयां

परिवहन विशेष न्यूज

सुप्रीम कोर्ट के जज जस्टिस उज्जल भुइयां ने हाल ही में कॉलेजियम के उस निर्णय पर सवाल उठाया, जिसमें केंद्र सरकार के अनुरोध पर एक उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के स्थानांतरण प्रस्ताव में संशोधन किया गया था।

उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि जजों के तबादले और नियुक्तियों के मामलों में कार्यपालिका की कोई भूमिका नहीं हो सकती और इस तरह का हस्तक्षेप न्यायपालिका की स्वतंत्रता पर सीधा आघात है।

पुणे स्थित आईएलएस लॉ कॉलेज में "संवैधानिक नैतिकता और लोकतांत्रिक शासन" विषय पर आयोजित प्रिंसिपल जी.वी. पंडित मेमोरियल लेक्चर के दौरान जस्टिस भुइयां ने कहा कि कॉलेजियम द्वारा यह दर्ज किया जाना कि किसी न्यायाधीश का स्थानांतरण केंद्र सरकार के अनुरोध पर किया गया, "एक ऐसे संवैधानिक रूप से स्वतंत्र माने जाने वाले तंत्र में कार्यपालिका के स्पष्ट दखल को उजागर करता है, जिसे राजनीतिक प्रभाव से मुक्त रखने के लिए ही बनाया गया था।"

उन्होंने अक्टूबर 2023 की उस घटना का संदर्भ दिया, जब सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने मध्य प्रदेश हाईकोर्ट के जस्टिस अतुल श्रीधरन को छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट भेजने के अपने मूल प्रस्ताव में संशोधन करते हुए उन्हें इलाहाबाद हाईकोर्ट स्थानांतरित करने की सिफारिश की थी।

यह निर्णय इसलिए भी विवादों में आया क्योंकि कॉलेजियम के बयान में स्वयं यह दर्ज था कि यह संशोधन "सरकार द्वारा पुनर्विचार के अनुरोध" पर किया गया।

जस्टिस भुइयां ने बताया कि यदि जस्टिस श्रीधरन को छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट भेजा जाता, तो वे वहां कॉलेजियम के सदस्य बनते, जबकि इलाहाबाद हाईकोर्ट में उनकी वरिष्ठता काफी नीचे चली जाती। यह निर्णय इसलिए भी संदेह के घेरे में आया क्योंकि न्यायमूर्ति श्रीधरन को एक स्वतंत्र और निडर न्यायाधीश के रूप में जाना जाता है, जिसका उदाहरण वह सुओ मोटो मामला है, जो उन्होंने एक सांसद-मंत्री द्वारा कर्नल सोफिया कुरैशी पर की गई टिप्पणी के खिलाफ शुरू किया था। हालांकि, जस्टिस भुइयां ने अपने भाषण में न्यायमूर्ति श्रीधरन का नाम सीधे तौर पर नहीं लिया।

**उन्होंने सवाल उठाया,**

"क्या किसी न्यायाधीश को सिर्फ इसलिए एक हाईकोर्ट से दूसरे हाईकोर्ट में स्थानांतरित किया जाना चाहिए क्योंकि उसने सरकार के खिलाफ कुछ 'असुविधाजनक' आदेश पारित किए? क्या इससे न्यायपालिका की स्वतंत्रता प्रभावित नहीं होती?"

जस्टिस भुइयां ने जोर देकर कहा कि न्यायाधीशों का स्थानांतरण केवल "न्याय के बेहतर प्रशासन" के उद्देश्य से होना चाहिए, न कि सरकार को अप्रसन्न करने वाले फैसलों के लिए किसी न्यायाधीश को दंडित करने के साधन के रूप में।

**उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा,**

"अपने स्वभाव से ही केंद्र सरकार का उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों के तबादले और पोस्टिंग में कोई अधिकार नहीं हो सकता। यह पूरी तरह से न्यायपालिका का विशेषाधिकार है।"

उनका कहना था कि कॉलेजियम के प्रस्ताव में यह दर्ज होना कि केंद्र सरकार के अनुरोध पर किसी न्यायाधीश का स्थानांतरण बदला गया, कार्यपालिका के प्रभाव की स्पष्ट स्वीकारोक्ति है और यह कॉलेजियम प्रणाली की निष्पक्षता पर गंभीर सवाल खड़े करता है।

जस्टिस भुइयां ने याद दिलाया कि कॉलेजियम प्रणाली को सुप्रीम कोर्ट ने न्यायपालिका की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए विकसित किया था। यदि कॉलेजियम के सदस्य स्वयं कार्यपालिका के प्रभाव में आने लगें, तो यह इस प्रणाली के मूल उद्देश्य से विचलन होगा।

**उन्होंने कहा,**

"जब न्यायपालिका ने सरकार के कॉलेजियम प्रणाली को बदलने के प्रयास को अस्वीकार कर दिया है, तब यह और भी ज़रूरी हो जाता है कि कॉलेजियम पूरी तरह स्वतंत्र रूप से कार्य करे। कॉलेजियम प्रक्रिया की अखंडता को हर हाल में बनाए रखना होगा।"

उन्होंने यह भी चेतावनी दी कि आज न्यायपालिका की स्वतंत्रता के लिए सबसे बड़ा खतरा "अंदर से" आ सकता है।

**उन्होंने कहा,**

"लोकतंत्र के लिए वह दिन बेहद दुर्भाग्यपूर्ण होगा, जब किसी मामले का फैसला सिर्फ यह जानकर अनुमानित हो जाए कि वह किस न्यायाधीश या पीठ के सामने है।"

न्यायपालिका की स्वतंत्रता को "अपरक्राम्य" बताते हुए जस्टिस भुइयां ने अपने संबोधन का समापन करते हुए कहा कि संविधान और लोकतंत्र की रक्षा की अंतिम जिम्मेदारी स्वयं न्यायाधीशों पर है।

**उन्होंने कहा,**

"यदि संविधान के साथ छेड़छाड़ होती है, तो संवैधानिक नैतिकता का उल्लंघन होता है। जैसा कि कैरोलिन कैनेडी ने कहा है, लोकतंत्र और विधि के शासन की रक्षा के लिए एक स्वतंत्र न्यायपालिका अनिवार्य है। इसके लिए ऐसे न्यायाधीशों की आवश्यकता है, जो समय की राजनीतिक हवाओं के सामने डटकर खड़े रह सकें।"

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023